Haryana Vidhan Sabha

Debates

18th January, 1972 (Evening sitting)

Vol. I No. 8

OFFICIAL REPORT

CONTENTS

Tuesday, the 18th January, 1972 (Evening sitting)

	Page
Point of Order re-post of Starred Question No. 1390	(8)1
Motion Under Rule 15	(8)2
Motion Under Rule 16	(8)2
Bill- The Haryana Appropriation (No. 2), 1972	(8)3
Private Members Resolution re the grant of subsidy to Colleges in rural areas in the State on Delhi Pattern	(8)39
Official Resolution re the magnificent Victory of the Country in recent war with Pakistan	(8)62

HARYANA VIDHAN SABHA

Tuesday, the 18th January, 1972 (Evening sitting)

The Vidhan Sabha met in the Hall of the Haryana Vidhan Sabha, Vidhan Bhavan, Sector-1. Chandigarh, at 2.00 P.M. of the clock Mr. Speaker (Brig Ran Singh) in the Chair.

POINT OF ORDER RE-POSTPONEMENT OF STARRED

QUESTION NO. 1390

चौधरी चांद रामः स्पीकर साहब, आन ए प्वायंट आफ आर्डरं मै यह जानना चाहता हूं कि मेरे सवाल का क्या हुआ?

Mr. Speaker: I had allowed it to be answered upto 20th.

चौधरी चांद रामः आपने तो 18 को कहा थां यह मैं कैसे एग्री कर सकता था? आप प्रौसीडिंग्ज निकलवा कर देख लीजिएं

Mr. Speaker: I have said this after checking up the record. I had agreed for its extension upto 20th.

चौधरी चांद रामः स्पीकर साहब, यह कितना इनोसैंट सवाल है। मैंने इसमे कोई फिगर्ज नही मांगी है। मैने तो यही पूछा है कि क्या सरकार ने रिजर्वेशन के आर्डर जारी किए थे और यदि हां तो क्या अमल किया या नही ? इसमे कौन सी फिगर्ज कोलैक्ट कनी थी ? इसमे तो न डिस्ट्रिक्टस से इंफर्मेशन मंगवानी

थी और न तहसील सें एस.एस.एस. बोर्ड यहां है और बड़ी आसानी से इसका जवाब दिया जा सकता था।

Mr. Speaker: Anybody can be wrong. At that time, I thought that it was upto 18th. Now I have seen the letter that I received in this connection and it says.

"It is not possible to furnish reply to this Assembly Quesiton be the due date and I am to request that an extension upto 20th January, 1972, may kindly be given"

This letter is from the Chief Minister.

चौधरी चांद रामः या तो कोई बात नही है।

Mr. Speaker: This was the request from the Chief Minister. He is a highly responsible person. He must have some difficulties and only then the request came for extension.

चौधरी चांद रामः स्पीकर साहब, यह कोई तरीका नही है। यह तो केवल सरकार के जवाब अवायड करने का तरीका है।

Mr. Speaker: He is a responsible man. The question pertains to the department belonging to the Chief Minister and he, after seeing several aspects, made a request and I agreed to it.

चौधरी चांद रामः जब 20 की सैशन ही नही होना था तो आपको भी एग्री नही करना चाहिए था।

श्री अध्यक्षः उस वक्त तो मालूम ही नही था। (हंसी)

चौधरी चांद रामः स्पीकर साहब, ये आखिरी सांस है इस असैम्बली के।

गृह मंत्री (श्री के.एल. पोसवाल): इनके आखिरी हें

श्री अध्यक्षः पता नही किस किस के होंगे? (हंसी)

चौधरी चांद रामः वह जो देखा जाएगा। आप इलैक्शन तो कराओ। कभी कहते है कि इलैक्शन होंगे, कभी कहते है कि इलैक्शन नही होंगे। आप इलैक्शन तो करो, उसके बाद पता लग जाएगा कि किस किस के आखिरी सांस है।

MOTION UNDER RULE 15

Chief Minister (Shri Bansi Lal): Sir, I beg to move—

That the proceedings on the items of business foxed for today be exempted at the day's sitting from the provisions of the Rule 'Sitting of the Assembly', indefinitely.

Mr. Speaker: Motion Moved—

That the proceedings on the items of business foxed for today be exempted at the day's sitting from the provisions of the Rule 'Sitting of the Assembly', indefinitely.

Mr. Speaker: Question is—

That the proceedings on the items of business foxed for today be exempted at the day's sitting from the provisions of the Rule 'Sitting of the Assembly', indefinitely.

The Motion was carried.

MOTION UNDER RULE 16

Chief Minister (Shri Bansi Lal): Sir, I beg to move—

That the Assembly at its rising this day shall stand adjourned Sine-die.

Mr. Speaker: Motion Moved—

That the Assembly at its rising this day shall stand adjourned Sine-die.

Mr. Speaker: Question is—

That the Assembly at its rising this day shall stand adjourned Sine-die.

The Motion was carried.

THE HARYANA APPROPRIATION (NO. 2) BILL, 1972

Finance Minister (Smt. Om Prabha Jain): Sir, I beg to introduce the Haryana Appropriation (No. 2) Bill, 1972.

Sir, I also beg to move—

That the Haryana Appropriation (No.2) Bill be taken into consideration at once.

Mr. Speaker: Motion Moved—

That the Haryana Appropriation (No.2) Bill be taken into consideration at once.

The time allotted is two hours.

चौधरी रणबीर सिंह (किलोई): अध्यक्ष महोदय, वित्त मंत्री महोदया ने जो हरियाणा विनियोग (नम्बर 2) विधेयक पेश किया है उसका समर्थन करने के लिए मैं खड़ा हुआ हूं। अध्यक्ष महोदय, जब डिमांड्स के ऊपर बहस हो रही थी तो उस वक्त यह बजाया गया था कि 58 करोड़ 11 लाख रूपये के करीब दूसरा सप्लीमेंटरी बजट है। यह बात सही है कि सरकार को जो प्राप्ति हुई है वह 51 करोड़, 18 लाख रूपये की हे। तो दरअसल हम जो नया खर्च कर रहे है वह 6 करोड़ 93 लाख ही है। अध्यक्ष महोदय, मै तो मानता हूं कि यह जो बिल पेश है और इससे पहले भी जो ऐप्रोप्रिशन बिल हमारे सदन ने पास किया है ये दोनों यह जाहिर करते है कि हरियाणा बनना कितना जरूरी था। हरियाणा बना तो इससे हरियाणा की तरक्की होनी लाजमी थी, इके बगैर हरियाणा की तरक्की नही हो सकती थी।

(इस समय सभापतियों की सूची मे से एक सदस्य चौधरी चांद राम जी पदासीन हुए)

सभापति जी, सप्लीमेंटरी ऐस्टिमेंटस मे सफा 46, 47, 48 और 49 के ऊपर जो ब्यौरा दिया गया है उसके अन्दर बाकायदा तारीख लिखी है कि किस तारीक्ष को हमको रिजर्व बैंक से और ज्यादा रूपया लेना पड़ा। आगे चल कर यह भी बताया गया है कि जो रकम हमें रिजर्व बैंक से लेनी पड़ी वह कोई 43 करोड़ 76 लाख है और वह इसलिए लेनी पड़ी कि हिन्दुस्तान की

सरकार ने जो अनाज, गेहूं, चावल या बाजरा यहां से खरीदा उसका पैसा हमको ठीक वक्त पर नही मिला तथा लोगों को पैसा देने के लिए रिजर्व बैंक से पैसा लेना पड़ा यह जो रकम 58 करोड़ की दिखाई गई है इसमे बहुत बड़ा हिस्सा तो उसका ही है। तो सभापति महोदय, आप इस बात को मानेंगे कि हरियाणा बनने के बाद ही हम इस लायक हुए कि हम 51 करोड़ रूपये का या 43 करोड़ रूपये का अनाज खरीदें और लोगों को ठीक वक्त के ऊपर पैसा दे सकें चाहे रिजर्व बैंक से ही कर्जा लेकर दे। यह चीज यही जाहिर करती है कि हमारी आर्थिक स्थिति कितनी मजबूत होती जा रही है। इसके अलावा अगर आपने हमारी आर्थिक स्थिति का जायजा लेना है तो इस बात से पता चलता है कि पहले पांच महीने के अंदर वष्र 66–67 मे, जब हरियाणा बना, जो प्राप्ति हुई वह 12 करोड़ 31 लाख रूपये की थी और अब जो है, सप्लीमेंटरी बजट शामिल करके वह 70 करोड़ 60 लाख हैं तो एक तरह से यह दूगने से भी ज्यादा बैठ जाता है सभापति महोदय, तीन वष्र के अन्दर प्रदेश का इस तरह से तरक्की करना यह जाहिए करता है कि जब आदमी को खुद अख्तियार मिलते है तो उसके बाद वह तरक्की ज्यादा करता है बशर्ते कि खराब रास्ते की तरफ न चले अब बहुत सारे भाई है, जिनको कुछ एतराज हो सकते है, कमियां भी हो सकती है लेकिन वह बात दूसरी है। मैंने पहले कहा था कि इस बात से कोई इंकार नही कर सकता कि 11 के.वी. लाईन हरेक गांव मे करीब करीब बिछ गयी है और ट्रांसफार्मर्ज लग गये है। यह मै नही कह सकता कि हर गांव मे

बिजली के कनैक्शन मिले है या नहीं अगर किसी गांव मे नही मिले है तो वे जल्दी से मिलने चाहिए। हमने 29–1/2 करोड़ रूपया बाजार से कर्जा बिजली बोर्ड के लिये लिया है, उसका ब्याज भी देना है और दूसरे खर्चे भी अदा करने हैं इसलिये हमारी स्टेट के इलैक्ट्रिसिटी बोर्ड का अदारा मुनाफा देने वाला होना चाहिए और यह तभी हो सकता है, जब ज्यादा से ज्यादा कनैक्शन दिये जायेंगे। इससे भी कोई इंकार नही कर सकता कि हमारी स्टेट मे काफी बड़ा काम हुआ है। सड़कों का भी बहुत बड़ा काम हुआ है । यह हो सकता है कि कई जगहों पर सड़क नही बननी चाहिए। सभापति महोदय, मुझे एक सड़क पर जाने का मौका मिला। वह सड़क मेरे अपने हल्क मे भी जाती है और स्पीकर साहब के हल्क मे भी जाती है। मेरे ख्याल मे वह सड़क बहुत पहले बननी शुरू हुई थी और यह कुछ बनी हुई भी दिखाई देती है। शायद यह सड़क भम्भेवा तक जाती है। मैं भम्भेवा मे एक शहीद के घर गया थां मैं समझता था कि यह सड़क बन कर पूरी हो गयी होगी, लेकिन मुझे तो यह देखकर ताज्जूब हुआ कि यह सड़क अढाई–तीन वर्ष पहले शुरू हुई थी परन्तु अभी तक पूरी बनी नही। यह कोई अच्छी बात नही है कि तीन तीन साल पहले सड़के बनानी शुरू की गयी हों और वह अभी तक लटक रही हो। जब मैं भम्भेवा गांव से निकला तो मैंने एक भाई से रास्ता पूछा । उसने कहा कि बीच मे नाली पड़ती है, उसमे आपकी गाड़ी फंस जायेगी, इसलिये इधर से न जाओ, आप दूसरे रास्ते से जा परहावर की तरफ से जाता है, उससे चल जाआ। मैंने सोचा कि

मिट्टी बिछी हुई है, जो जम गयी होगी, इसने वैसे ही कह दिया होगा और उसी रास्ते से चल पड़ा। लेकिन जब मै उस रोस्ते से गुजरा तो उसकी बात सही निकली। इसी प्रकार से और भी कई जगहों पर रोड़ी पड़ी हुई है, इंटे बिछी हुई है, परन्तु सड़कें और पुलियां पूरी नही बनायी गई है। इन पुलियों पर चंद हजार रूपये का ही खर्चा होना है जो बहुत ज्यादा नही है, इसलिये इनको जल्दी से जल्दी बनाया जाना चाहिए। सभापति महोदय, एक बात और कह दूं। इस बात से आंखे नही मीची जा सकती कि जहां पर सड़के कई हजार किलोमीटर बनी है और बन भी रही है। यह हमें मानना ही पड़ेगा कि जहां पर सड़क की जरूरत है, वहां पर ये जल्दी से जल्दी बनायी जानी चाहिएं और जहां पर बन गयी है, उसकी हमे तारीफ करनी चाहिए।

सभापति महोदय, मैं अपने हल्के के बारे मे भी कुछ जिक्र करना चाहता हूं । मेरे हल्क मे एक गांव टिटोली है। उस गांव का भी एक नौजवाल शहीद हुआ है। उसका नाम भगत सिंह है। शहीद होने से कुछ पूर्व उसने चौधरी राज सिंह दलाल, एम. एल.ए. के पास एक पत्र अपने भाई की नौकरी के लिये लिखा था। मै उस शहीद के घर गया था और चौधरी राज सिंह दलाल भी गये थे। जब मै वहां बैठा था तो वहां के लोगों ने बताया कि हमारे गांव की सड़क तो बन गयी है लेकिन ड्रेन नम्बन 8 पर एक पुल था जो बहुत भीड़ा था, उसको सरकार ने तोड़ दिया था। उस पुल के टूटने से दो आदमी ड्रेन मे गिर गये थे। एक तो मर

गया था और दूसरा बच गया था। इसी प्रकार से वहां पर कई बैल और पशु भी गिर कर मर चुके है। इसलिये इस पुल को जल्दी से जल्दी बनाया जाना चाहिए ताकि गरीब किसानो का और नुकसान न हो। इस सड़क पर यह पुल न बनने के कारण सरकार को भी काफी घाटा हो रहा है। यह सड़क 8–10 मील लम्बी है। अगर इस सड़क पर यह पुल बन जाये तो एक लोकल बस चलायी जा सकती है। उससे स्टेट को काफी आमदनी भी हो सकती है। इसलिये इस पुल को जल्दी से जल्दी बनाया जाना चाहिए।

इसी तरह से मेरे अपने हल्के मे सुन्दरपुर से टिटोली जाने वाली सड़क के बीच मे एक नाला पड़ता है। इन दोनो गांवा के बीच मे सड़क तो बन गयी है परन्तु उस नाले पर अभ तक पुल नही बन पाया है। यह पुल जल्दी से जल्दी बनाया जाना चाहिए। सभापति महोदय, सरकार से मैं यह भी निवेदन करूंगा कि जो शहीदों के गांव है, उनमे कम से कम ऐसी बाते पहले पूरी होनी चाहिए। यह मै मानता हूं कि काम बहुत बड़ा है लेकिन जहां उन लोगो ने अपने देश के लिये इतनी बड़ी कुर्बानी की है वहां उनके गांवों के लोगो को पता लगना चाहिए कि सरकार उनकी ओर विशेष ध्यान दे रही है। मारे सभी वजीरों को वहां पर जाना चाहिए। चौधरी राज सिंह दलाल और डिप्टी मिनिस्टर श्री जसवन्त सिंह चौहान, वहां गये थे। उन गांवों मे जो छोटी मोटी कमियां है, उनको जल्दी पूरा कना चाहिए। इसी तरह से एक दूसरे शहीद चमारियां गांव के रहने वाले थे जो वीरगति को प्रात्त हुए। उस

नौजवान का नाम रामचन्द्र है। उस गांव मे कई मंत्री भी गये हैं ये तो मुझे पता नही कि कौन कौन गये हैं लेकिन गये जरूर हैं उस गांव की सड़क सन् 1966 मे बननी शुरू हुई थी जब मैं पी.डब्ल्यू. डी. मिनिस्टर था लेकिन वह अभी तक भी पूरी नही हुई है। इस बात की तो मुझे खुशी है कि उस सड़क इसलिये नही बनने मे आ रही थी कि कुछ बीच के लोगो ने कम हिस्सा दिया था। अब इस सड़क को किसी दूसरी स्कीम के तहत मंजूरी के लिये भेजा गया है। मैंने पिछली दफा मंत्री महोदय से एक प्रश्न भी किया था। वह अप्रोच रोड़ के बारे मे था। उसके लिये मैं ने शार्ट नोटिस क्वैश्चन भी दिया था। मंत्री महोदय, चौधरी रणसिंह ने जवाब दिया था कि यह चमारियां गांव इस स्कीम मे शामिल नही है इसलिये पी.डब्ल्यू.डी. इंजीनियर ने किसी दूसरी स्कीम के तहत कागज भेजे है। इस सड़क के मंजूर होने मे काफी समय लग गया है। वहां पर पहले से ही ईंटे और रोड़ी पर काफी खर्चा हो चुका है।

लोक कार्य मंत्री (श्री रणसिंह): मंजूरी चली गयी है।

चौधरी रणबीर सिंहः अगर मंजूरी चली गयी है तो बहुत अच्छी बात है। मेरे हल्के मे उसी प्रकार से एक परहावर गांव है। उस गांव के लिये सड़क बनने की कभी योजना बनी है। काम तो चाजू हो गया है, कहीं पर मिट्टी पड़ी हुई है और कही पर नही पड़ी हुई है इसलिये इस को जल्दी से जल्दी बनाया जाये। इसी प्रकार से मेरे हल्क मे एक रूड़की गांव है। यह सड़क भी सन्

1966–67 मे बननी शुरू हुई है। परन्तु अभी तक भी नही बनी। यह एक छोटा सा टुकड़ा है जो रोहतक सोनीपत रोड़ से गुजरता है लेकिन अभी तक पूरा नही हुआ है। सुनने मे ऐसा आया था कि किसी एक आदमी ने हाई कोर्ट मे केस दायर कर दिया था जिस कर के यह रूक गई थी परन्तु अब तो उसका फैसला भी हो चुका है। अब तो यह टुकड़ा जो केवल एक फर्लांग का है, जल्दी से जल्दी पूरा किया जाना चाहिए। इस टुकड़े के न बनने से बरसात के अन्दर काफी नुक्सान होना भी शुक हो गया है, इसलिये इसे जल्दी से जल्दी बनाया जाना चाहिए।

श्री सभापतिः आप कितना और समय लेंगे?

चौधरी रणबीर सिंहः थोड़ा ही टाईम लूंगा। मेरे हल्के मे एक धामड़ गांव है। उस गांव मे जाने वाली सड़क की मंजूरी सन 1966 मे हुई थी, परन्तु वह सड़क अभी तक पूरी नही हुई है। इसी तरह लाढौत गांव है, उसकी सड़क पर कुछ काम पूरा हो गया है, कुछ बकाया रहता है, क्योंकि वहां ईंट और रोड़ी बिछ चुकी है, काम मे कुछ सुस्ती सी आ रही है, इसलिये मेरी अर्ज है कि इस काम को तेजी से किया जाये।

सभापति महोदय, मुझे सिंचाई तथा बिजली मंत्री महोदय से भी अर्ज करनी है कि बुटाना डिस्ट्रिब्यूटरी के काम के अंदर 1963–64 मे कुद आगे बढ़ गये थे। उस डिस्ट्रिब्यूटरी मे पानी की मिकदार बढ़ाने के लिये उसको रिमौडल करना था। आठ

वर्ष हो गये, लेकिन फिर भी वह रिमौडल नही हो सकी हालांकि वहां पानी वगैरह या किसी और बात का कोई झगड़ा नही हैं पता नही उसके कागजात कहां टिके हुए है। यही नहीं वह डिस्ट्रिब्यूटरी एक कथूरा बदरों मे से गुजरती है और उससे बदरों मे पानी पड़ता है उस के ऊपर पुल बनने मे ही नही आता। इसलिये मैं यह कहूंगा कि यह काम जरा जल्दी से किया जाये हमारे प्रदेश के अन्दर नहरों का काफी काम हुआ है और करोड़ों रूपया लगा है। इसके साथ ही साथ मैं निवेदन करूंगा कि छोटा छोटा काम जल्दी किया जाए। मेरे इलाके मे खेड़ी राधां मे तीन आउटलैट्स माईनर की टेल पर है लेकिन 5–6 साल से वहां पर कोई पानी नही लगता। दुलेहड़ा डिस्ट्रिब्यूटरी से सीधे आउटलैट्स जाते है मगर पानी नही लगता। कागजों को इधर से उधर जाते हुए कई साल हो गये है लेकिन वह कागज अपना सफर नही तय कर पाये है। इसी तरह से किलोई का मामला है। इसके अन्दर एक चौधरान पान्ना है और दो तीन और ऐसे ही पान्ने है जहां पर पानी कम लगता है। अगर उन्हे डायरैक्ट कर दिया जाये तो अच्छा है। भुटाना गांव मे कुछ ऐरिया सूखा है। डिस्ट्रिब्यूटरी को ऊंचा उठाये बगैर, यदि एक माईनर सीधे भालौट डिस्ट्रिब्यूटरी से निकाल दी जाये तो जसरानों गांव को छोड़कर कुछ इलाकों मे सिंचाई हो सकती है और इससे ज्यादा पैदावार हो सकती है। सभापति जी, मैं आपकी मारफत इतना ही कहूंगा कि नहरों के ऊपर हमने बहुत खर्च किया है और काफी काम हुआ है लेकिन एक बात हमें

सोचनी चाहिए। । इस बारे मे मैं खास तौर से वित्त मंत्री महोदया से कहूंगा कि ये जो आंकड़े दियये गये है ये गलत है।

श्री सभापतिः किसी सिलसिले में ?

चौधरी रणबीर सिंहः इरीगेशन मल्टीपरपज के सिलसिले मे भाखड़ा नहर को छोड़कर बाकी नहरों द्वारा जितनी इरीगेशन हुई और आबियाने या दूसी शक्ल मे जो आदमनी हुई आपके आंकड़ों के मुताबिक 1970–71 के उकाउंटस के हिसाब से 2 करोड़ 7 लाख और जो आमदनी 1972–73 के अंदर आपने रखी है, वह एक करोड़ 93 लाख है इस बारे मे मै एक छोटी सी बात और कह दूं कि इस स्कीम पर आपके आंकड़ों के हिसाब से जो ब्याज का खर्चा पड़ा है वह कई करोड़ रूपया है। हरियाणा एकट एक ग्लान्स के पेज 12 पर इरीगेशन हैड को देंखे। 1967–68 मे 97 लिखा है जो कि 197 लाख होना चाहिए, 1968–69 मे 192 लिखा है, जो 63 लाख होना चाहिए। इसी तरह से 1971–72 मे 305 लाख और 1972–73 मे 4 करोड़ 42 लाख की इन्वैस्टमैंट है। मेरे कहने का मतलब यह है कि इस तरह से ब्याज आपने खुद बढ़ाया है। मैं यह भी समझता हूं कि काम जरूरी है और आगे बढ़ने चाहिए, लेकिन ऐसे इलाकों के बारे मे काम करने की खस जरूरत हैं जहां पीने का पानी भी नही मिलता । ऐसे इलाकों मे सिंचाई हो, यह बहुत जरूरी है। मुझे खुशी है कि कई कामयाब प्लान्ज की शुरूआत हो रही है। ड्रेन नम्बर 8 द्वारा पानी देने की योजना की नींव हमारे वक्त मे पड़ी थी। भाखड़ा गांव के करीब

एक बैरज बनाई गयी थी ओर 1963–64द मे उस पर 33–34 लाख रूपया खर्च हो सका था। आज मुझे खुशी है कि उस कैनाल कहते है और उसमे पानी पहुंचने लग गया है और उसके द्वारा सिंचाई हाने लग गयी है। यह बात जरूरी है और हम इस बात का ख्याल भी रखना चाहिए कि जहां हम प्रदेश के आमदनी के साधनों के अंदर रह कर खर्च करें वहां जितनी आमदनी बढ़ सकती है, उसे बढ़ाने की कोशिश करनी चाहिए। मेरा मतलब कोई भाई यह न समझे कि किसी खास इलाके मे पानी के लिये कहा जाये और दूसरे इलाके के लिये न कहा गये। खान साहब इलाके मे पानी के लिये कहा जाये और दूसरे इलाके के लिये न कहा गये। खान साहब, मेरे से खास तौर पर कई दफा यह कहते है कि नहर तो अम्बाला से शुरू होती है लेकिन उसका पानी रोहतक, हिसार और महेन्द्रगढ़ मे पहुंचता है। यह बात सही है और इतिहास के प्वांयट के आधार पर भी पानी के बंटवारे मे कुछ तबदीली वगैरह हो सकती है। डिप्टी स्पीकर साहिबा, अम्बाला जिले के बारे मे कहती थीं कि यह बात सही है कि सरकार वहां पर टयूबवैल लगा रही है और आगमैंटेशन कैनाल बना रही है। मैं ऐसा मानता हूं कि आगमैंटेशन कैनाल बनाना जरूरी है यह कैनाल किसी दूसरी जगह बन सकती थी, इस बारे मे जो इंजीनियर्ज ही कोई राय दे सकते है कि कहां बननी चाहिए थी लेकिन इसका बनना जरूरी था। यह जो काम शुरू किया गया है, यह अच्छा हुआ है, इससे प्रदेश की तरक्की होगी और आज हमारे यहां जो नहरें है, वह पक्की की जा सकती है, उनके ऊपर छोटे छोटे पावर

हाउस भी बन सकते है क्योंकि कई जगह पानी का ''फाल'' मिलता है। उसको इस्तेमाल किया जा सकता है। मैं यह बात कहे वगैर नही रह सकता कि पिछले काम का जहाां तक ताल्लुक है वह तो इतिहास की बात है लेकिन जो पानी हम आज पैदा कर रहे है और उसका पोटैनिश्यल बढ़ा रहे है, उसके अन्दर उन इलाको के लिये भी कुछ हिस्सा छोड़ना चाहिए जहां से वह पोटैन्शियल पैदा होता है। चाहे वह अम्बाला जिला है, करनाल जिला है, आपका निर्वाचन क्षेत्र है, खान साहब का है या किसी दूसरे दोस्त का इलाका है। अभी–अभी जयसवाल साहब मेरे से यह पूछ रहे थे कि क्या कोई ऐसा कायदा या कानून है कि पानी का बंटवारा कैसे होना चाहिए। यह बात सही है कि पानी इतिहास के बिना पर भी बंटवारा कैसे होना चाहिए। यह बात सही है कि पानी इतिहास के बिना पर भी बंटता है मगर आज के जमाने मे पानी का बंटवारा करने के लिये जरूरत को भी देखा जाना चाहिए। ब्यास और रावी के पानी का काफी बड़ा हिस्सा, राजस्थान को दिया गया। हम आपके इलाके मे, अम्बाला के हल्के मे टयूबवैल के पानी का इस्तेमाल करना सीखे। हम जो टयूबवैल स्वयं लगाते है उनका पानी उन इलाकों को दे जहां मौसम के हिसाब से जरूरत हो। मैं मानता हूं कि किसी इलाके मे बरसात के मौसम मे पानी देने से यह हो सकता है कि वाटर लौगिन्ग ज्यादा हो जाये।

श्री सभापतिः आप स्पीच को वाइन्ड अफ करें।

चौधरी रणबीर सिंहः बहुत अच्छा जी। मुझे यही निवेदन करना है कि जहां हमने कुद ऐसी स्कीमों की तरफ ध्यान दिया है जो पिछड़ गयी थी, वहां हमें एक और चीज की तरफ ध्यान देना चाहिएं सप्लीमैंटरी एस्टीमेटस मे 2000 प्रिजनर्ज आफ वार जो हमारे यहां आये है, के लिये खर्च का जिक्र किया गया है। अपने योद्धाओं के सिलसिले मे मैं तो इतनी बात ही कहना चाहता हूं कि हम उनकी बहादुरी का जितना गान गायें, उतना ही कम है, उनकी जितनी सराहना करे, उतनी ही कम हैं उनकी शोभा, सारे देश की शोभा है। इन बातों के साथ–साथ मैं यह जरूर कहूंगा कि जो भाई शहीद हो गये है, उकने लिये हम जहां पैसे की इमदाद देते है, वहां प्रदेश के अंदर सीलिंग का कानून लागू करके जो जमीन मिली है उसमे से कुछ न कुछ जमीन उन्हे अवश्य मिलनी चाहिए । इसके लिए लाखों एकड़ जमीन की जरूरत नही है। अगर हम इस प्रदेश से शहीद हुए आदमियों की तादाद 1948 से भी लगायें तो भी वह 1200 से ज्यादा नही हो सकती। इस प्रकार दस बारह हजार एकड़ जमीन चाहिए। इसकी तरफ हमारी सरकार को सोचना चाहिए। दूसरे प्रदेशा के मुकाबले मे हमारी सरकार ने काफी ज्यादा दिया है लेकिन मेरी प्रार्थना है राजस्थान की तरह शहीद होने वाले जवानों के खनदानो को सरकार जमीन भी दें मुझे पूरी आश है कि सरकार इस पर गौर करेंगी और अगर इसके लिए पैसा चाहिए तो सदन बड़ी खुशी से पैसे की मंजूरी देगी।

श्रम मंत्री (श्री अब्दुल गफ्फार खां): जनाब चेयरमैन साहब, मैं अपने निहायत मोहतरम, दिली, कलमी दोस्त चौधरी रणबीर सिंह को मुबारिकबाद देना चाहता हूं। इन्होने फरमाया कि इनके हाथों सड़कें शुरू की गई थी। मैं यह अर्ज करता हूं कि बड़े मुबारिक हाथों से शुरू की गई थी जो वे आज तक नही बनी।

श्री सभापतिः मेरे गांव की बिजली का भी इन्होंने उद्घाटन किया था।

श्री अब्दुल गफ्फार खांः यह तो जिमनी बात आ गई। असल बात मैं यह कहना चाहता हूं कि चौधरी साहब ने फरमाया कि अम्बाला की सड़कें इनके जमाने मे नही बन सकी थी और बाद मे बनी थी। मुझे कोई गिला नही है, यह एक हिस्टोरिकल बात है। अब मैं एक शेर पढ़ता हूं–

की मेरे कत्ल के बाद उसने जफा से तोबा,

हाय उस जूदे पशेमा का पशेमा होना।

श्री सत्य नारायण सिंगोल (सफीदों): चेयरमैन साहब, यह जो एप्रोप्रिएशन बिल है और यह जो सप्लीमेंटरी एस्टीमेंट की डिमांडज पेश हुई है इस संबंध मे जब आप सुबह बोल रहे थे, आपने भी कुरूक्षेत्र यूनिवर्सिटी का जिक्र किया था। चेयरमैंन साहब, हरियाणा के अंदर यह एक वाहिद यूनिवर्सिटी है और इस सप्लीमैंटरी एस्टीमेट की डिमांडज के अंदर उसके लिए चालीस

लाख रूपये की डिमांड पेशकी गई है जोकि सुबह के सैशन मे पास हुई । मेरा कहना तो यह है कि जिस प्रदेश के अंदर एक यूनिवर्सिटी हो वह तो जमूने की होनी चाहिए। वहां के लड़के, वहां के प्रोफैसर तमाम संतुष्ट होने चाहिए। लेकिन इन्होने वहां दिक्कत पैदा की हुई है और कोई ऐसी बात भी नही कि वह दिक्कत दूर न हो सके। लड़कों के अंदर जो असंतोष है उसकी तीन–चार वजुहात है। पहली वजह तो यह है कि पंजाब यूनिवर्सिटी मे दो साल का कोर्स कर लेने के बाद ला की डिग्री मिल जाती है। अगर कहीं उनको एप्लाई करना हो या कम्पीटीशन मे बैठना हो और उसमे ला की क्वालीफिकेशन मांगी गई हो तो वह उस डिग्री के कारण उससे एप्लाई कर सकते है। वह चाहते है कि दो साल मे हमे डिग्री मिलनी चाहिए। जिन लोगों को प्रैक्टिस करनी होती है उनको तीसरे साल का कोर्स भी करना पढ़ता है। पहली दिक्कत तो उनकी यह है लेकिन उनकी तरफ कोई ध्यान नही दिया जा रहा।

दूसरी उनकी डिमांड है कि इन्होने तीन साल मे डिग्री देने का तरीका शुरू कर दिया है। तीन–चार महीने ला का सैशन खत्म होने मे बाकी है लेकिन आज तक यह प्रबंध नही किया गया कि उनको लाईसंस मिल जाएं। हाई कोर्ट बार कौंसिल से कान्टैक्ट करके इस ला की डिग्री जो कि तीन साल मे रिकोगनाईज करते है और इसके बाद प्रैक्टिस करने का लाईसेंस मिल जाता है यह डिमांड उनकी पूरी नही की जा रही है।

एक और डिमांड है। इन्होनं एक सिक्याोरिटी अफसर मुकर्रर किया हुआ है। यह रिकार्ड की चीज है कि उसके खिलाफ चोरी के केसिज है, वार्डन ने उसको सजा दी है। अभी कुछ दिन पहले तो वह वहां पढ़ता था आज वही सिक्योरिटी अफसर बना दिया गया है। वह ड्राई एरिया है लेकिन वह शराब बेचता पकड़ा गया था और वार्डन ने उसको सजा दी थी। इस प्रकार लड़कों की शिकायत है और एक प्रमाणित चीज है लेकिन एक ऐसे आदमी को सिक्योरिटी अफसर लगा रखा है ।

एक डिमांड यह है कि वहां पुलिस चौकी नही होनी चाहिए। हिन्दुस्तान मे यह पहली यूनिवर्सिटी है जहां कि पुलिस चौकी है। वहां वाईस चांसलर रखने की क्या जरूरत है? हजारो लाखों रूपये खर्च करने की क्या जरूरत है ? वहां पुलिस का एक हवलदार लगा दे, वह सारे छः हजार लड़को को काबू कर लेगा। मेरा कहना तो यही है कि आप लड़कों के साथ अच्छा बर्ताव करें, उनके साथ बदले की भावना र रखे, उनके साथ प्रेम का बत्रव करे। उनको बुलाकर उनकी बात सुने और जो उनकी तकलीफे हैउनको दूर करने की कोशिश करें हमारे ऐजुकेशन मिनिस्टर चौधरी माडू सिंह तो बड़े आदमी है, से उनका झगड़ा निपटाएं।

शिक्षा मंत्री (श्री माडू सिंह मलिक): वह तो अटानौमस बौडी है हम उसमे कुछ नही कर सकते।

श्री सत्य नारायण सिंगोलः आप उनकी ग्रांट रो सकते है, आप उनको यह तो कह सकते है कि इस किस्म के निकम्मे आदमी को आपने क्यों रखा हुआ है, आप उनको सलाह दे सकते है कि यह उनकी जायज मांग है। जब आप उनको ग्रांट देते है, तो क्या इतना भी नही कह सकते ? चेयरमैंन साहब, आज तक तो वह एजीटेशन बिल्कुल पीसफुल है। आज तो वह लड़के काबू के अंदर है कल को वे काबू से बाहर भी हो सकते है, उस समय बड़ी मुश्किल हो जाएगी। आपने देखा कि पूर्वी बंगाल के अंदर ये लड़के ही थे और दिल्ली के अंदर भी आपने देखा कि डी.टी.यू. को नेशनलाईज कराने वाले ये लड़के ही थे। तो मेरा कहना तो यही है कि उनकी जायज मांगो को आप मान ले। मेरा तो इनसे इतना ही कहना है। अगर ये चाहें तो सिचुएशन को कंट्रोल कर सकते है।

श्री सभापतिः आप कितना समय और लेंगे। अगर एक ही बात बार–बार रिपीट करेंगे तो ठीक नही है।

श्री सत्य नारायण सिंगोलः चेयरमैन साहब, अब मैं फ्लड्ज के बारे मे कहना चाहता हूं। एक तरफ तो यह डिमांड्ज के अंदर कहते है कि इनहोने तमाम फ्लड्ज को कंट्रोल कर लिया है। मैंने एक क्वैश्चन किया था। उसके जवाब मे ये कहते है कि भम्बेबा ड्रैन जून 1973 तक बनेगी। सप्लीमेंटरी डिमांडज के अंदर दावा करते है कि तमाम फ्लड्ज खत्म कर दिये है। यह दोनो

चीजे एक दूसरे के खिलाफ है। इस संबंध मे उन्होंने लिखा है कि:—

"Large areas of the State are subjected to floods from your to year. The State Government have, therefor, been undertaking flood control and drainage works in the State in a phased programme. In the current financial year an expenditure of Rs. 241.49 lakhs has been provided in the requirements of this programme...."

इसमे आगे लिखा है कि:—

"....It has, therefore, been decided to complete the flood control and drainage works within the current financial year....."

फिर चेयरमैन साहब, यहां पानी के बारे मे जिक्र किया गया है। जब से यह सरकार आई इसके पास जुई और लोहारू कैनाल का ही नाम है बार—बार उसे ही रटती रहती है और जब ये जाने लगेंगे तब भी इसके सिवाय इनके पास और कुद नही होगा। मैं बजाऊ कि पानी आया कहां से? मेरे हल्के के अंदर से नहर जमुनगर्वी गुजरती है, इस नहर से इन्होंने एक और नहर निकली हैं जिसको आगे जाकर ड्रेन की शक्ल दी है। मैंने बुचाना गांव के साथ मे एक नहर देखी जब उसका पता किया कि यह कोन सी नहर है तो पता चला कि यह तो वही नहर है जिसे लोहारू कैनाल कहते है। हमारे जिला जींद के अंदर जितने रजबाहे थे इनहोने उन सब के मोघे ऊंचे कर दिये है जिसकी वजह से

जमींदारों को भारी नुक्सान हुआ है, वे बेचारे रो रहे है। मैं सरकार से कहूंगा कि मोघे ऊंचे करने की वजह से जो जमींदारो को पानी कम मिला है और उनको तकलीफ हुई है। उस तकलीफ को दूर करें। पानी की कमी के बारे मे मैंने इरीगेशन मिनिस्टर से पहले भी कहा था कि मेरे हल्के से जो रजवाहा नंबर 3 निकलता है उसमे अगर 50–50, 100–100 या 150–150 फुट पर शैलो टयूबवैज लगा दिये जाये तो पानी की दिक्कत दूर हो सकती है।

गवर्नर ऐड्रैस मे बड़े जोरो से कहा गया था कि हमने हर प्राइमरी हैल्थ सैंटर के अंदर ऐक्सरे प्लांअ लगा दिया है। मैंने देखा है कि सिविल हौसपिटल सफीदो और जुलाना मे कोई ऐक्सरे प्लांट लगा दिये है। सिवाय जींद डिस्ट्रिक्ट हैडक्वार्टर के और कहीं नही लगा है। (इस समय उपाध्यक्षा पदासीन हुई) इन शब्दों के साथ मैं अपना स्थान लेता हूं।

चौधीर बनवारी राम (जुंडला, अनुसूचित जाति): डिप्टी स्पीकर साहिबा, सब से पहले तो मेरी इस हाउस मे मांग है कि यहां अंग्रेजी न बोली जाये क्योंकि मैजोरिटी जनता की ऐसी है। जो कि अंग्रेजी नही जानती। जब स्पीकर साहब बोलते है तो हमे पता ही नी चलता कि वे क्या कह रहे है। कई बार ऐसा भी हो सता है कि वे अंग्रेजी भाषा मे हमे कहे कि बैठ जाओ और हम खड़े रहें (हंसी)। मैं हाउस से कहूंगा कि जो मैंबर यहां पर अंग्रेजी बोले उसके हल्के मे भी अंग्रेजी ही बोली जानी चाहिए। हम लोग घरों मे तो माता जी नमस्ते, पिता जी नमस्ते कहते है

और यहां पर आकर अंग्रेजी बोलते है जैसे इंग्लैंड से आये हो। सरकार मे मेरी अपील है कि यहां अंग्रेजी न बोली जाये।

उपाध्यक्षाः सरकार या जो चेयर पर होता है वह किसी मेंबर को रोक नही सकता कि तुम इस जबान मे क्यों बोलते हो। वह किसी भी जबान मे पंजाबी मे, हिन्दी मे या इंगलिश मे बोल सकता है।

चौधरी बनवारी रामः स्पीकर या डिप्टी स्पीकर, * * *

श्रीमती ओम प्रभा जैनः डिप्टी स्पीकर साहिबा, ये बर्डज ऐक्सपंज दिये जायें

उपाध्यक्षाः ये * * * पहले चेयर पर सिर्फ अंग्रेजी ही चला करती थी, अब तो हिन्दी भी बोली जा सकती है लेकिन कुछ चीजें ऐसी है जो अंग्रेजी मे ही बोली जा सकती है।

चौधरी बनवारी रामः अंग्रेजी तो उस समय बोली जाती थी जब वहां अंग्रेज थे। अब तो अंग्रेज चले गये है इसलिये अब अंग्रेजी नही बोली जानी चाहिए अगर आप ऐसा करने से नही रोकेंगे तो मैं अगले शैशन मे इस चीज का विरोध करूंगा (व्यवधान) डिप्टी स्पीकर साहिबा, हमें तो आपकी कृपा से समय मिल गया है वरना तो ऐसा होता था कि हम खड़े हो जाते थे और बैठ जाते थे। सरदार प्रताप सिंह कैरो ने ऐक्स सर्विस मैंन को 20 साला पट्टे पर 5–5, 10–10 एकड़ जमीन पर बैठाया था

आज वे 20 साल पूरे हो चुके है। उन्होने जमीन को छोटा–मोटा काश्त के काबिल बनाया है, अपने घरो को बेचकर और अपना सब कुछ बर्बाद करके उन्होने खाईयों और जंगलो को काश्त के काबिल बनाया है। मेरी प्रार्थना है कि सरकार उन फौजियों को उस जमीन से मत हिलाये बल्कि उनको और सहुलियते दे। सरकार जैसे आज फौजियो को सहूलियतें दे रही है इसी तरह उन पुराने एक्स सर्विस मैंन को भी भी सहूनियते दे।

डिप्टी स्पीकर साहिबा, इनमे कोई शक नही है कि हमारी सरकार बहुत अच्छा काम कर रही है। जब जनता को यह बात बताई जाती है कि सरकार ने यह अच्छा काम किये है तो हमारे अपोजीशन के भाई कहते है कि यह तो इलैक्शन स्टेट है, इनके चक्कर मे न आना। डिप्टी स्पीकर साहिबा, शहरों मे पहले जो छोटे–छोटे खोखे थे उनकी जगह पर हमारी सरकारने मार्किटिंग कमेटियों की तरफ से छोटी छोटी दुकाने बनवाई है। ये दुकाने उन्ही लोगों को किराये पर दी गई है जो पहले खोखो मे रहते थे। खोखों मे रहते वालो मे से कोई चाय बेचने वाला था, कोई नाई की दुकान करता था और कोई धोबी था। वे छोटी दुकानदारी करने वाले लोग थे। आज वे दुकाने सरकार ने बनाई है लेकिन उनका किराया मार्किट कमेटी ने 150 से 200 रूपए तक रख दिया है जो कि उन छोटे दुकानदारों के लिये देना मुश्किल है। जहां तक मेरा अंदाजा है उन दुकानों का किराया कम करवाया जाए ताकि वह लोग आसानी के साथ अपने बच्चों का पेट पाल

सकें। यह बात सरकार को जरूर करनी चाहिए क्योंकि वे बेचारे बहुत तंग है। इसकी तरफ सरकार ध्यान दे और सरकार का फर्ज भी है । सरकार जहां इतना खर्चा कर रही है अगर उनको यह भी छोटी सी रियायत दे देगी तो उससे सरकार को कोई फर्क नही पड़ेगा। डिप्टी स्पीकर साहिबा, मेरे हल्क मे अब भी 20 हजार एकड़ जमीन पानी मे डबी हुई है। वहां पर हमारे सिंचाई मंत्री साब गए थे और वादा करके आए थे कि वहां पर एक महीने के बाद ड्रैन खोदने का काम शुरू हो जाएगा लेकिन मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ेगा कि अभी तक वहां पर कोई काम नही शुरू किया गया और लोगो के खेत उसी तरह से पानी मे डूबे हुए है। मेरे हल्के मे दो ती ड्रैनज खोदने वाली रह गई वह मेहरबारी करके बरसात के आने से पहल पहले मुकम्मल कर दी जाए। इसके इलावा मैं यह कहना चाहता हूं कि आज सिवाए मेरे हल्के के कोई भी हल्का ऐसा नही है जहां पर स्कूलों की मांग पूरी न की गई हो। मैं अपनी सरकार से निवेदन करूंगा कि मेरे हल्के मे भी स्कूलों की कमी को दूर किया जाए क्योंकि जैसे दूसरे एम.एल.एज. का हक है वैसे ही मेरा भी हक बनता है। अब की बार का जो बजट आया है मैं इसकी तारीफ तो करता हूं लेकिन मैं इसकी पूरी ताईद नही करता। पिछले साल जो हरिजनों के लिये रूपया रखा गया था इस साल उससे तो ज्यादा रखा गया है लेकिन और ज्यादा रखना चाहिए था। सरकार ने जो दो करोड़ रूपए का हरिजन निगम बनाया है वह सारा रूपया सरकार तीन साल मे देगी। मेरा यह निवेदन है कि पहला जो रूपया दिया गया है

उसके अलावा जो बकाया रूपया रहता है वह सारे का सारा इसी साल ही दे दिया जाये जाकि हरिजनो का और फायदा हो सके। हमारी सरकारने एक रैजोल्यूशन पास किया था कि हरिजनों का ट्रैक्टरों का कोटा फिक्सड है मगर अभी तक किसी जमीन वाले हरिजन को एक भी ट्रैक्टर नही मिला। अगर किसी गरीब हरिजन के पास जमीन है तो उसका हक बनता है, उसको कोटे के मुताबिक ट्रैक्टर दिया जाना चाहिए। डिप्टी स्पीकर साहिबा, मेरी सबसे ज्यादा सरकार से ऐक्स सर्विसमैन की बाबत विनती हे, अैर दूसरे जो छोटे–छोटे मेरे हल्के मे दूकानदार है उनका किराया मार्किट कमेटी को कह कर कम करवाया जाना चाहिए। बस मैं इतना कह कर आपका शुक्रिया अदा करता हूं।

श्री दया कृष्ण (जींद): डिप्टी स्पीकर साहिबा, इस बात से इंकार नही किया जा सकता कि हरियाणा ने थोड़े अर्से मे बेहद तरक्की की है और तरक्की के लिए तीन चीजे दरकार है। पहली लीडरशीप, दूसरी ऐडमिनिस्ट्रेशन और तीसरे फाइनैंसिज। जब हम तरक्की देखते है तो हम यह कह सकते हे कि हमारी यह तीनो चीजें अच्छी रही है। लीडरशीप और फाईनैंसिज के साथ साथ तरक्की मे ऐडमिनिस्ट्रेशनका बहुत बड़ा हाथ है। जैसा कि जिस्म के लिए ब्रेन, हार्ट और लंग्ज तीन चीजें जरूरी है उसी तरह जिक्र कर चुका हूं बेहद जरूरी है। जहां तक ऐडमिनिस्ट्रेशन का ताल्लुक हे उसी के जरिए से ही फाईनैंसिज बढ़ते और घटते है। रिकवरी मे उसकी वजह से काफी फर्क पड़ता है। इसलिए ऐडमिनिस्ट्रेशन

स्टेट का बहुत जरूरी अंग होता है। ऐडमिनिस्ट्रेशन दोनो ही सराहना के काबिल है। आपने देखा कि बिजली लगाने का और सड़कों का कितनी जल्दी से काम हो रहा है जिसमे कि ऐडमिनिस्ट्रैशन का बहुत बड़ा हाथ है। इसलिए मैं कहूंगा कि हमारी लीडरशिप और ऐडमिनिस्ट्रेशन दोनो ही सराहना के काबिल है। आपने देखा कि बिजली लगाने का और सड़कों का कितनी जल्दी से काम हो रहा है जिसमे कि ऐडमिनिस्ट्रेशन का बहुत बड़ा हाथ है। डिप्टी स्पीकर साहिबा, जब कोई काम होता है तो उसमे छोटी–मोटी खराबियां भी होती है। जब किसी गांव मे पानी जाता है तो सब के खेतों को बराबर तो नही मिलता किसी तरफ आता किसी तरफ नही आता, किसी का खेत ऊंचा होता है किसी का खेत नीचा होता है। लेकिन पानी तो गांव मे गया, इस बात से इंकार नही किया जा सकता। यह बात दूसरी है कि सब को बराबर फायदा नही होता। इसी तरह से हमारी स्टेट मे बेहद फायदा हो रहा है और अब हम यह कह सकते है कि कोई भी गांव ऐसा नही जो यह कह सके कि हम फायदा नही हुआ। कोई भी आज यह नही कह सकता कि हमें फायदा नही हुआ। बिजली और सड़कों का सबको फयदा पहुंचा है। जहां है, एक तो आई.ए.एस. और पी.सी.एस. अफसर है और दूसरे उनके नीचे के आफिशियन्ज है। जहां तक नीचे के तब्के के अफसरों का ताल्लुक है उनके बारे मे कुछ शिकायते मिलती है। हमारे जो आई.ए.एस. और पी.सी.एस. अफसर है उनमें बहुत से ईमानदार, मेहनती और अच्छे आदमी है, उनका यह फर्ज बनता है कि जो उनके मातहत

काम करते है उनसे वे ठीक ढंग से काम करवाएं क्योंकि पब्लिक को ज्यादातर छोटे अफसरों के हाथ मे काम पड़ता है। इसलिए हमारे जो आई.ए.एस. और पी.सी.एस. अफसर है वे चूंकि उनकी कंफीडैंशियल रिपोर्टस वगैरह लिखते है इसलिए उन की जिम्मेदारी बनती है कि वे अपने मातहत अफसरों को इस तरह कंट्रोल करें कि लोगों को कोई तकलीफ न हो। अगर ऐडमिनिस्ट्रेशन खराब हो जाती है तो उसका लीडरशिप को भी नुक्सान पहुंचता है और साथ ही पब्लीक भी सफर करती हैं मैंने आई.ए.एस. और पी.सी. एस. अफसरान की जहां सराहना की है वहां मैं उनको यह भी कहना चाहता हूं कि हिन्दुस्तान मे अब डैमोक्रेसी है उनकी जो तालीम है वह पहले जमाने की पढ़ाई नही हे इस लिए उसमे कुछ न कुद उनको फर्क डालना चाहिए और गरीब रियाया की तरफ देखना चाहिए। तनखाह तो उनको इतनी ज्यादा नही है लेकिन जो पुरानी बात है अंग्रेजों के वक्त की वह काफी है उसमें कमी करनी चाहिए। इनको सिम्पैथेटिकली पब्लिक के साथ और छोटे अफसरों के साथ ट्रीटमेंट करना चाहिए । मैं यह कहता हूं कि इनकी वजह से स्टेट का ढांचा खड़ा हुआ है। बहुत जगह तो बहुत अच्छी बाते करते है बिल्कुल नही मानते न बड़ों की और न छोटों की यह ठीक बात है । मैं अर्ज करता हूं कि जब चारा कटता है और मशीन चलती है तो अगर चारे के साथ कहीं बीच मे अंगुली आ जाये तो मशीन उसको भी काट देती है। मैं चाहता हूं कि यह जो ऐडमिनिस्ट्रेशन है अंगुली को बचाये चारा तो काटे और वह काटना ही चाहिये। तो मैं यह कहना चाहता हूं कि बड़े

अफसरों को सिम्पथेटिकली गरीब पब्लिक की तरफ ध्यान देना चाहिए।

इसके बाद मैं पुलिस डिपार्टमैंट की तरफ आता हूं। यह इस ऐडमिनिस्ट्रेशन का एक बहुत बड़ा अंगा है और हर आदमी का इससे काम पड़ता है। अगर यह ठीक हो तो बड़ा आराम मिलता है लेकिन अगर खराब हो तो तक्लीफ भी बड़ी मिलती है। पुलिस की तरफ इनको खाय ध्यान देना चाहिए। जैसे बच्चा रोता हुआ मां के पास जाता है और मां उसकी बात को प्यार से सुनती है उसकी दिक्कत दूर करती है उसी तरह से गरीब और मजलूम पुलिस के पास बगैर हिचक के जाये और पूलिस उसके आंसू पोंछे, उसके दु:ख को दूर करे ऐसी हमारी पुलिस होनी चाहिए और तब ही हमे रीलिफ मिल सकता है। इस डिपार्टमैंट के बारे मे मैं खास तोर पर यह कहना चाहता हूं कि इनके पास जो दफात 107,151 व 506 है इनका इस्तेमाल बड़ी सूझबूझ के साथ होना चाहिए । जब कहीं दफा 506 का मुकद्दमा लाया जाता है तो मैं ख्याल करता हूं कि किसी गरीब के खिलाफ झूठा केस बनाया जाता है तो मैं ख्याल करता हूं कि किसी गरीब के साथ अत्याचार किया गया है। आमतौर पर दफा 506 तो गलत इस्तेमाल की जाती है। तो मैं अर्ज करता हूं कि सरकार को इन दफात की तरफ खास तौर पर ध्यान देना चाहिए ताकि लोगो को तसल्ली हो कि पुलिस उनके साथ ज्यादती नही करेगी। पुलिस का फर्ज बनता है कि जो

मजलूम हो उसे इन्साफ दे, उसके आंसू पोंछे न कि उसे और रूलाये।

हमारे जो फोजी जवान मारे गये है उनके बारे मे पहले ही काफी कुछ कहा जा चुका है और मैं सिर्फ एक बात कहना चाहता हूं कि जो मारे गये है उनमे से हरेक के कुनबे का एक आदमी चाहे कोई कायदा इस बारे मे हो या न हो नौकरी मे रखना चाहिए ताकि उनके कुनबे वालो को यह मालूम हो कि अगर एक मारा गया है तो दूसरा तो एक सरकारी मुलाजमत मे है। मैं सरकार से अर्ज करना चाहता हूं कि वह इस तरफ ध्यान दे और कम से कम एक से ज्यादा आदमी हो जाये तो और भी ठीक बात है लेकिन एक तो जरूर सरकारी नौकरी मे रखना चाहिए। जब लड़ाई होती है तो हम दोनों हाथों से फोज की तरफ पैसा फैंकते है, तारीफ करते है लेकिन लड़ाई बंद हो जाती है तो हाथ खींच लेते है और हमारी हमदर्दी उनके साथ हनी रहती । हमें हमेषा उनके साथ हमदर्दी का सलूक करना चाहिये और उनकी इज्जत करनी चाहिए क्योंकि उनकी वजह से ही हम यहां बैठे है और उनकी वजह से हमारी आजादी सेफ है। मैं उम्मीद करता हूं कि मेरी इस सजैशन पर अमल किया जायेगा।

मैं यह कह सकता हूं कि इंडस्ट्री मे हरियाणा कोई खास नही पनपां आप देखते है कि हमारे यहां जो मैनपावर है यह बिल्कुज बेकार रहती है । खास तौर पर देहात मे सवेरे से शाम तक बहुत सारे लोग हाथ पर हाथ रखे बैठे रहते है। क्योंकि काम

नही है। बहुत ज्यादा लोग या तो अनएम्पलायड है या अंडर एम्पलायट है। यह जो मैनपावर है कि जिसके पास अक्ल है और जो एक जगह से दूसरी जगह जा सकती है अगर एनएम्पलायड रहे तो यह अच्छा मालूम नही होतां आप जानते है कि आज कितनी बेरोजगारी है। एक लड़का देहात मे जो दसवीं पास कर लेता है उसे नौकरी मिलती नही और खेती का काम वह कर नही सकता। इसलिये इस चीज को दूर करने के लिए गांव मे छोटी इंडस्ट्रीज लगानी चाहिए ताकि वे लोग काम कर सकें और अपना पेट भर सकें और बेरोजगारी दूर हो सके। बेरोजगारी जो है यह बहुत बुरी बला है और अगर यह बला ज्यादा हो गई तो इससे नुक्सान हो सकता है। इसलिये इसकी तरफ ध्यान फौरी तौर पर दिया जाना चाहिए।

अब मैं फैमली प्लानिंग की तरफ आपका ध्यान दिलाना चाहता हूं । मैं तो कहता हूं कि फैमली प्लानिंग जो है यह सारी चीजों की जड़ है। स्टेट चाहे जितनी तरक्की करे लेकिन अगर आबादी बढ़ती जाये तो हम वहीं के वहीं रहते है। अब बेसिकटोमी के 60 रूपये दिये जाते है पहले 25 रूपये दिये जाते थे। इससे आप्रशनज कराने मे काफी इजाफा हुआ है। यह और भी इजाफा हो सकता है अगर बेसिकटोमी के आप्रेशन कराने वालो को 100 रूपये कम से कम दिये जाये और टयबिकटौमी का आप्रेशन कराने वालो को 200 रूपये दिये जाये। यह कोई ज्यादा रकम नही है। पढ़े लिखे लोग तो फैमली प्लानिंग पर अमल करते है लेकिन

अनपढ़ लोग नही करते है। अगर यह रकम बढ़ गई तो फैमली प्लानिंग मे इजाफा होगा हमारे फाईनैंसिज भी ठीक रहेंगे और हम तरक्की भी करेंगे।

अब मैं ऐग्रीकल्चर के बारे मे कुछ अर्ज करना चाहता हूं । जब हरियाणा की बेसिक इन्डस्ट्री है और उसके बारे मे बहुत कुछ कहा जा चुका है लेकिन हम देखते है कि हमारी बहुत सारी जमीन बेकार पड़ी है हरियाणा मे एक इंच जमीन बेकार नही रहनी चाहिए। अगर जमीन बेकार पड़ी रहे तो यह बात अच्छी नही लगती। इससे जिस आदमी की वह जमीन है उस पर भी हर्फ आता है और गवर्नमैंट पर भी हर्फ आता है। साइंस बहुत आगे बढ़ चुकी है और अब कोई जमीन को जेरे काश्त लाने मे दिक्कत नही होनी चाहिए लेकिन हम देखते है कि मीलों तक हरियाणा मे जमीन बेकार पड़ी है। इसे जेरे काश्त लाना चाहिए और ऐसा करने के लिये लोगो को सहूनियते दे दी जानी चाहिए। इससे लोगों को भी ुायदा होगा और सरकार को भी फायदा होगा। इसके साथ एक बात मै यह कहना चाहता हूं कि अगर इस तरह से एक आदमी की आमदनी सौ रूपये बढ़ती है तो उसमे से अगर वह कुछ पैसे टैक्स के दे दे तो कोई हर्ज की बात नही। इस तरह दोनो को फायदा पहुंचता है, स्टेट को भी फायदा पहुंचता है और लोगो को भी फायदा पहुंचता है। आज हरियाणा मे बसने वालो का ज्यादातर गुजारा खेती बाड़ी पर है। यह ठीक है कि सरकार ने पानी की तरफ ध्यान दिया है लेकिन जिस हद तक यह ध्यान

दिया जाना चाहिये था उतना नही दिया गया। यह ध्यान जरूर दिया जाएगा उसकी मुझे पूरी उम्मीद है। मैं मानता हूं कि हरियाणा सरकार ने कुछ स्पीड पकड़ी है यह अच्छा हुआ है और कुछ अर्से मे बहुत ज्यादा स्पीड पकडेगी और हम तमाम भारत मे नम्बर एक स्टेट होंगे यह खुशकिश्मती की बात है कि हरियाणा दूसरी स्टेटस मे बहुत बातो को अच्छा है। यहां पर न बहुत ज्यादा गरीब है औ न बहुत ज्यदा अमीर है। यहां के आदमी अच्छे तगड़े है और मेहनत करने वाले है। इनको तो सिर्फ लीड करने की जरूरत है। कारखानों के बारे मे भी मैं कहना चाहता हूं कि अगर ये पब्लिक नही लगा सकी तो खुद गवर्नमैंट लगायें और पब्लिक सैक्टर मे लगा कर जब ये कामयाब हो जायें तो पब्लिक को दे दे। उसके बाद फिर कारखाने लगाये जो पब्लिक नही लगा सकती और लोगों को बाद मे दे दे। कारखाने ऐसी चीजों के लगाये जायें जो हिन्दुस्तान से बाहर के देशो से आती है, दूसरी स्टेटस से हरियाणा मे आती है और ऐसी चीजे बनाई जाये जो दूसरी स्टेटस को और दूसरे देशों को भेजी जा सकती हो। इस तरह करने से हरियाण को और ज्यादा उन्नजि होगी।

जहां तक हरिजनों और बैकवर्ड क्लासिज का ताल्लुक है इनकी हालत कुछ बेहतर हुई है लेकिन जितनी होनी चाहिए भी उतनी बेहतर नही हुई है। हरियाणा मे हरिजनों की आबादी बीस फीसदी है। मैं अर्ज करना चाहता हूं कि आप लोहे की चेन ले। उसमे अगर सौ कुंडे लगे है और उस मे अगर कुछ मजबूत हो

और कुछ कमजोर हो तो उस चेन से आप भैंस नही बांध सकते। अगर एक भी कड़ी कमजोर हो जाती है तो जंजीर नाकारा हो जाती है। हरियाणा मे 20 परसैंट हरिजन है जो गरीब है। इनके इलावा दूसरी श्रेणियों मे भी कमजोर आदमी है, अगर ये कमजोर रहेगे, कमजोर लिंक रहेगा तो बिल्कुल प्रगति नही हो सकती। सब को एकसा करना चाहिए। समाज मे धनाढ्य आदमी भी है और गरीब आदमी भी है। धनाढ्य आदमी तो ठीक है लेकिन गरीब बहुत दुःखी है। हरिजन लोग दिन–ब–दिन बेकार होते जा रहे है। देहातों मे जहां–जहां मशीनरी बढ़ी है वहां बैकवर्ड क्लासिज बेकार हो गई है। तेल का काम करने वाले तेली, लकड़ी का काम करने वाले तरखान, मिट्टी का काम करने वाले कुम्हार और ऊंट वगैरह रखने वाले लोग बेहद बेकार हो गये है। वे हरिजन जो जमींदारी का काम करते थे, वे क्योंकि जमींदारो के पास तो ट्रैक्टर हो गए है लेकिन दूसरे लोग बेकार हो गए है। इन बेकार लोगों के लिए गवर्नमैंट को देहातो मे इंडस्ट्रीज लगानी चाहिएं ताकि वे लोग गुजारा कर सके। इन लोगों को जो गांवों मे शहरों मे जाते है, शहरों मे रहने का सुख नही होता, खाने का सुख नही होता। मुझे उम्मीद है कि सरकार इस तरफ ध्यान देगी और गरीब आदमियों को तरक्की देकर एकसी तरह पर लायेगी।

इसके अलावा सबसे जरूरी बात यह है कि आज हमारा मौरल स्टैंडर्ड दिन–ब–दिन डाउन हो रहा है। मौरल स्टैंडर्ड का डाउन होना सारी तकलीफो की जड़ है। अगर हम कुरप्शन करते

है तो यह मौरेलेटी की कमी है। अगर हम बेकार रहते है, अनएम्पलायड रहते है तो इस तरफ सरकार ध्यान दे । इसके अलावा स्कूलों और कालेजों की पढ़ाई मे कुछ फर्क डालना चाहिए, ऐसी तालीम होनी चाहिए जेसी पहले भारत मे हुआ करती थी। हिन्दुस्तान की पुरानी सभ्यता बिल्कुल गायब होती जा रही है। वह सभ्यता बहुत अच्छी थी, उससे हम मौरैलेटी के बारमे मे बहुत कुछ सीखते थे लेकिन आजकल की नई तालीम के अनुसार जो सिनेमा देखते है ठीक नही, सिनेमा हमारा ध्यान दूसरी तरफ ले जाता है। अच्छी सभ्यता से हमे सुक्ष मिलता है, शान्ति मिलती है। पहले जो काम आर्य समाज किया करता था, हिन्दु सभा किया करती थी या दूसरी बहुत सी संस्थाएं किया करती थी, उन संस्थाओं का ध्यान तरफ कम हो गया है। जब उनका ध्यान कम हो जाए जो सरकार को इस तरफ ध्यान देना चाहिए।

अब मैं जींद जिले के बारे मे एक दो बाते अर्ज करना चाहता हूं। आज देख रहे है कि दफतरों की हालत बहुत खराब है, बहुत छोटे–छोटे दफतर है.....

श्री मंगल सैनः डिप्टी स्पीकर साहिबा, इनको बोलते हुए 25 मिनट हो चुके है.....(व्यवधान)।

Deputy Speaker: He is speaking relevant.

चौधरी जयसिंह राठीः कतई नही, अगर इनकी स्पीच से. .....

Depurty Speaket: He is speaking relevant. How can I chek him?

चौधरी जयसिंह राठीः अगर इनकी तकरीर से 'जो है' के शब्द निकाल दिए जाएं तो बाकी कुछ नही बचता।

श्री दया कृष्णः मैं कह रहा था कि वहां दफतरों की हालत बहुत खराब है, वहां सैक्रिटेरिएट बनाना चाहिए। दफ्तर इतने छोटे है कि इन्सान बैठ नही सकता। सैशन जज की कचहरी मे खड़ा नही हा सकता। हिसार मे सैक्रिटेरिएट बिल्डिंग बन गई है, गुड़गांव मे बन गई है, अब तीसरा नम्बर जींद का होना चाहिए। पहले फरमाते थे कि जींद कापहला नम्बर है, फिर कहने लगे दूसरा नम्बर है। मुझु उम्मीद है कि अब तीसरा नम्बर नही कटेगा और सरकार जरूर जींद, मे सैक्रिटेरिएट बिल्डिंग बनवायेंगी।

(इस समय बहुत से सदस्य बोलने के लिए खड़े हो गए)

उपाध्यक्षाः जयसवाल साहब बोलेंगे।

श्री मंगल सैनः बहन जी, आपकी मेरे से दुश्मनी तो नही है?

चौधरी जयसिंह राठीः बहन जी, क्या आपने जयसवाल कहा है या जयसिंह राठी कहा है।

उपाध्यक्षाः जयसवाल कहा है।

श्री मंगल सैनः डिप्टी स्पीकर साहिबा, अगर आपने मुझे टाईम नही देना है तो पहले बतला दीजिए।

उपाध्यक्षाः अगर आप थोड़ा–थोड़ा समय लैंगे तो सबको मिलेगा।

श्री मंगल सैनः ये 25 मिनट बोले है।

उपाध्यक्षाः नही, ये 20 मिनट बोले है।

Shri S.P. Jaiswal: Madam Deputy Speaker....

उपाध्यक्षाः जयसवाल साहब, आप बहुत अच्छा बोलते है, आप समय कम लीजिए। आप कोशिश करें कम बोलने की।

श्री एस.पी. जयसवालः अच्छा जी।

उपाध्यक्षाः मैंने पता किया है, श्री दया कृष्ण जी 19 मिनट बोले है।

श्री मंगल सैनः नही जी, 22–23 मिनट बोले है। (व्यवधान)

श्रीमती ओम प्रभा जैनः ये सिर्फ 19 मिनट बोले है।

Shri S.P. Jaiswal (Karnal): Madam Deputy Speaker, the Hon. Minsiter for P.W.D. in his reply earlier has stated that the roads are being built and they are not sagging before

construction and the work is being doen well. I would draw his attention wo roads in my Constitutency. One is from Karnal Kaul Road to village Pundrak which ahs not been made for the last hree years. There are only a few vilalges in my Constituency and there also the road have not been put about hem I will write to the Hon. Minister. Now I would draw his attention, though you, to the roads in the Kalka Region, i.e. Siswan to Shahpur. On this road Siswan to Taparian is Punjab territory and their portion ahs been completed. From Taparian to Shahpur is piece of three miles which was sanctioned over one year ago but no effort has been made to construct it. There is abother road from pinjore to Nalagarh. If you go and see it you will find it is terrible how these roads are being maintained. The Hon. Finance Minster in here reply taled about facilities hta are being given to the people. It is unfortunate that she has not defined the facilities which are being given or are planned to be given to the people tofay are high prices of food high prices of cloghing, high prices of housing construction material; they cannot get registration of sale doen without having to purchase it; they cannot get 'Intkal' entered without paying for ti; they cannot get any licence or arms licence without having to purchase it. These are some of the facilities that the Hon. Finance Minister did not talk about, that are heing made available to the citizens. Then, Madam, there is another aspect of the so-called facilities, i.e. adulterated liquor, that is made availabe to the people. Talking about the excise policy, this Government derives form the excise duty maximum amount of revenur though the licencees who are given contracts for selling liquor. Most of the licencees adulterate liquor with the connivance of th Excise officer of the Government. Not only that the high

cost of auctions creates a situation whereby the poor classes areleft with no alternative but to take poisonour adulterated liquor; in fact, it is poison inself. Methylated spirit is a poison. It is specially made unusable under Govenrment instructions, for human consumption by addition of poisons.

Yes, Madam, these are the facilities that are being given to the citizens of the State. Then Madam, I would suggest to the Hon. the Excise Minister that the entire policy of the liquor auction should be echanged. The price of the bottle to be charged form the citizens shoul be such that the licencees do not have to adulterate it and the citizens should get good and pure product.

Madam, what is needed by the citizens in the State and what this Government should striiive for is providings cheap food, cheap cloghing and cheap housing. They talk about development but they are not paying any attention to this aspect at all. Price line is what is needed, to be held. But not effort is being made towards what end. Madam, some time ago a friend of mine from Egypt visited India and I asked him a question as to what is the reason of immense popularity of President Nassar. His answer was that he had provided cheap food to the people. The food is subsidised there. The bread is subsidised, the vegitables ae subsidised. He is providing to the public cheap food duly subsidised by the Government. And similarly clogh and housing accommodation is subsidised. Our Government instead of tanking in terms of subsidising the essentails is crushing the cititizen with the high cost of living.

Then Madam, Deputy Speaker, they ahve talked about ecomomkic improvement by the people putting more

work, more and more but the Government does not let them work. Madam, I quote here an instance of Western Germy, which was ruined as a aresult of Second World war. After the War when they needed money for reconstruction the administration there gave loans to the civil servants fot he construciton of their houses, but on the condition, Madam, that they will return this loan not out of theeir salaries but out of their over time earnings. They worked overtime. In Western Germany they worked for fourteen hours a day instead of eight hours as the posiiton is here. There are Acts, like Shops Act, here according to thwi shops should be closed by 7 P.M. The people here are not allowed to work whereas they are willing to work.

Madam, there is yet another point that I have to make out i.e. the augmentation canal to thiwhc they have referred. I would like to draw the attention of this Government to the fact of the so called convention, ascertaining that according to which the area through which the water flows has a priority for its use over other areas, Madam, this Governmentis thinking of taking water from Karnal district by diggin tubewells and taking it away to other areas. We, the people of Karnal, will not tolerate it. You will have to first meet our requirements for the supply of wate either from the canal itself or fro the tubewells to irrigate our lands. Here there are Madam, yet the Judicial Courts, the Judiciary. If you do not give us justice then we would seek it from the Judiciary. We assure you taht we will see that the Government does not take away our wate to other places without meeting our requirements. Thank you.

श्री मंगल सैन (रोहतक): डिप्टी स्पीकर साहिबा, आपने मुझे समय दे दिया, आपका धन्यवाद। आज मैंने सोचा कि बहन ओप प्रभा जी बैठी है इसलिए कुछ माहौल ऐसा सैट करेंगी कि ससप्लीमेंटरी ऐस्टिमेटस पर ही ओलना होगा परन्तु मुझे अब पता चला कि इन्होने फ्री स्टाईलिंग की भी आज्ञा दे दी है और जिस बात का इस सप्लीमेंटरी ऐस्टिमेट मे जिक्र नही है उसके बारे मे भी बड़े आराम से कहा जा सकता है।

श्रीमती ओ प्रभा जैनः यह चेयर को कहना है, मुझे कुछ नही कहना।

श्री मंगल सैनः डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं आपके द्वारा कहना चहाता हूं कि चन्द दिन हुए पाकिस्तान के साथ हमारा युद्ध हुआ। पाकिस्तान ने हमारे ऊपर आक्रमण किया था लेकिन हमने उसकी अक्ल ठिकाने लगा दी और बंगला देश स्वतंत्र हो गया। कांग्रेस के नेताओं ने अपील निकाली कि खर्चा बहुत हो रहा है। उजड़े हुए लोगों को रीहैब्लीटेट करना है, जो लोग मारे गये उनके परिवारो को सहायता देनी है। इस सप्लीमेंटरी ऐस्टिमेट मे आपने सात लाख रूपया दिया है। आपने कहा है कि उनके परिवारो को ऐक्स–ग्रेशिया ग्रांट दी जाएगी लेकिन मैं आपके द्वारा डिप्टी स्पीकर साहिबा, फाईनैंस मिनिस्टर साहिबा से कहता हूं कि वे कैटगौरिकली महेन्द्रगढ़ जिले की और नारनौल के एस.डी.एम. की बात हाउस मे कहे। वह इनके नोटिस मे है। वहां रिम्युनरेशन बजाय नकदी रूपया देने के बौंडज् की शकल मे दिया गया। आप

कल्पना कीजिए कि जिस परिवार का कोई व्यक्ति कोई बड़ी जायदाद का मालिक नही होता। बौंड देना तो गरीबों के साथ, शहीदों के साथ मजाक करने वाली बात है। मैं तो सोचता था कि मुख्य मंत्री जी बड़ी तेज तबीयत के आदमी है इसलिए उन्होने तुरन्त वायरलैंस किया होगा परन्तु डिप्टी स्पीकर साहिबा, आप जानती है कि इनकी सरकार कुछ लोगा का बड़ा लिहाज करती है। आज, डिप्टी स्पीकर साहिबा, सारे देश की जनता ने, हरियाणा के आवाम ने गरीब, अमी, किसान मजदूर ने, व्यापारी ने, कर्मचारी ने, विद्यार्थी ने और हरेक व्यक्ति ने राष्ट्र पर आए हुए संकट को देख कर अपना वोट काट कर किफायतशारी करके, बचत करके पैसा दिया और राष्ट्र सुरक्षा के नाम से दिया। तहसीलदार रूपया इकट्ठा कर रहे है, बी.डी.ओज. रूपया इकट्ठा कर रहे है और अन्य सरकारी कर्मचारी भी लगे हुए है लेकिन जलसो मे मुख्य मंत्री जी जब जाते है तो उसको शक्ल थैली भेंट करने की दे दी जाती है। सुरक्षा कोष के नाम से इकट्ठा किया गया रूपया कांग्रेस के चुनाव फंड मे इकट्ठा हो रहा है। मैं बैंकों के नाम तक बता सकता हूं। डिप्टी स्पीकर साहिबा, मेरे बोलने के बाद मुख्य मंत्री जी ने और बनारसी दास जी ने जरूर बोलना है। वे मेरा चैलेंज कबूल करे और एक्सप्लेन करे कि यह रूपया इन बैकों के अंदर इन दिनों कहां से आया? डिप्टी स्पीकर साहिबा, इस सप्लीमेंटरी एस्टिमेट मे भी जिक्र है कि हरियाणा मे चुनाव होने वाला है इसलिए कुछ रूपया चाहिए? सफा 4 पर लिखा है किः—

"Expenditure on election to the State Legislative Assembly Rs. 80,000" इसमे यह भी लिखा है कि हमने रूपया इसलिए प्रोक्योर करना हे कि कई आईटम्ज जो इलैक्शन के दिनो मे काम आती है, जैसे फार्मज, एनवैल्पस आदि, उन्हे खरीदना है। इसके अलावा इन्होने कुछ पैसा मांगा है। for printing of electoral rolls for election to the Vidhan Sabha. डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैंने उस दिन भी बजट पर बोलते हुए कहा था कि इसको पहली बनाने से क्या फायदा ? इन दोस्तों ने सारे प्रदेश की जनता मे एक बात चला दी कि चुनाव होगा लेकिन सदन मे कहेंगे कि पता देखेंगे कि 33 परसैंट कट लग जाएगा मगबर जनता के सामने जो अनर्टेनिटी का माहौल है यह खत्म होना चाहिए। इसलिए, डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं आपके द्वारा इनसे कहना चाहता हूं कि मेरी बातों का जवाब देते हुए ये इस बात पर भी जरूर रोशनी डाले।

डिप्टी स्पीकर साहिबा, जब कभी बनारसी दास गुप्ता बोलेंगे, समाजवाद की बात कहेंगे और यह भी कहेंगे कि हम बड़े प्रगतिवादी है, प्रगतिशील है जबकि इनके प्रोग्रेसिव होने का सबूत यह हे कि दिन–ब–दिन ये लियारजिक होते जा रहे है। अब इनमे परिश्रम करने का कष्ट उठाने की क्षमता के बजाय आरामतलबी बढ़ती जा रही है। इन्होने सात लाख का हवाई जहाज जुलाई के महीने मे खरीद डाला। इनसे पूछा जाए कि सारे हरियाणा का रेडियस कितना है ? चंडीगढ़ से होडल, होडल से डबवाली, डबवाली से कालका, यही इलाका हरियाणा का है न? इसका रेडियस अधिक से अधीक सौ मील है और मर्सेडिज गाड़िया इनके

पास है। वह गाड़ी लाखों रूपये की है और उस की स्पीड 100–120 किलोमीटर होती है। अगर इन्होंने दिल्ली पहुंचना हो ता तीन घंटे मे पहूंच जाते है। आखिर डिप्टी स्पीकर साहिबा, इन्होने कौन सा तीर मारना है? हम मान लेते अगर आपका मंत्रिमण्डल पांच लोगो का ही होता, आपने तो पहले ही फौज भरती कर रखी है। और कई उम्मीदवार तो अभी भी मुंह लटकाए बैठे है कि हमारा नम्बर नही आया। डिप्टी स्पीकर साहिबा, मुझे समझ नही आता कि ये लोग गरीब किसान, मजदूर और छोटे व्यापारी के गाढ़े पसीने की कमाई के ऊपर डाका क्यों मारते है? इन्होने पर आना–जाना पड़ता है, मैं नही समझता कि इनको कहां पर जल्दी मे जाना पड़ता है? चण्डीगढ़ से हरियाणा भवन, दिल्ली चले जायेंगे, और तो कोई जगह मुझे नजर नही आती जहां इनको जल्दी जाना पड़ता हो। अब इनको हवाई जहाज के लिए हवाई पट्टी भी चाहिए, क्योंकि हवाई जहाज ने की तो लैंड भी करना है। अब हवाई पट्टी तो हमारे हरियाणा मे केवल अम्बाला, हिसार, चंडीगढ़ और करनाल मे ही है, मेरी समझ से तो यह बाहर है कि हवाई जहाज का क्या करेगे। बेकार मे ही स्टेट का पैसा जाया करने वाली बात है।

अब इन्होने यह कहा कि है 1970–71 मे 90 हजार रूपये कि जो डिस्क्रिशनरी प्रान्त थी, वह हम इस्तेमाल हनी कर सके थे, इसलिये वह लैप्स हो गयी थी, अब उनको फिर इस्तेमाल करने की इजाजत मांग रहे हैं उस पैसे को इस्तेमाल करने की

इजाजत इस लिये मांग रहे है क्योंकि इलैक्शन आ रहा है। उस पैसे से इन्होने कई लोगों को रोजी करना है। यह सरकार प्रदेश से बेकारी को दूर नही कर रही है, न गुरबत को दूर कर सकी है और न ही उन लोगों को जो बेचारे झोंपड़ियों मे पड़े हुए है मकान दे सकी है। आज कितने ही हमारे नौजवान बेकार फिर रहे है। यह उस 90 हजार रूपये से किसी की चौपाल को ठीक करा देंगे, किसी का कुछ कर देंगे ताकि इलैक्शन मे मदद मिल सके।

पब्लिक सर्विस कमीशन को कुछ रूपया दोना है परन्तु डिप्टी स्पीकर साहिबा, मुख्य मुत्री जी मे इतनी गर्मी आ रही है वे किसी की परवाह नही करते। कोई आदमी उनकी मर्जी के मुताबिक न चले, या उनके सामने हथियार न फैंक दे, उसको ये बर्दाश्त नही कर सकते। पब्लिक सर्विस कमीशन का चेयरमैंन श्री दरबारी लाल गुप्ता और दूसरे दो मेंबर और है, वे इनकी इच्छा के अनुसार नही चलते, जिसके कारण ये उनसे नाराज रहते है हमने इनसे कहा था कि पब्लिक सर्विस कमीशन की रिपोर्ट पर डिबेट कर लेने दो, परन्तु ये नही माने क्योंकि इनकी पोल खुलती थी। समय बहुत बातो का जिक्र करूंगा । इस सरकार ने पहले तो वहां का सैक्रेटरी रखने के लिये कुछ नामों का पैनल जाता है और उन्हे 10—15 दिन या महीने का टाईम दिया जाता है ताकि वे उसमे से सिलैक्ट कर सके। मगर इस सरकार ने उसे 48 घंटे मे जवाब देने को कहा। उन्होने इनकी ऐसी धमकी के सामने शस्त्र नही डाले तो 6 महीने तक कोई सैक्रेटरी नही दिया गया। यही ही

नही किया, बल्कि उसका स्टाफ भी आधा कर दिया। सुप्रिन्टैंडैंट कम कर दिया, 6 अस्सिटैंट घटा दिये और 16 क्लर्क भी कम कर दिये। अभी पिछले ही दिनों ब्लास डिवैल्पमेंट आफिसर, सिविल सर्विस (जुडीशियल ब्रांच) क्लाय वन सर्विसिज, हरियाणा सिविल सर्विस (ऐग्जैक्टिव ब्रांच) तथा ट्रैजरी आफिसर का इम्तिहान होना था और उन पेपरों फिकटिशियस नंबर लगाने के लिये काफी स्टाफ की जरूरत थी क्योंकि काफी बड़ा रिकार्ड होता है, परन्तु बंसी लाल जी ने उनकी एक न सुनी और सारे स्टाफ को वापिस ले लिया। बंसी लाल जी क हुक्म के मुताबिक कोई ऐसा काम होगा, जो उन्हो¯ने नही किया, जिस के कारण यह उनसे नाराज हुए और उन्हें पंगु बना दिया। डिप्टी स्पीकर साहिबा, हमको जो निजाम कबूल है, जो सिस्टम आफ गवर्नमैंट हम ने एकसैप्ट किया है और जिस शासन प्रणाली को हमने स्वीकार किया है, वह लोकतान्त्रिक है, डैमोक्रेटिक है और जमहूरी है। यह कोई मुख्य मंत्री जी की बपौती नही है, किसी वजीर की बपौती नही है या किसी मैंबर की बपौती नही है यहां पर तो सरकारी और गैर सरकारी पार्टी का राज है, जनता का राज है। सूबे मे रहने वाले हर आदमी को मौलिक अधिकर है। जितना इनको अधिकार है उतना दूसरों को भी है। डिप्टी स्पीकर साहिबा, ये ही अदारे होते है, एजेन्सीज होती है, इन्स्टीच्यूशन्ज होते है, जिनके माध्यम से यह देखा जाता है कि सब को ईक्वल अपौर्चुनिटी दी गयी है या नही? इस सरकार ने पब्लिक सर्विस कमीशन से धड़ाधड़ आसामियां निकाल कर, एस.एस.एस. बोर्ड, को दे दी परन्तु उस

एस.एस.एस. बोर्ड को हाई कोर्ट ने ऐसा जूता मारा कि हमें भी कहते हुए शर्म आती है। इन्होंने टीचर्ज की अप्वायंटमैंटस रिश्वत ले–लेकर की थी, दोनों हाथों से लूट मचायी थी, लिहाजा हाई कोर्ट ने कहा कि तुमने जो सिलैक्शन की है, वह रद्द की जायें और आप नये सिरे से इंटरव्यू लो। डिप्टी स्पीकर साहिबा, वास्तव मे यह गवर्नमैंट पर रिफ्लैक्शन है। अगर इस सरकार मे कोई इखलाक की बात होती, इनका कुछ मौरल स्टैंडर्ड होता, इनको इनकी आत्मा कुरेदती तो ये इस्तीफा दे देते। परन्तु इन्होंने इस्तीफा नही दिया।

डिप्टी स्पीकर साहिबा, इस सरकार की क्या–क्या बाते बताऊं? इन्होने मासूम बच्चों को कई महीने तक परेशान रखा। अप्रैल के महीने मे क्लासिज शुरू हो गयी थी लेकिन अक्तुबर नवम्बर के महीने तक उनको पढ़ने की किताबे मुहैय्या नही हुई। चौधरी माडू सिंह उस डिपार्टमैंट के वजीर है। मैने और चौधरी रणबीर सिंह ने एक ध्यान आर्कषण प्रस्ताव दिया था, जोकि उनके कान पर आवाज पहुंचाने के लिये डैमोक्रेसी मे एक रैमेडी है। अगर आप यह अंदाजा नही लगा सकते थे, आप मे इतनी विजडम नही है कि कितनी किताबों की और कब जरूरत है तो हाथ जोड़कर अपनी काबलियत कम मानकर, इस काम का नियंत्रण किसी दूसरे हाथों मे आने देते। डिप्टी स्पीकर साहिबा, इस महंगाई के जामाने मे गरीब आदमियों को बुरी तरह से लूटा गया है, उन मासूम बच्चों के दिमाग पर इसका क्या असर हुआ होगा

कि हमारी सरकार, इस जमहूरियत के समय मे भी हमे लूटने का मौका देगी।

डिप्टी स्पीकर साहिबा, इन्होने बारम्बार यही कहा है कि हमने बस सर्विस बहुत अच्छी कर दी है। मैं चण्डीगढ़ डिपों की बसों का हाल बता देता हूं। कल भी रास्ते मे चंडीगढ़ डिपों की बस खराब हुई खड़ी थी। जहां आप हरियाणा मे अच्छी बसें चला रहे हो वहां चंडीगढ़ डिपों के लिये भी आप कोई नई बसें लागानी चाहिएं ताकि लोगों को दिक्कत न हो। इन्होन पेज 44 पर कुछ बस स्टैंडज बनाने का जिक्र किया हुआ है। डिप्टी स्पीकर साहिबा, आप तो अम्बाला मे रहती है और भगवान आपकी सदा सहायता करें कि आप डिप्टी स्पीकर बनी रहे और आपको कार मिली रहे। आपने तो बसों मे सफर नही किया होगा क्योंकि आपके पास कार है। हमें तो बस मे ही जाना पड़ता है।

उपाध्यक्षाः बस मे भी सफर किया है।

श्री मंगल सैनः डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं निवेदन करना चाहता हूं कि रोहतक जिले के अन्दर सबसे पहला बस–स्टैंड बहादुरगढ़ का आता है और वह संत जी का निर्वाचन क्षेत्र है। आप जानती ही है कि संत जी का स्वभाव भी संतों जैसा ही है। उन्होंने कभी सरकार से कहने की तकलीफ नही की कि वहां पर भी बस–अड्डा होना चाहिए। वहां बस–अड्डा होने के कारण से कोई न कोई आदमी पिस जाता है। इसी प्रकार से गोहाना मे भी

कोई बस–अड्डे का बंदोबस्त नही है। मैंहम मे भी बस–अड्डे का कोई प्रबंध नही है। वहां के लिये चौधरी राज सिंह दलाल ने भी कोशिश की है कि वहां पर बस–अड्डा बनाया जाए परंतु मुख्य मंत्री जी कभी उनसे खुश हो जाते और कभी नाराज हो जाते है। यह स्थान, जो मैंने बताए है, बड़े महत्वपूर्ण है, यहां बस–अड्डे जरूर बनने चाहिएं। बसों का किराया नही बढ़ाना चाहिए और लोगो को पूरी फैसिलिटीज मिलनी चाहिए। डिप्टी स्पीकर साहिबा, आप बार–बार घंटी की तरफ लपक रही है, मैं ज्यादा समय नही लूंगा दो तीन बाते ही कहकर अपना भाषण समाप्त कर दूंगा।

करनाल मे बस अड्डे पर रैस्टोरैंट खोला गया था। वह अच्छा भला चला हुआ था लेकिन हमारे होम मिनिस्टर साहब, यहा मौजूद नही है, इनको पसन्द नही आया और उसे वहां से उठाकर ये बड़खल लेक पर ले गये है। इसके लिए इन्होने यह कहा है कि मैं गुड़गांव जिले का रहने वाला हूं। जिले मे आम तौर पर शाम को सैर–सपार्ट के लिये जाना पड़ता है, इसलिये रैस्टोरेंट को बड़खल लेक को ले गये। बड़खल लेकर अब फिर खोल दी है। अब पता नही किस इलाके की ओर ले जायेंगे। मेरा कहने का मतलब यह है कि मुख्य मंत्री जीह को चाहिए कि वा साफ शब्दों मे कहे कि चुनाव होने वाले है या नही होने वाले है। ये लोग अवाम से डिफैंस फंड के नाम से जो रूपया इकट्ठा कर रहे है, अगर उसका इस्तेमाल चुनाव के लिये करना चाहते हो तो उससे बढ़कर और कोई घटिया बान नही हो सकती। डिप्टी स्पीकर

साहिबा, मैं एक बात और कहना चाहता हूं। लोगों का सुरक्षा केनाम पर इकटठा करते है और वहां पर पार्टी के भाषण होते है। मुझे तो यह जानकर बड़ा अफसोस हुआ कि वहां यह कहा जाता है कि 'कांग्रेस–आर' के उम्मीदवार को वोट दो और अगर कोई आदमी मुखलिफ पार्टी को खड़ा हो तो उसे यह समझ लेना चाहिए कि वह निक्सन या माओ–त्से–तुंग का नुमाइन्दा है। इनको अब ऐसे भाषण भी देने आ गये हैं । मैं समझता हूं कि हमारे यहां डैमोक्रेटिक सैट अप है और दिय कभी देश पर संकट आये जो हमे मिलकर उसका मुकाबला करनाचाहिए। देश की जनता ने ऐसा किया भी है और ठीक तोर पर इन्होने उसे सराहा भी है। इन सारी बातो की और ध्यान दिलाते हूए मैं एक बात और कहना चाहता हूं । उसके बाद मैं बैठ जाऊंगा। कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय मे छात्रों के असंतोष की बात चौधरी चांद राम और सिंगोल जी ने भी कह दी। मेरा कहना है कि कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय को रूपया तो देना चाहिए लेकिन उसका प्रबंध ठीक होना चाहिए। हमारे माडू सिंह जी रोहतक के रहने वाले है और सांपला हल्के से एम.एल.ए. है और भगवान ने बहुत दिनों से इन्हे वजीर बनने का मोका दिया है और ये तालीम के वजीर है। मैं इनके मुखारविंद से कहलवाना चाहता हूं कि रोहतक अब एक ऐसा स्थान बन गया है जहां पर 8 डिग्री कोलेज है, वह 16 हाई स्कूल है। हमारे जिले मे जितने कालेज है, किसी भी जिले मे उतने नही है। वहां पर एक यूनिवर्सिटी बननी चाहिए क्योंकि वहां पर सारे एलीमैंट्स मौजूद है और लोग भी लालायित हैं इससे वहां पर ला–फैकलटी चलेगी,

और कई फैकलटियां चलेंगी और लोगों को सुविधाए मिलेगी। मेरा कहना है कि वहां पर एक फुल फलैज्ड यूनिवर्सिटी होनी चाहिए, यह बात कहते हुए और इन शब्दो के सथ ही मैं अपना स्थान लेता हूं।

(इस समय बहुत से सदस्य बोलने के लिए खड़े हुए)

उपाध्यक्षाः चौधरी अब्दुल रज्जाक, 5 मिनट के लिये।

श्री सत्य नारायण सिंगोलः मैडम, अपोजीशन का समय अभी पूरा हनी हुआ है, इसलिये हमे समय मिलना चाहिए।

उपाध्यक्षाः अगर आप समय का सवाल उठायेंगे तो ठीक नही रहेगा क्योंकि जितना टाईम आपको दिया गया है आपका तो उतना भी नही बनता।

चौधरी जय सिंह राठीः हम तो इतना ही टाईम चाहते है कि आपकी नजर पर हम आ जाये, फालतु नही।

चौधरी अब्दुल रज्जाक खाँ (फिरोजपुर, झिरका): यह सैशन तमाम मैंबरान की तरफ से बहुत ही खुशगवार हालत मे चलता रहा, इसके लिये दोनो साइड के मैंबरान मुबारिकबाद का हक रखते है। यहां पर बजट पर बहुत तफसील के साथ बहस हुई है और मुझे सप्लीमेंटरी डिमांडज के बारे मे बोलने का मौका मिला है। मुखालिफ बैंचिस की तरफ से कुछ अच्छे मश्वरे भी आये है और ज्यादातर तनकीद वही की गयी है जो प्रायः मुखलिफ बैन्चिज

की तरफ से होती है । सरकार की तरफ से जितना रूपया काम करने के लिये मांगा गया है, वह बिल्कुल ठीक और जरूरत के मुताबिक मांगा गया है। इन मांगो की मंजूरी हमे अपने मश्वहरे और मांग के साथ बड़ी फिराख दिल के साथ दे देनी चाहिए। मैं थोड़े वक्त मे, जैसा आपने फरमाया है और 5 मिनट मिले है, फाइनान्स मिनिस्टर साहिबा की खिदमत मे कुछ अर्ज करूंगां पहले भी यानी पिछले सैशन मे भी मैंने गुजारिश की थी और सरकार की इस तरफ तवज्जुह दिलायी थी कि हमारी हरियाणा स्टेट मे बहुत सी ऐसी प्राइवेट कारे है जो टैक्सी की शक्ल मे चल रही है और कई कई हजार रूपया महीना कमाती है। सरकार की नजरो से वह बची हुई है। अगर हमारी फाईनैंस मिनिस्टर साहिबा इस तरफ तवज्जुह फरमाये, जेसे मेरा अंदाजा है कि 5–6 सौ कारें पूरी स्टेट मे ऐसी है, क्योंकि मैंने अपने जिले गुड़गावं की कुछ फिगर्ज इकट्ठी की थी, हमारे यहां 85 कारें है जो सरकार की आंखों मे धूल झोंक कर टैक्सी की शक्ल मे चल रही है और दो तीन हजार रूपया महीना कमा रही है तो काफी रूपया टैक्स का, और वसूल हो सकता है। मै सिफारिश करूंगा कि उन पर भी टैक्स लगना चाहिए। उनको एच.आर.वाई. के तहत रजिस्टर करना चाहिए और उनसे डेढ़ दो लाख रूपये पर क्वार्टर की आमदी सरकार को आनी चाहिए।

इसके साथ ही साथ और चिराग तले अंधेरा है। 1857 की लड़ाई मे बहुत से मुहिब्बे वतन ने देश को आजाद कराने के

लिये जान की, माल की, धन की, पूंजी की और हर तरह की कुर्बानी की। इंगलिश गवर्नमैंट ने उनका शिकार किया और उनकी जायदादे जप्त कर ली। आज 25 साल मुल्क को आजाद हुए हो गये है लेकिन वह अपनी कुर्बानी दी हुई है और उनके बाने मे सैशन मे भी कहा गया, मंत्री महोदय अभी तक भी उनकी बात पूरी नही हुई हैं एक गांव दोहरा तहसील फिरोजपुर झिरका मे है। यह सारे का सारा गांव अंग्रेजो ने जप्त कर लिया था और वहां के लोग आज तक भी जमीन से महरूम है। सारे लोग किसान पेशा लोग है। उन लोगों के लिये गुजार करने के लिये कोई दूसरा पेशा नही है। उस इलाके मे कोई ऐसी फैक्टरी वगैरह भी नही है जिसमे वे लोग अपने बच्चों को उम्पलाय करके अपना गुजारा कर सके। उनकी हालत बड़ी खराब है और वे गरीब होते चले जा रहे है क्योंकि बटाई पर जमीन काश्त करते है। इतने सीधे है कि सरकार की तरफ से जबकि 1/3 बटाई देने की सहूलियत है, लोग उनसे 1/2 बटाई लेते है। अगर वे लोग इस किस्म की शरायत और मुआदात पर नही लेते तो उनकों जमीन भी बटाई पर नही मिलती। इसी तरह का एक और गांव रायसीना है, इसके लोगों ने भी 1857 मे अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी। मुल्क की आजादी के लिये कुर्बानी देते हुए उनकी जायदाद और प्रापर्टी खत्म हो गयी। इसलिये मैं सरकार से कहता हूं कि उनकी तरफ आज तक तवज्जुह नही दी गयी है, हमें उनकी कुर्बानी की सराहना करनी चाहिए थी। जैसे हांसी की तरफ, लोगों को मकान बनाने के लिये ग्रांटस मिली है, वैसे ही उनको भी मिलनी चाहिए,

ताकि लोगों को यह पता चले कि हमने जो कुर्बानी दी थी उसका फल हमें आजाद हाने के बाद हमल रहा है। इन अल्फाज के साथ मैं सरकार का उनकी तरफ ध्यान दिलाना चाहूंगा। (घंटी की आवाज) थोड़ा सा और टाईम दे दीजिए।

उपाध्यक्षाः अच्छा दो मिनट और बोल लीजियें

चौधरी अब्दुल रज्जाक खांः फाइनैंस मिनिस्टर साहिबा ने सप्लीमेंटरी बजट में हैड्ज 19, 21, 26, 30 और 14 के तहत पब्लिक को कहते से रिलीफ देने के लिये कुछ रकमें मांगी है। हम इससे इत्तफाक करते है। जो डिमांड्ज इन्होने की है, वे बिल्कुल सही है और हाउस को इन्हें पास कर देना चाहिए। एक और बात के लिये मैं सरकार का शुक्रिया करूंगा। 30 साल से एक वहां मुसीबत चली आ रही थी, वह मुसीबत इस सरकार ने दूर कर दी है जबकि किसी दूसरी सरकार ने उसे दूर नही किया था। मैं खास तौर से उसके लिये इस सरकार का शुक्रिया अदा करता हूं। पहले हमारे जो पहाड़ जंगलात मे आते थे, उन्हें अब सरकार ने छोड़ दिया है। हमारे किसानो का, पशु रखने का कारण, उन पर बहुत ज्यादा दारोमदार है। सरकार के पहाड़ छोड़ देने से उस इलाके, मे, इसकी बड़ी भारी सराहना हैं दो–तीन ऐसे पहाड़ रह गये है जिन पर लोग फ्लड के दिनों मे चले जाते है, जैसे रवा गांव के जो तहसील फिरोजपुर झिरका मे है और एक आध गांव और तहसील नूह मे है। मैं उम्मीद करता हूं कि इन दो–तीन पहाड़ों को भी सरकार को छोड़ देना चाहिए।

एक और बात जो मैं कहना चाहता हूं वह यह कि हमारे इलाके मे जो आगरा कैनाल है सरकार को चाहिए कि जल्दी से जल्दी उसका कम्पेनसेशन देकर उसे अपने हाथ मे ले इसके लिए अगर दो–चार लाख रूपया ज्यादा भी देना पड़े तो कोई हर्ज नही है।

एक छोटी सी बात मैं और कहना चाहता हूं। हमारी दो तहसीलें फिरोजपुर झिरका और नूह तहसील को बैकवर्ड एरिया करार दिया हुआ है लेकिन वहां के सरकार मुलाजिमों को बैकवर्ड एलाउंस नही मिलता। मेरी सरकार से प्रार्थना है कि वह इस इलाके के सरकारी मुलाजिमों को बैकवड्ड अलाउंस जरूर दे। इतना कहकर मैं खत्म करता हूं।

उपाध्यक्षाः डाक्टर गम्भीर आप बोलें (व्यवधान)।

डाक्टर मलिक चंद गम्भीर (यमुनानगर): डिप्टी स्पीकर साहिबा, हमारे सामने जो सप्लीमेंटरी बिल है, उसके बारे मे, मैं कुछ कहना चाहता हूं। मैं सब से पहले पुलिस के महकमें की तरफ सरकार का ध्यान दिलाला चाहता हूं। आज मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि पुलिस का काम लोगों को आराम देने का होता है लेकिन वह आराम देने की बजाए अगर लोगो को तकलीफ देना शुरू कर दे तो इससे बुरी बार और क्या हो सकती है। पुलिस के अंदर आज भी उन लोगों की हिस्टरी शीट खोल दी जाती है जो लोग पुलिस के अन्दर किसी मुकदमें मे गवाही देने

जाते है। अगर कोई आदमी एक दफा भी गवाही देता है, उसकी भी हिस्टरी शीट खोल दी जाती हैं अगर कोई आदमी बदमाश है, बार–बार जुर्म करता है, उसकी हिस्टरी शीट खोलें तो बात मानी जा सकती है। इस सैशन के दो–चार दिन पहले यमुनानगर मे दो ऐसे केस हुए है जोकि हमने डी.एस.पी. के नोटिस मे ला दिए थे कि उनकी हिस्टरी शीट कैसे खुल गई। इसलिए मैं पुलिस महकमें से प्रार्थना करूंगा कि इस चीज को वे ध्यान मे रखें और जो वाकई बदमाश है, उनको सजा दी जाए लेकिन बेकसूर लोगों को तंग न किया जाए।

तालीम के संबंध मे मैं कहना चाहता हूं कि हरियाणा मे शिक्षा के क्षेत्र मे काफी तरक्की हो रही है। यह एक हिन्दी स्टेट है लेकिन अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि आज 125 सीटें शास्त्रियों की खाली है लेकिन ये जगह उन्हे न देकर दूसरे टीचरों को लगा रहे है। इस प्रकार हमारे यहां संस्कृत की जितनी तरक्की होनी चाहिए वह नही हो रही है।

रोड़ज् के मुताल्लिक मे कुद सुझाव देना चाहता हूं। डिप्टी स्पीकर साहिबा, आप भी जानती होंगी कि यमुनानगर मे बाई–पास की तकलीफ है। पीछे चीफ मिनिस्टर साहब, जमुनानगर गए थे। इन्होने वहां मंजूर किया था कि एक सड़क जमुनानगर से पांसरा जो कि लगाधरी, सहारनपुर रोड़ पर पड़ता है वहां तक बना दें और दूसरी सड़क जगाधरी रेलवे वर्कशाप से फरखपुर फाअक तक यानी मुडेवर तक अगर सड़क बना दी जाए तो

बाई–पास की समस्या हल हो जाएगी। जमुनानगर से बाहर सहानपुर जाते हुए एक छोटी नहर पड़ती है, वहां पर जमुना का पुल है। वह इतना कम चौड़ा है कि मुश्किल से एक बस गुजर सकती है । मेरी प्रार्थना है कि उस पुल को चौड़ा किया जाए।

ऐग्रीकल्चर के मुत्तालिक मैं यह कहना चाहता हूं कि इसमे कोई शक नही है कि हरियाणा ऐग्रीकल्चर मे काफी तरक्की कर रहा है और हमारी अस्सी फीसदी आबादी अभी भी देहात मे रहती है। आप देखें कि शहरों के अंदर रहने के लिए मकान नही मिलते और गांवों के अंदर रहने के लिए आदमी नही मिलते। मैं इस संबंध मे यह कहना चाहता हूं कि आप गांवों के अंदर छोटी–छोटी सनते लगाएं जिससे कि वहां के लोगों को रोजगार मिल सके। मैं गन्ने के संबंध मे कहना चाहता हूं कि हमारी गवर्नमैंअ ने गन्ने का भाव ग्यारह रूपए क्विंटल रखा है। लेकिन हम लोग इससे सैटिस्फाईड नही है। डिप्टी स्पीकर साहिबा, आपको याद होगा कि 1967 मे जब संयुक्त विधायक दन की मिनिस्ट्री थी तो उस वक्त चीनी का भाव तीन और साढ़े तीन रूपए था। सरकार ने उस वक्त अठारह रूपण क्विंटल गन्ने का दाम दिया था लेकिन आज भी चीनी तीन रूपए किलों बिल रही है और फिर भी आज यह ग्यारह रूपए क्विंटल गन्ने का दाम देते है। गन्ने के रेट उसके मुताबिक मिलने चाहिए। बस इतना ही कहकर मैं समाप्त करता हूं।

श्री भगवान दास सहगल (अम्बाला कैंट): डिप्टी स्पीकर साहिबा, मे अपने इलाके के बारे मे अर्ज करना चाहता हूं (चौधरी जयसिंह राठी की तरफ से विघ्न) राठी साहब आज तो मुझे साढ़े तीन साल मे एक मिनट बोलने के लिए मिला है इसलिए आप मुझे बोल लेने दे। एक मिनट इलाके की बात कह दूंगा । डिप्टी स्पीकर साहिबा, अम्बाला कैंट से सरकार करोड़ो रूपया सेल्ज टैक्स और दूसरे टेक्सों की शक्त मे वसूल करती है लेकिन सरकार वहां एक पैसा भी खच्र नही करती । पिछली दफा चीफ मिनिस्टर साहब, वहां गए थे और एक स्कूल और एक हस्पताल का वायदा किया था लेकिन आज डेढ़ साल हो गया, वहां अभी कुछ भी नही बना है। मैंने यह बात पिछले सैशन मे कभ कही थी। सरकार को चाहिए कि वह उस इलाके को इग्नोर न करे। वह भी हरियाणा का एक अंग है, चीफ मिनिस्टर साहब से मैं अर्ज करूंगा कि जो वायदा करके आए थे उसको वे पूरा करें।

वहां एक कचहरी है जो कि प्राईवेट कोठी मे है। वह कोठी भी बहुत पुरानी है। करीब सौ साल पुरानी होगी। वहां पर टेलिफान का कोई इंतजाम नही है, वकीलों के बैठने का कोई इंतजाम नही है। मैं कहना चाहता हूं कि वहां कचहरी की बिल्डिंग बनवाई जाए। मुझे आशा है कि सरकार इस बात पर जरूर गौर करेगी। वहां पर स्कूल और अस्पताल बोड्र के है, चीफ मिनिस्टर साहब ने वायदा किया किया था कि इनका इंतजाम सरकार अपने हाथ मे ले लेगी। सरकार को वह वायदा पूरा करना चाहिए।

श्रीमती शकुन्तला (साल्हावास, अनुसूचित जाति): उपाध्यक्ष महोदया, वित्त मंत्री महोदया, ने जो विनियोग विधेयक सदन मे पेश किया है मैं उसका सख्त विरोध करने के लिये खड़ी हुई हूं। हमने इनसे मांगना तो क्या है और अगर मांगे भी तो पूरा करने का इनके पास समय नही है। जो समय चला गया उनमे हमारे साथ बहुत धक्का होता रहा है। आज इन्होने बहुत बड़ी रकम हमारे से मांगी है, अगर यह मांग पास हो गई तो हरियाणा के साथ ज्यादती होगी। कल को पता नही किसकी मिनिस्टरी होगी। इन्होने यह जो बिल रखा है यह गलत बिल है और यह पास नही होना चाहिए। डैमोक्रेसी के अंदर जो अपोजीशन कारोल होता है इन्होने वह बिल्कुल खत्म कर दिया है। मैं आपको एक छोटा सा उदाहरण बताती हूं कि अपोजीशन का डैमोक्रेसी के अंदर कितना बड़ा काम होता है। जैसे सड़क का चौराहा होता है और चौराहे पर एक सिपाही खड़ा होता है जो चारो तरफ से आने वाली गाड़ियों को हाथ देकर रोकता है और उनको ऐक्सीडेंट से बचाना है, यह अपोजीशन भी उस सिपाही की तरह गवर्नमैंट का ऐक्सीडेंट से बचाती है। अगर हम इनको बीच मे न टोकें तो ये धड़ा–धड़ ऐक्सीडेंट करते चले जायें। इसी सिपाही को ये खत्म करना चाहते है। जब यह खत्म हो जायेगा तो आप देख लेना कि इनके किस कदर ऐक्सीडेंअ होंगे। यह जो बिल है इसके अंदर इन्होने ऐक्सीडेंट होंगे। यह जो बिल है इसके अंदर इन्होने ऐक्सीडेंट करने की सोची है।

चौधरी जयसिंह राठीः अब तो केयुलटीज होंगी। (व्यवधान) इन्होने एक मैंटल हस्पताल बनाया है जिसमें 54 सीटें रखीं है। (व्यवधान)

श्रीमति शकुन्तलाः अपोजीशन को खत्म करने के लिये इन्होंने पूरी कार्यवाही की। जिन अपोजीशन के मैंबरों को जनता ने चुन कर भेजा था इनको लालच देकर इन्होने अपनी तरफ बिठा लिया और आज वे अपने इलाके को मुंह दिखाने से शर्माते हैं। (व्यवधान)

चौधरी जयसिंह राठीः (एक माननीय सदस्य की ओर इशारा करते हुए) यह बैठे है। डिप्टी स्पीकर साहिबा, यहां पर किसी एक आदमी की बात नही है, यहां तो एक ढूंढों हजारों मिलेंगे। जिसकी तरफ निगाह करो वही डिफैक्टर मिलेगा डिप्टी स्पीकर साहिबा, जिस तरह इन्होने डैमोक्रेसी को खत्म किया है उसी तरह से इन्होने डैमोक्रेसी के अदारों को भी नष्ट कर दिया है। इनकी नियत अपोजीशन के लिए बुरी है।

श्रीमती शकुन्तलाः डिप्टी स्पीकर साहिबा,

उपाध्यक्षाः शकुन्तला जी, आपका समय खत्म हो चुका है। (घंटी)

श्रीमती शकुन्तलाः डिप्टी स्पीकर साहिबा, आपको पता है कि मैं कम ही बोंलती हूं इसलिये आपको घंटी बजाने की जरूरत नही है।

उपाध्यक्षाः अच्छा, आप दो मिनट और बोल लें।

श्रीमति शकुन्तलाः डिप्टी स्पीकर साहिबा, इन्होने नहरों का बड़ा जिक्र किया है हमने इतना पैसा नहरों के ऊपर खर्च किया और इतना करने जा रहे है। ड्रेन नम्बन 8 जो है वह मेरे हल्के के अंदर साल मे एक बार तबाही मचा देती है। ग्रीवेंसिज कमेटी की मीटिंग मे वित्त मंत्री महोदया मेरे जिले मो जाती है, इस सिलसिले मे मैंने इनसे भी बात की थी। (श्रीमती ओम प्रभा जैन की तरफ इशारा करते हुए) बहिन जी, आपके याद होगा। डिप्टी स्पीकर साहिबा, तीन साल पहले का जिक्र है जब मैंने इनसे कहा था कि ड्रेन नम्बर 8 से मेरे हल्के मे तबाही मचती है लेकिन उस तरफ अब तक कोई ध्यान नही दिया गया। इनके ड्रेनेज वाले अफसर कहते है कि हमने ड्रेन नम्बर 8 पर 80 हजार रूपया खर्च कर दिया है लेकिन उस पर एक हजार रूपया भी खर्च नही किया गया। आप अंदाजा लगा सकती है कि वह 80 हजार किधर गया? इसी तरह से ये जो सप्लीमेंटरी ऐस्टिीमेट्स रखे जाते है इस पैसे का भी पता नही चलता कि कहां जाता है। डिप्टी स्पीकर साहिबा, सरकार ने तो कोई बात सुननी नही इसलिये हम तो आपको ही बता सकते है। अब मैं स्कूलों के बारे मे आपको बताती हूं। मेरे हल्के मे मुठाड़ा गांव है। सारे हरियाणा मे शायद इनको ऐसा गांव नही मिल सकता। वहां पर एक हाई स्कूल है जिसमे आप पास के सारे इलाके के लड़के पढ़ने आते है। ऐजुकेशन के संबंध में गवर्नमैंअ की जितनी भी शर्ते है उस स्कूल ने पूरी कर रखी है,

वहां के मास्टरो को इलाके के लोगो ने कभी कोइ दिक्कत नही आने दी। गांव मे कई ऐसे आदमी भी है जो इन मास्टरों को दूध तक पिलाते रहे है (हंसी) ऐसी बात सुन कर हंसना नही चाहिए मैं एक दुख की बात सुनाने जा रहा हूं.....(घंटी) (व्यवधान).....

मुख्य मंत्री (श्री बंसी लाल): अगर मेरे आने से काई एतराज है तो मैं फिर चला जाता हूं।

(इस समय श्री बंसी लाल जी सदन से बाहर चले गये)

श्रीमती शकुन्तला: मुठाड़े वाले स्कूल के अन्दर इन्होने क्या किया? इन्होन 3–4 मास्टर वहां से भगा दिये क्योंकि उन्होने मुझे वोट दिये थे। उन मास्टरों की जगह पर इन्होंने ऐ मास्टर भेजे जिन्होंने बच्चों को तंग करना शुरू कर दिया और कई लड़कियां के साथ दुर्व्यवहार किया। मिनिस्टर साहब ने हुक्म कर दिया कि वहां का स्कूल बंद कर दिया जाये, दो महीने तक वह स्कूल बन्द रहा। फिर हुआ क्या है? हमने आगे–पीछे फिर कर बड़ी मुशिकल से स्कूल खुलवाया। जो लड़के देश का सिर ऊंचा करने वाले है उनका इन लोगो ने कितना नुकसान किया.....

उपाध्यक्षा: आपका समय हो गया है, आप बैठ जाईये।

वित्त मंत्री (श्रीमती ओम प्रभा जैन): माननीय डिप्टी स्पीकर साहिबा, सुबह सप्लीमेंटरी डिमांड्स पर और इस समय ऐग्रीप्रिशन बिल पर साथियों ने अपने सुझाव दिये और अपने हल्कों की बात भी की। डिप्टी स्पीकर साहिबा, सबसे पहले

डिस्कशन शुरू करते हुए चौधरी चांद राम जी ने एक इस बात की आपत्ति उठाई कि 58 करोड़ रूपए की सप्लीमेंटरी डिमांड्स बहुत ज्यादा है जब कि हरियाणा का असल बजट भी तीन चार सौ करोड़ के बीच मे होता है।

चौधरी चांद रामः यह तो सिर्फ 250 करोड़ का है।

श्रीमती ओम प्रभा जैनः चौधरी साहब, पिछले साल का इस से ज्यादा ही बनेगा, मैं आप को बता दूंगी। डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं इस बात को तसलीम करती हूं कि 58 करोड़ की सप्लीमेंटरी डिमांड्ज का आना बहुत ज्यादा करती होता है लेकिन इस डिमांडज मे साफ तौर पर लिखा हे कि इस मे 48 करोड़ से अधिक रूपया सरकार को रिजर्व बैंक से वेज एंड मीन्ज के लिए लेना पड़ा जिस की ऐडजस्टमैंट फाईनैंशियल हिसाब–किताब के तरीके से दिखानी जरूरी होती है।। आप जानते है कि हमारे यहां रिकार्ड पैदावार हुई और हमारी सरकार कि किसानों को इन्सैंटिव प्राईस देने की नीति है। पिछले साल बारिश भी बहुत बमौका होती रही थी लेकिन उस के वाबजूद भी प्रोक्योरमैंट का काम जारी रहा और जो फूडग्रेन्ज प्रोक्योर होते है उस मे फूड कार्पोरेशन आफ इंडिया का हिस्सा होता है लेकिन वह हमें पेमैंट तब करते है जब माल उनको डिसपैंच हो जाए लेकिन बैगन्ज की कमी की वजह से हम वह उस वक्त नही कर पाए थे। इसलिए सरकार ने सारे खर्चे जिम्मेवारी अपने सर पर ली और 48 करोड रूपया रिजर्व बैंक आफ इंडिया से लोन ले कर प्रोक्योरमैंट की जिस का कि हमारे किसान

भाईयों को बहुत फायदा हुआ और हरियाणा मे वारिश की वजह से चाहे थोड़ी बहुत गेहूं खराब भी हुई लेकिन फिर भी सरकार ने प्रोक्योरमैंट जारी रखी।

चौधरी चांदरामः तो फिर वह अनाज कहां गया, यह भी तो आप बताएं?

श्रीमती ओम प्रभा जैनः डिप्टी स्पीकर साहिबा, पिछली सप्लीमैंटरी डिमांडज जो पास हुई और आज जो हम एप्रोप्रिएशन बिल पास करने जा रहे है इस मे 15 करोड़ 56 लाख रूपए की एडिशनल डिमांड्ज पास करवाई है। पिछले साल हमारा 12 करोड़ 50 लाख का फाईनंशियल बर्डन था और इस साल 15.56 करोड़ का है, जिसमे इन डिमांड्ज के जरिए हम 6.93 लाख का एडिशनल बोझा स्टेट के फण्ड पर डाल रहे हैं जिस समय मैंने मेन बजट पेश किया था तो अर्ज की थी कि हमारा ओरिजनल फ्लैंड ऐक्सपैंडिचर 61 करोड़ का था और उस को बढ़ा कर हम 75 करोड़ रूपये का खर्चा करने जा रहे है यानी 14 करोड़ रूपये का हम ने उस मे इजाफा किया है। उस मे नौनफ्लैन, एडीशनल रैविन्यूज भी आते है। जब हम ने पिदले साल बजट पेश किया था तो कुछ डैफिसिट था, उस को पूरा करके हम ने 15 करोड़ का बोझा भी बर्दाश्त किया और हमार डैफिसिट जैसा कि कहा गया ाि 9 करोड़ के करीब होगा। डिप्टी स्पीकर साहिबा, 48 करोड़ रूपए की रकम जो हम ने वेज एंड मीन्ज के तहत कर्ज ली थी उस का 31 लाख रूपया हम ने इंट्रैस्ट का देना था जो कि

अकाउंटैंट जनरल की एडवाईस पर हमे उस और डालना पड़ा। इस के अतिरिक्त इसमे पब्लिक वर्कस रोड़ज के लिए, तकावी के लिए, कहीं पुलिस पर है, कीं जेल पर है तरपालों के लिए 10 लाख रूपये एडवांस किया। इसी तरह कुछ पानीपत मे बिजली के थरमल प्लांट के लिए 1.55 करोड़ रूपया एडवांस पेमैंट के लिए देना पड़ा, 40 लाख रूपया देहली जयपुर ट्रांसमिशन लाईन के लिए दिया गया। तो इस तरह से बहुत काफी खर्चा हम प्लेन के तौर पर भी कर रहे है जिस से राज्य मे लोगो को बड़ा फायदा पहुंचने जा रहा है।

चौधरी चांदरामः हवाई जहाज खरीदने का क्या कारण है, यह भी जर बता दीजिए।

श्रीमती ओम प्रभा जैनः डिप्टी स्पीकर साहिबा, एअर ट्रैफिक का स्टेट मे भी इस्तेमाल हो सकता है और बाहर भी कई जगहो पर जब मीटिंग्ज होंगी और होती है तो हम इस को इस्तेमाल कर सकते है हमारे पहले जो सिविल एविएशन के एडवाईजर थे श्री हरजिन्दर सिंह जी जो कि वक्त इस दुनियां मे नही है उन की जब डिमांड आई थी तो मैंने उन से पूछा था कि इस का खर्चा स्टेट पर बहुत ज्यादा तो नही पड़ेगा। तो इन्होने बजाया थ कि सिर्फ एक दफा आप को इन्वैस्टमैंट करनी पड़ेगी और उस के बाद उस पर जो खर्चा होता है वह मर्सिडीज कार के बराबर ही होता है, बल्कि अगर कहीं बाहर मीटिंग होनी हो और

हमारे सारे आफीसर्ज उस पर चढ़ कर जाएं तो शायद उस से भी कम खर्च पड़े।

श्री एस.पी. जयसवालः यह आप गलत कह रही है।

चौधरी चांदरामः एक लाख का तो उसकी मैंटेनैंस का ही खर्चा है।

चौधरी जयसिंह राठीः बहन जी उस की सीटें ऊंची है आप को बैठने मे तकलीफ रहेगी आप उस की सीटें नीचे करवा ले तो अच्छा रहेगा।

श्रीमती ओम प्रभा जैनः आप फिक्र न करें मैंने काफी बार एअर सफर किया हुआ है। तो मैं प्रार्थना करूंगी, डिप्टी स्पीकर साहिबा, इस एप्रोप्रिएशन बिल पर आप मोशन मूव करें और इस को पास कर दिया जाये।

Deputy Speaker: Question is—

That the Haryana Appropriation (No.2) Bill be taken into consideration at once.

The motion was carried.

Deputy Speaker: The House will now take up the Bill clause by clause.

Clause 2

Deputy Speaker: Question is—

That clause 2 stand part of the Bill.

The motion was carried.

Clause 3

Deputy Speaker: Question is—

That clause 3 stand part of the Bill.

The motion was carried.

THE SCHEDULE

Deputy Speaker: Question is—

That the Schedulestand part of the Bill.

The motion was carried.

Clause 1

Deputy Speaker: Question is—

That clause 1 stand part of the Bill.

The motion was carried.

TITLE

Deputy Speaker: Question is—

That Title be the Title of the Bill.

The motion was carried.

Shrimati Om Prabha Jain: Madam, I bet to move—

That the Haryana Appropriation (No.2) Bill be passed.

Deputy Speaker: Motion moved—

That the Haryana Appropriation (No.2) Bill be passed.

चौधरी जयसिंह राठी (नौल्था): डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं ज्यादा समय नही लूंगा जो कुछ उन्होने पेश किया है, जिस सूरत मे ये यह बिल लेकर आए है पहले तो मैंने इसे मिसएप्रोप्रिएशन बिल बताया था लेकिन असल मे It is a Bill for the disapproval of the House..... क्योंकि मुझें ऐसा लगता हे कि आधे मैंबर यहां ऐसे बैठे है जो अनाड़ी है (विघ्न) ठीक लगता है मुझे.....

महंत गंगा सागरः आन ए प्वायंट आफ आर्डर मैडम। क्या कोई मैंबर साहब ऐसा कह सकते है कि आधे मैंबर यहां अनाड़ी बैठे है?

चौधरी जयसिंह राठीः अगर आप गुस्सा करते हो तो चलो मैं यह कह देता हूं कि आधे यहां अनाड़ी नही बैठे है। (हंसी) इसमे क्या फर्क पड़ता है तो डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं आपके सामने अर्ज करना चाहता हूं कि आप देखे कि हाउस मे कितनी गलतबयानी होती है। यह हमारे से खच्र एप्रूव करा रहे है लेकिन मैं आपका ध्यान पेज तीन की तरफ दिलाना चाहता हूं और

मैं फाईनैंस मिनिस्टर साहिबा से कहूंगा कि वह इस पर गौर कर ले यहां लिखा है

'An additional amount of Rs. 2,45,800 is required to meet ht expenditure in connection with the payment of remuneration to the staff which had been employed for the revision of electoral rolls of 81 constituencies of Haryana Vidhan Sabha."

It is further written thereing—

"The entiire basic roll of 81 constituencies of Haryana Vidhan Sabha has been got printed..... An expenditure of Rs. 5,22,500 is likely to be required for the payment of printing charges to the presses who have done this work"

And the last item is "Expenditure on elections to the State legislative Assembly—Rs. 80,000." In that connection it is stated—

"It has been decided to procure various items of election material and to have forms and envelops etc. printed for use for the ensuing election to the Haryana Vidhan Sabha. An additional appropriation of Rs. 80,000 is required for this purpose."

इसम लिखा है एन्सूइंग इलैक्शनज इसका मतलब साफ है कि जब इन्होने यह बजट बनाया था तो इनको पता था कि ये इलैक्शनज करा रहे है लेकिन ये सब को बहकाते रहे और अपने साथियों से गलतबयानी करते रहे कि इलैक्शनज नही होंगे अब

यह बिल पास करा कर पैसा लेकर आपके हाथों आपके गले पर छुरी चलवाना चाहते है। अब आप देख लो कि यह बिल और बजट पास करके आप अपनी गर्दन पर चलाना चाहते है या नही मैं तो आपको यह राय नही दूंगा कि अपनी गर्दन पर आप छुरी चलाओ (विघ्न) यह कहते रहे और कहने को तो वे अब भी कह रहे है कि पार्टी फैसला कर देगी या प्रधान मंत्री कह देंगे तो इलैक्शनज करायेंगे और इसीलिये इन्होने बजट मे पैसा ले रखा है। मैं कहना चाहता हूं कि आप इस तरह धोखे से न भागों और धोखे से हार को जीत मे नही बदलना चाहिये। इस बिल के बारे मे मंगल सैन जी कह रहे थे कि श्री बंसी लाल ने यह कर दिया वह कर दिया, कुरप्शन फैला दी और ओम प्रभा जैन जी ने सारा बजट लुटा कर रख दिया। मैं कहता हूं कि आप ऐसी बाते कहते हो इनको, इनकी बात तो कुम्हार और गधे वाली है। एक मास्टर जी पढ़ाते हुये एक बच्चें से कहने लगे कि जितनी मेहनत से मैंने तुझे पढ़ाया है अगर इतनी मेहनत गधे पर करता तो उसे आदमी बना देता। पास मे एक कुम्हार यह बात सुन रहा था वह मास्टर जी के पास आया और कहने लगा कि मेरे कोई औलाद नही इस लिए मेरे इस गधे को आदमी बना दो। मास्टर जो समझ गये कि यह बावला है इसलिये उसे कह दिया कि अच्छा अपना गधा छोड़ जा और फलां दिन आ जाना। कुछ दिनों बाद कुम्हार आया और कहने लगा तो गधे का आदमी बना कर उसे नौकरी भी लगा दिया है और फलां जगह तहसीलदार है कुम्हार ने कहा कि उसका नाम क्या रखा है और मैं उसे कैसे बुलाऊं। उसने कहा कि तुम जाकर ऐसे कहना

अबे गधे के बच्चे (हंसी) (शोर विघ्न) उसने जाकर ऐसा ही किया और तहसीलदार ने उसे पागल समझा और लात मार दी। वह कुम्हार मास्टर जी के पास गया और कहने लगा कि आपका बहुत शुक्रिया कि आपने उसे आदमी बना दिया लेकिन उसकी लात मारने की आदत नही गई। (हंसी) तो मैं कहना चाहता हूं कि क्यों इनको कहते हो कि कुरप्शन कर दी यह तो इनकी आदत ही है लूटखसूट, कुरप्शन, रिश्वत (विघ्न)

गृह मंत्री (श्री के.एल. पोसवाल): वाह वाह क्या लिट्रेरी और पार्लियामैंटरी जबान इस्तेमाल हो रही है?

चौधरी जयसिंह राठी: यह जबान आपके लिये नही इस्तेमाल की है आप इससे मुबर्रा है आपको आदमी नही बनाया गया (हंसी) (विघ्न).....मैं तो ऐसा आदमी हूं कि मैंने ऐसे आदमी को, इस कैटेगरी के आदमी को चीफ मिनिस्टर बना कर बिठा दिया। (विघ्न) मैंने उसे बना कर बिठाया आप तो थे ही नही। मैंने उसका नाम प्रपोज किया था उस वक्त (स्वास्थ्य मंत्री की और से विघ्न) आपने भी दस्तखत करके दिये थे कि यह आदमी कुरप्ट है। (शोर)

उपाध्यक्षा: आप रैलेबेन्ट बोले ऐसी बाते न करें।

चौधरी जयसिंह राठी: मैं तो रैलेवैंट बोल रहा था लेकिन यह बीच मे आ जाते है और मुझे जवाब देना पड़ता है।

श्री के.एल. पोसवालः उपाध्यक्ष महोदया, आन ए प्वायंट आफ आर्डर, मेरा निवेदन यह है कि यह बोल ऐप्रोप्रिएशन बिल पर रहे है लेकिन बातें गधो की करते है। (शोर) अगर इन्होने किस्से कहानियां सुनानी हो तो गांव की चौपाल मे बैठ कर सुनाये। विधान सभा का समय कीमती है, इसलिये यहां कोई कीमती बात करे।

चौधरी जयसिंह राठीः बात यह है कि पागलों को समझाने के लिये इशारो मे ही बाते की जाती है इसलिये मै इशारतन बात कर रहा था (शोर) मेरा मतलब है कि अकलमंद आदमी पागलों को समझााने के लिये इशारतन ही बात करते है। तो मैं कहना चाहता हूं कि यहां कर्जे बांटने की बातें तो बहुत की जाती है लेकिन सारा कर्ज का पैसा अपने घरों मे ले जाया जा रहा है। फिर खुरशीद साहब ने बताया है कि दूसरा मैंटल हस्पताल हरियाणा मे बना रहे है.....।

श्री बनारसी दास गुप्ताः वह तेरे लिये बन रहा है। (हंसी) (विघ्न)

चौधरी जयसिंह राठीः मुझे अपनी बात कह लेने दो फिर आप अपनी कह देना क्यों बीच मे शोर मचा रहे हो। उस मैंटल हस्पताल मे 54 सीटें रखी है वे सब की सब आपने अपने लिये बुक करा ली है। (हंसी) (विघ्न)

उपाध्यक्षाः आपका समय हो गया आप बैठ जाये।

चौधरी जयसिंह राठीः तो मैं ज्यादा न कहता हुआ मैंबर साहबान से कहना चाहता हूं कि आप सोच समझ कर इस बिल पर वोट दे, नही तो आपके गले पर अपने हाथों छुरी चल जायेगी कईयो को टिकट नही मिलेगा, आधे वैसे रह जायेंगे और...

उपाध्यक्षाः यह बातें इसमे कहां से आ गई जो आप कह रहे है (हंसी)।

चौधरी जयसिंह राठीः इसमे इलैक्शन का खर्च मांग रखा है उस पर बोल रहा हूं।

उपाध्यक्षाः आपका समय खत्म हो गया है आप बैठ जाए।

चौधरी जयसिंह राठीः ठीक है मैं बैठ जाता हूं लेकिन मैं एक बात आप से कहना चहता हूं कि एक काम आप कर देना। असैम्बली तो जायेगी ही और इलैक्शन होंगे ही इसलिये ऐसे करना कि यह जो हरियाणा पर इतने वजीरो का बोझ है इसे हटा देना और इनी छुट्टी करा देना। (विघ्न) यह डिप्टी स्पीकर साहिबा आप ही कर सकती है क्योंकि आप पुरानी लैजिस्लेटर है। आपको बहुत तजुरूबा है, आप सारी ऊंच नीच जानती है इसलिये कोई न कोई ढंग निकाल कर इनकी छुट्टी करा देना यही मेरी आपसे दरखास्त है।

स्वास्थ्य मंत्री (श्री खुरशीद अहमद): डिप्टी स्पीकर साहिबा, अभी–अभी हमारे साथी राठी साहब ने कहा कि मैंटल

हस्पताल बना रहे है। मैं कहना चाहता हूं कि हमारे यहां कोई मैंटल हस्पताल नही बना रहा है, एक सायकेटरी वार्ड बन रहा है जिसमे साइकेट्रिक केसिज रखे जायेगे। जो इनकुरिजबल मैंटल केसिज है उनके लिये हम जेल मे जगह रखते है। तो उनके लिये वहां जगह रख लेंगे। (हंसी)

चौधरी जयसिंह राठी: ठीक है मैं तो जेल मे चला जाऊंगा आप वहां मैंटल हस्पताल मे चले जाना। (हंसी)

Deputy Speaker: Question is—

That the Haryana Appropriation (No.2) Bill be passed.

The motion was carried.

(Thumpig from the Treasury Benches)

PRIVATE MEMBERS RESULUTION RE-THE GRANT OF SUBSIDY TO COLLEGES IN RURAL IN THE STATE ON DELHI PATTERN

चौधरी रणबीर सिंह (किलोई): उपाध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि–

यह सभा राज्य सरकार से सिफारिश करती है कि राज्य के देहाती क्षेत्रों मे स्थापित हुए अथवा स्थापित हो रहे है कालेजों को कम से कम दिल्ली प्रसाशन के पैटर्न पर उपदान दिया जाये।

उपाध्यक्ष महोदया, हमारी सरकार बहुत सारी चीजों मे दूसरी प्रदेश सरकारों से आगे है बिजली मे आगे है, इसी तरह से सड़कों के काम मे आगे है और हमारा दावा है कि हर चीज मे हम आगे है। ठीक है अच्छा दावा है और हमे कोशिश करनी चाहिये कि कि शिक्षाा के क्षेत्र मे भी हम आगे रहे। उपाध्यक्ष महोदया, हमारे जो शिक्षा मंत्री जी है इनके निर्वाचन क्षेत्र मे एक कालेज खुला और वह कालेज एक देहात मे है। (विघ्न) शिक्षा मंत्री महोदय के निर्वाचन क्षेत्र मे हे मेरे मे नही हे और कुदरती तौर पर मंत्री महोदय का उससे बहुत संबंध होना चाहिए था जैसे औरो को है। लेकिन खैर मैं यह मानता हूं कि चौधरी माडू सिंह जी जो है वे सब के साथ यकसां बर्ताव करते होंगे। इस मामले मे पता नही इस कालेज के साथ ज्यादती हुई या दूसरे कालेज के साथ ज्यादती हुई। वह ज्यादती हो सकती है पैसे की कमी के कारण हुई हो या ज्यादती करने के इरादे से हुई हो, इस बात का मुझे पता नही । उपाध्यक्ष महोदया, बहुत से कालेज ऐसे है। जिनको यूनिवर्सिटी की तरफ से मान्यता मिली और ग्रांट्स दी गई। देहातों मे भी कई ऐसे कालेज है जिनको मान्यता मिल गई, कालेज चल गया, मकान बन गया लेकिन सहायता कम मिली ।

शिक्षा मंत्री जी ने बड़ी उदारता दिखाई थी और 10 हजार रूपया उस महा–विद्यालय को दिया था जिसके लिए हम उनके बड़े मश्कूर है। 10 हजार रूपया काफी रकम होती है लेकिन एक कालेज के लिए यह रकम बहुत कम है। उपाध्यक्ष महोदया, उस कालेज के बारे मे मैं ज्यादा नही कहना चाहता। खान साहब ने भी अपनी डिसक्रिशनरी ग्रांट मे से रूपया दिया। मैं खास तौर पर अम्बाला जिले के दोस्तों से माफी मांगता हूं क्योंकि अम्बाले जिले से हमारे मंत्रिमण्डल मे कोई मंत्री नही होता था, भगवान दयाल शर्मा के मंत्रिमण्डल मे खान साहब थे, इससे पहले नही थे। शायद खान साहब को गिला आये कि हमने पहले सहायता नही दी। अब जो खान साहब ने डिसक्रिशनरी ग्रांट दी उस के लिए मैं उनका शुक्रिया अदा करता हूं और प्रार्थना करता हूं कि और ज्यादा सहायता दे। खास तौर पर अम्बाला की काफी जरूरियात थी और उनकी जरूरियात को हमारे मंत्रियों ने पूरा नही किया, जिसके लिए मैं भी दोषी हूं, दूसरे भी दोषी है। उपाध्यक्ष महोदया, राष्ट्र पिता महात्मा गांधी ने हमे एक बात सिखाई कि सब के साथ एक जैसा व्यवहार किया जाए। हमारी सरकार ने इस आधार पर चलने का ऐलान किया था इसी लिए बिजली, सड़कें, हरियाणा के हर गांव मे गई, कोई भेदभाव नही किया गया। मैं मानता हूं कि चौधरी माडू सिंह जी भी यह ऐलान करेंगे कि जो कालेज है उन के अन्दर जो नीति अपनायेंगे वह सब के लिए यकंसा हो। अगर कोई शर्त रखेंगे तो सब के लिए एक जैसी रखेंगे । मकान बनाने का जहां तक ताल्लुक है, जो पिछड़े हुए लोग है जो महान नही

बना सकते उनको खास रियायत दे, बैकवर्ड एरिए के नाम पर मदद दे, इससे किसी को एतराज नही हो सकता। जो भी सिस्टम बनाएं उस मे सब के साथ यकसां बर्ताव हो। उपाध्यक्षा महोदया, यह बात सही हे कि दिल्ली के हर एक गांव मे हमसे पहले सड़क गई है, हम से पहले बिजली गई है, यह तथ्य प्रत्यक्ष है। यह उन्नति के लिए हुई है कि दिल्ली के हिन्दुस्तान की केन्द्रीय सराकर काफी अनुदान देती है क्योंकि दिल्ली हमारे देश का एक मध्य–स्थान है। अगर दिल्ली में कोई कमी रहती है तो उससे तमाम देश की इज्जत और बेइज्जती का सवाल होता है। वहां तरक्की होनी चाहिए लेकिन यह बात सही है कि हमारा हरियाणा प्रदेश दिलली प्रदेश को पीने का पानी देता है। उन के लिए पीने का पानी और नहरी पानी हमारे प्रदेश से जाता है। जब दिल्ली वाले हरियाणा से पानी लेते है तो दिल्ली को, यानील देनदार को उतना अनुदान देना चाहिए जितना कि लिया है। कम से कम बराबर अनुदान तो मिलना ही चाहिए। मैं मानता हूं कि सरकार आज इस बात का ऐलान करेगी कि सब कालेजो के साथ यकसां सलूक होगा और दिल्ली या किसी दूसरे प्रदेश के मुकाबले मे ज्यादा पैसा दिया जायेगा। उपाध्यक्षा महोदया, हमने जो अभी डिटेल्ड बजट पास किया है, वह मेरे पास नही था। 1971–72 का बजट नही था लेकिन 1972–73 का बजट था। 1972–73 के बजट मे कालेजिज को अनुदान देने के लिए 9 लाख 70 हजार रूपया रखा है। अगर हो सका तो ज्यादा भी दिया जाएगा, किसी मद मे

बचत करके या किसी और तरीके से। मैं वित्त मंत्री महोदया से प्रार्थना करूंगा कि अगर वे और ज्यादा पैसा निकाल सके तो.....

मुख्य मंत्री (श्री बंसी लाल): आप कहीं मुख्य मंत्री महोदया तो हनी कह गये.....(हंसी)

चौधरी रणबीर सिंह: वित्त मंत्री महोदया कहा है। अगर वित्त मंत्री महोदया पैसे को इधर उधर से बचाकर उस मे ज्यादा अनुदान दे दे तो बहुत अच्छा होगा। मुख्य मंत्री जी प्रस्ताव के वक्त हाउस मे आये है, मुझे इस बात की खुशी है और बड़ा यकीन है कि जैसे ये अन्य मामलों मे बड़े हौंसले के साथ ऐलान करते है वैसे ही इसके लिए भी बड़े हौंसले के साथ ऐलान करेंगे। जैसे इन्होने कहा है कि कृषि विश्वविद्यालय को ईस्ट एशियन कंट्रीज मे सबसे बढ़िया बनाना चाहते है, बड़ी अच्छी बात है, अगर हमारा विश्वविद्यालय संसार मे सबसे अच्छा बन सके तो सौभाग्य की बात है। इसके साथ ही साथ हमारे कालेजिज देश के दूसरे सूबों के कालेजिज के मुकाबले मे आगे हो, हय उनकी ख्वाहिश हो सकती है लेकिन इस ख्वाहिश को पूरा करने के लिए रास्ते मे कुछ मजबूरियां भी होती है पैसा खर्चने के बारे मे। मुख्य मंत्री जी अपने सारे मन्त्रिमण्डल को बुलाकर विचार करें कि जहां से भी पैसा बचा सकते है, बचाया जाए और कालेजिज को ज्यादा से ज्यादा अनुदान दे और दूसरे प्रदेशो के मुकाबले मे आगे निकलने का हौंसला दिखाएं ताकि हरियाणा प्रगति के पथ पर अग्रसर हो सके।

Deputy Speaker: Motion moved—

That this assembly recommends to theState Goverment to grant subsidy to the Colleges set up or beings set up in the State at least on the pattern of Delhi Administration.

चौधरी हरद्वारी लाल (बहादुरगढ़): डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं इस बात की पुरजोर हिमायत करता हूं कि देहातों मे जो तालीम के अदारे है उन को गवर्नमैंट निहायत फराखदिली के साथ माली इमदाद दें अगर देहाती आबादी को शिक्षा के मामले मे शहरी आबादी की सतह पर लाना है तो गवर्नमैंट के लिए यह जरूरी है कि देहाती तालीमी अदारो मे खास दिलचस्पी ले। लेकिन जिन शब्दों मे यह प्रस्ताव हाउस के सामने आया है उन से काई साथ मांग जाहिर नही होती क्योंकि रैजाल्युशन मे साफ लिखा है—at least on the Pettern of Delhi Administration. पर सबसिडी दी जाए। दिल्ली प्रशासन का तो कोई पैटर्न ही नही, देहली प्रशासन किसी को कोई ग्रांट नही देती। कुछ कालेजिज ऐसे है जो यहां है प्राईवेट कालेजिज दो किस्म के है कुछ ऐफिलिएटड है कुछ कांस्टीच्युएंटस है। हम देहाती कालेजिज का क्या बेसिज चाहते है, इसके बारे मे रैजोल्युशन मे मे कोई बात साफ नही है। वहां कई किस्म की चीजे है जिन के लिए अलग—अलग किस्म की ग्रांट्स दी जाती है । कालेज बिल्डिंग की ग्रांट के लिए कुछ दूसरे बेसिंज है, होस्टल की बिल्डिंग के लिए कुछ दूसरे बेसिज है। इसलिए हमको सारी चीजे देखनी पड़ेगी। इस शक्ल मे इस

रैजाल्युशन पर राय लेना बड़ा गलत होगा जब तक आप हाउस के सामने सही बेसिज न रखे। सही बेसिज के बिना कोई मांग नही हो सकती। इसके लिए मैं एक तजवीज करूंगा कि इस मामले के लिए एक कमेटी बना दी जाएं यह कमेटी ग्रांटस के सिलसिले मे भी विचार करे और उसके साथ ही साथ गवर्नमैंट यह देखे कि किस पैमाने पर ग्रांटस दी जा सकती है। **(इस समय सभापतियों की सूची मे से एक सदस्य चौधरी रणबीर सिंह पदासीन हुए)** अगर गवर्नमैंट उसी शक्ल पर, उसी पैमाने पर ग्रांट दे जिस पैमाने पर दिल्ली के कालिजिज को मिलती है तो फिर देखने वाली बात यह है कि शरायत क्या रखी जाये। यह बड़ी जरूरी चीज है। जैसे टीचर्ज की बात है, उनके ग्रेडज का भी देखना पड़ेगा, उनकी अच्छाइयों, बुराइयां और सजाएं, ये सारी चीजें देखनी पड़ेगी। आखिर गवर्नमैंट का उसमे हाथ होगा। इसके अलावा कंस्ट्रक्शन का काम है। गवर्नमैंट तो दे दे पांच लाख किसी कालेज को और कंस्ट्रक्शन एजेन्सी अगर ठीक नही है तो क्या होगा? मुझे मालूम है एक कालेज का । वहां कंस्ट्रक्शन का काम ऐसे आदमी को दे रखा है जिसके खिलाफ गबन के कई केसिज चल रहे है, दिल्ली मे चल रहे है और वह रोहतक जिले मे ही एक कंस्ट्रक्शन का इंचार्ज है और भी कंडीशन्ज होगी साथ–साथ। उन सब पर उस कमेटी की तजबीजो के मुताबिक गवर्नमैंट विचार करके जहां फराखदिली से इमदाद देने का ऐलान करे वहां उन कंडीशन्ज का भी ऐलान करे जिनकी पाबंदी मुख्तलिफ ऐजुकेशनल इंस्टिच्युशन्ज की करनी पड़ेगी। कमेटी मुकर्रर हो या न हो क्योंकि पता नही

चेयरमैन साहब, इस कमेटी को बनाने का स्पीकर साहब का दायरा है या मुख्य मंत्री जी बनाना चाहेंगे। (व्यवधान) हाउस की कमेटी तो स्पीकर साहब बना सकते है, चीफ मिनिस्टर साहब बना दे तो इससे अच्छी बात नही होगी। उसमे सब किस्म के लोग हों। मैं तो न स्पीकर साहब को मंजूर होता हूं और न चीफ मिनिस्टर साहब को लेकिन फिर भी अगर मेरी राय की जरूरत हो तो उस कमेटी मे मैं भी आने को तैयार हूं।

श्री बनारसी दास गुप्ताः लिख कर राय दे देना।

चौधरी हरद्वारी लालः वह भी दे दूंगा लेकिन पढ़ेगा कौन ? (हंसी) कमेटी हो या न हो, चेयरमैन साहब, मैं एक तजवीज जरूर इस सिलसिले मे आपके सामने रखूंगा। इस प्रस्ताव को पेश करते हुए आपने भी उस चीज पर जोर दिया लेकिन मे उस पर और भी ज्यादा जोर देना चहाता हूं। जो भी इमदाद दी जाए, चाहे मौजूदा कायदो के तहत और चाहे कोई नए कायदे बनाए जाएं, वह किसी नीति, किसी कायदे के तहत होनी चाहिए। आपने बड़ा सही फरमाया कि उसमे कोई पोलिटिकल कंसिड्रेशन या पर्सनल कंसिड्रेशन नही होना चाहिए। यह जनता की जरूरत का सवाल है। इस पर ज्यादा जोर इस वास्ते दे रहा हूं क्योंकि अब तक जो देखा गया है उसके मुताबिक यहां कोई बराबर की चीज हा नही रही है। रोहतक जिले का भी कोई कालेज वहां बन रहा है। कुछ ऐसे कालेज है, उनमे चाहे जो कुछ हो रहा है गवर्नमैंट रूपया दे देती है। गवर्नमैंट को पता नही है कि किस

तरह की कंस्ट्रक्शन होगी, ऐस्टिमेट क्या है, प्लांज क्या है, जो रूपया दिया जाता है वह कैसे खर्च होगा। पता है तो कोई मेरा ख्याल है कायदे के मुताबिक काम नही हा रहा है। वैसे तो मुख्य मंत्री जी है, शिक्षा मंत्री जी है जो रोहतक से ही संबंध रखते है, वे रोहतक के सब कालेजों को जानते होंगे कि उन कालेजों के अंदर किस तरह क्या सिलसिला चल रहा है। यह जरूरी है कि हम अपनी सहूलियत के लिए या हमारा अगर इरादा किसी कालेज को चलाने का हो तो उसको रूपया दें लेकिन यह क्या जरूरी है कि यही गवर्नमैंट हमेशा रहे। काई कायदा ऐसा बनना चाहिए कि अगर रूपया दे दे तो अपने पास साथ ही साथ आख्तियार ले कि वह रूपया सही तरीके से इस्तेमाल हो।

चेयरमैन साहब, एक सोसायटी हैं मुझे पता नही वह कहां की है। दो–तीन दिन हुए, मुझे किसी ने बताया था। शायद रोहतक की है या हिसार की है, मैंने तवज्जुह नही दी, उन्होने कहा कि जब इस प्रांत के अन्दर कोयले की सख्त कमी थी, इतनी कमी थी कि कोई कहता दो हजार रूपये वैगन ली है, कोई कहता है ब्लैक मे लिया है, किसी एक ऐजुकेशनल सोसायटी ने दर्जनो गाड़ियां ले ली। कालेज के लिए ली होंगी या स्कूल के लिए ली होंगी, मुझे कोई पता नही कोई ऐजुकेशनल सोसायटी का नाम भी इन्होने बतलाया था।

श्री बनारसी दास गुप्ताः याद नही आपको?

चौधरी हरद्वारी लालः याद कम है। (हंसी)... आखिर सिविल सप्लाई के मंत्री है, मुख्य मंत्री जी है, आप भी कुछ मंत्री के बराबर के है । याद आप भी कुछ रखा करिएगा। आपने तहकीकात भी की होगी। पीछे जैसे कोयले का बड़ा शोर हुआ । चेयरमैन साहब रोहतक जिले के अंदर बड़ा भारी शोर है।

श्री सभापतिः आप किसी के बहकावे पर ने बोले।

चौधरी हरद्वारी लालः आपने ही बहकाया था और किसी ने नही। (हंसी) इसमे कोई बहकाने की बात नही है, चेयरमैन साहब। मेरा कहने का मतलब तो यह है कि अगर आप रूपया मांगते है, आपने बहुत अच्छी तजवीज पेश की है, वह तो ठीक है लेकिन एक कमेटी इन सारी चीजों को देखे.....

श्री सभापतिः मेरा मतलब सूचना से है। आपकी सूचना सही है या गलत है, मेरा मतलब उससे था।

चौधरी हरद्वारी लालः मैं साथ नही था जब वह कोयला आया ओर बेचा गया। मैं तो यह दरख्वास्त कंरूगा मुख्य मंत्री जी से और सिविल सप्लाई के मंत्री से कि अगर इसके अन्दर कोई सदाकत है तो इस चीज को सबके सामने रखा जाए। किसी रियायत से ली हुई चीज को अगर बेचा तरीके से फरोख्त किया जाता है, चाहे वह मुनाफा भी संस्था मे जाता है, तो भी वह अच्छी बात नही है। इसी वास्ते मैं यह कह कर रहा था कि जो कुछ भी हो चाहे वह इमदाद की शक्ल मे आप देते हो वह बिल्कुल यकसां

तरीके पर सबको दिया जाना चाहिए और एक ही नीति, एक ही कायदा सब कालेजो पर एप्लाई करनाचाहिएं ऐसी खराब हालत हो गई है प्रान्त के अन्दर, मजबूरन मुझे कहनापड़ता है और बाहर भी चौधरी बंसी लाल जी से मैं कहता रहता हूं कि किसी तरीके से ऐसा ढंग बनाए जिससे पालिटिकल विक्टेमाईजेशन न हो। देख यह जाता है कि सच्ची बात छुपी रह जाती है और झूठी बात आगे निकल जाती है। एक कालेज मैंने भी शुरू किया था मगर कभी ये मुझे पैटीशन मे फंसा देते है और कभी इलैक्शन मे फंसा देते है, वह बीच मे ही पड़ा रहता है। लोग इतने परेशान है कि वे कहते हे कि यदि किसी तरह काम नही चलता तो बंसी लाल जी की खुशामद कर लो। मैंने बड़ी मुश्किल से उनसे यह कह कर पीछा छुड़ाया कि ऐसा करने से चौधरी चांद राम की भी मिट्टी खराब हुई है, अगर मैं भी ऐसा करूंगा तो मेरा पता नही क्या होगा। (हंसी) बड़ी परेशानी के साथ उनको समझाया है।

चौधरी चांद रामः मैंने चीफ मिनिस्टर से कभी बात नही की । इन्होने ही उनके कारनामें बहादुरगढ़ के अड्डे पर बतलाए होंगे।

चौधरी हरद्वारी लालः इसका इस बात से कोई ताल्लुक नही है। हमारी पब्लिक लाईफ मे इस किस्म की तलखी, बिटरनैस जो कई आदमी पैदा करते है वह मुनासिब नही। आपस मे कोई न बार करे? वे भी हमसे क्यों बात न करें और हम उनसे क्यों बात न करें। मैंने परसों ही चीफ मिनिस्टर साहब को मुबारिकबाद दी है

कि अब एक बात अच्छी हो गई है वह यह कि आपको बातचीत करने का ढंग आ गया है। (हंसी)

श्री सभापतिः बातचीत करना आ गया का क्या मतलब?

चौधरी हरद्वारी लालः मतलब यह कि पहले बातचीत करने का ढंग नही था। जैसे मैं नमस्ते करूं या चौधरी चांद राम करे तो मुंह फेर लेना, कभी इधर को मुहं फेर लेना और कभी उधर को मुहं फेर लेना। अब वे पहले नमस्ते करते है हम से। यह अच्छी बात है। मैं तो खुश हूं इस बात से।

श्री सभापतिः विद्यालयों पर आंए तो अच्छा है, नमस्ते पर जाने दो।

चौधरी हरद्वारी लालः मैं तो चेयरमैन साहब और कोई खास कहने वाला नही हूं। मैं आपकी तजवीज के मंशा की पुरजोर हिमायत करूंगा लेकिन यह बात जरूर है कि जिस ढंग से यह तजबीज रखी गयी है इसमे कुछ तबदीली करने की जरूरत है। इसके बारे मे मै ज्यादा नही कह सकता हूं क्योंकि कोई लिट्रेचर वगैरह डिस्ट्रिब्यूट नही हुआ। मैंने एक किताब डाक्टर मंगलसैन जी से ली थी उस किसाब से मैंने थोड़ी बातें देखी है कि दिल्ली के अन्दर क्या बेसिज है, यह फैसला आपने करना है कि उसके क्या बेसिज है उन बेसिज पर क्या इमदाद और रियायत देना चाहते है। इन सब चीजों का फैसला करने के लिए एक कमेटी मुकर्रर की जाये। इसके बाद जो भी कमेटी की तजवीह होगी उन तजवीह को

अगर गवर्नमैंट मानती है तो फिर बिना रो रयायत के, वगैर किसी डर के, वगैर किसी पौलिटिकल विक्टेमाईजेशन के, वगैर किसी पर्सनल कंसिड्रेशन के उन इंस्टिच्यूशन्ज को इमदाद दी जाये।

श्री बनारसी दास गुप्ता (भिवानी): सभापति महोदय आपने या हमारे और कुछ सम्मानित सदस्यों ने जो प्रस्ताव रखा है, मैं समझता हूं कि बड़ी अच्छी भावना से प्रेरित हो कर वह रखा गया है। इस बात मे मुझे भी कोई शक नही है कि संत हरद्वारी लाल जी ने प्रस्तावक की मंशा की भावना की जो सराहना की है वह ठीक है। वास्तव मे यह काम सराहना का है और शिक्षा के प्रसार की जिम्मेदारी अपने कंधो पर ले कर करती है तो वह प्रदेश के और राष्ट्र के लिए बड़ा उपयोगी है। इस बात मे भी कोई संदेह नही है कि देहात मे उच्च शिक्षा के प्रसार की अभी बहुत आवश्यकता है। मैं समझता हूं कि संभवतः प्रत्येक गांव मे प्राइमरी स्कूल खोल दिये गये है। सरकार द्वारा बहुत से स्कूलो को अपग्रेड किया किया जा रहा है। प्राइमरी स्कूल्ज को मिडल और मि3डल को हाई स्कूल काफी ग्रामों मे अपग्रेड किया जा रहा है। आज का जमाना बड़ी तेजी के साथ आगे बढ़ रहा है। एक समय ऐसा भी था जब विद्यार्थियों के अभाव के कारण सरकार को ग्रामीण क्षेत्रों मे स्कूल बन्द करने पड़ते थे लेकिन आज ऐसा समय आ गया है कि चाहे स्कूल के कितने ही विशाल भवन बनाये उनमे भी विद्यार्थियो के अभाव के लिए स्थान की कमी ही रहती है। जब जितने बड़े–बड़े गांव है वहां पर या पांच दा गांवों के बीच

केन्द्रीय स्थान पर बच्चो की उच्च शिक्षा के लिए ऐसी शिक्षण संस्थाओं की बहुत आवश्यकता है। ऐसी संस्थाएं तभी प्रोत्साहित हो सकती है जब सरकार उनको पैट्रोनाइज करे या संरक्षण दे और उनको पूरी तरह से वार्षिक सहायता प्रदान करे। इस प्रस्ताव मे कहा गया है कि दिल्ली प्रशासन के पैट्रन पर ही प्रबंध करे। ऐसी संस्थाओं की मदद करने के लिए मुझें पतानही कि दिल्ली ऐडमिनिस्ट्रेशन का क्या पैट्रन है ? संत हरद्वारी लाल जी ने भी यह बतलाया है कि वहां के प्रशासन का कोई पैट्रन है ही नही, अगर है तो कैसा है मुझे ज्ञात नही है। जिन शब्दों मे यह प्रस्ताव सदन मे पेश किया गया है, इन शब्दो के साथ इसे पास करना उचित नही है। अभी संत हरद्वारी लाल जी कह रहे थे कि सरकार कोई कमेटी बनाये या अपनी किसी एजेंसी के द्वारा इसकी पूरी तरह से जांच कराये और कोई अच्छे नियम बनाये। मेरा विचार है कि दिल्ली के कालेजो को जो सहायता मिलती है उससे भी अच्छे नियम हमारे यहां बनाये जा सकते है। हरियाणा मे भी कोई ऐसा तरीका या पैट्रन बनाना चाहिए जिससे ऐसी संस्थाओं की पूर्ण रूप से सहायता हो सके और इस नेक काम मे हमारे देहात के क्षेत्र के लोग अपना योगदान दे सकें। यह बात भी दुरूस्त है जैसा कि हमारे पूर्ववक्ता ने अपने भाषण मे बतलाया है कि कुछ लागो ने कालेजो के नाम से कुछ ऐसी संस्थायें बना दी है जिन के नाम से वे पैसा इकट्ठा करते है और उसका दुरूपयोग होता है। मैं किसी का नाम नही लेना चाहता लेकिन कुछ संस्थाये ऐसी है जिनकी मुझे व्यक्तिगत रूप से जानकारी है। उन्होने कालेज और संस्थाओं

की आड़ मे अपनी दूकान चलाने का प्रबंध किया हुआ है। इन सब बातो की जांच करने की बड़ी भारी आवश्यकता है।

सरकार आपना काई पैट्रन बनाये, ऐसा कोई तरीका अख्तियार करे जिससे ऐसी संस्थाओं की सहायता हो। सरकार का यह भी कर्तव्य है कि वह सब से पहले यह देखे कि वह संस्था कैसी है जैनबिन है या कोई आदमी उसकी आड़ मे अपना स्वार्थ तो पूरा नही करता है। कई संस्थाओं मे ऐसा घपला होता रहता है। शायद सरकार के नोटिस मे भी हो और हमारे माननीय सदस्यों की जानकारी मे भी हो। इसलिए मेरा निवेदन यह है कि पहले इस बात की जांच की जाये कि वे ऐसी संस्थायें कैसे चलती है, उनका संरक्षण कैसा है, उनकी प्रबंधकारिणी समिति कैसी है, किस प्रकार का काम करती है और किस ढंग से काम करती है। उसके बाद यदि उस संस्था को ठीक पाया जाये तो दिल खोल कर पूर्ण रूप से सहायता दी जाये। मैं इन शब्दों के साथ इस प्रस्ताव को हार्दिक स्वागत करता हूं और यह प्रस्ताव तो प्रस्तावक वापिस ले लें और सरकार अपने ढंग की कोई कमेटी बनाये या किसी और तरीके से पूरी जांच किये जाने के बाद ही उनको सहायता दी जानी चाहिए। हमे कोई तरीका अपनाना चाहिए जिससे हमारा मकसद भी पूरा हो और उन संस्थाओं को भी लाभ पहुंच सके।

श्री मंगल सैन (रोहतक): सभापति महोदय, हम उन सभी साथियों के बड़े ऋणी है जिन्होने सदन मे इस प्रस्ताव को

प्रस्तुत किया है। मेरे से पहले जिन दो माननीय सदस्यों ने अपने विचार प्रकट किया है उनको मैंने बड़े गौर से सुना है, मैं भी उनकी विचारधारा का समर्थन करने के लिए खड़ा हुआ हूं और अपने दल की तरफ से यह बात कह देना चाहता हूं कि आज जब कि चारो ओर देश मे और प्रदेश मे शिक्षा का प्रचार और प्रसार हो रहा है, आज प्रत्येक माता–पिता के हृदय मे यह उमंग उठ रही है कि मेरा लड़का या लड़की उच्चतम शिक्षा प्राप्त करे। ज्ञान–विज्ञान की सारी बातें सीख कर अच्छा काबिल बने और जीवन के क्षेत्र मे सफर हो।

सभापति महोदय आप जानते है कि शिक्षा का क्षेत्र इतना विशाल है कि उसको हर प्रकार से पूरा नही कर सकते है। आज हमारे प्रदेश मे भी कई संगठनों ने महाविद्यालयो को चलाने के प्रयास शुरू किये हुए है। आजादी के बाद कई संस्थायें खोली गयी। उनमे कुछ कमियां भी रही है। ये संस्थाये उन लोगों ने खोली जो जो स्वाधीनता के संग्राम मे अग्रणी रहे थे।उन संस्थाओं ने कई लोग हमारे देश मे ऐसे पैदा किये जिनसे प्रदेश का भला हुआ । उन महाविद्यालयों की वजह से ही उनमे राष्ट्रीय भावना उज्जवल हुई। मेरा यही निवेदन है कि अब यह महाविद्यालय जिलों के क्षेत्र तक ही सीमित नही रहने चाहिए बल्कि देहाती क्षेत्रों मे भी खुलने चाहिए। चेयरमैन साहब, आपने यह बात बजा तौर कही है कि ग्रामीण क्षेत्रों मे जो कालेज बने हुए है या बनने जा रहे है उनको अनुदान मिलना चाहिए। प्रस्तावमे जोड़ने के लिये, मैं समय

पर तो संशोधन लिखकर नही भेज संका किन्तु अगर आप मेरा मौखिक संशोधन स्वीकार कर ले तो बड़ी कृपा होगी। कई नगरो की म्यूनिसिपल लिमिट्स मे से नये–नये कालेज बन रहे है, जिनकी वही स्थिति है जो ग्रामीण क्षेत्रों मे उभरकर आ रहे नये कालेजो की है। चेयरमैन साहब, इस प्रस्ताव मे आपने यह बात कही है कि जो कालेजिज बन रहे है, नकी दिल्ली के तरीके से सहायता की जाये। संत जी ने जो पुस्तिका मेरे से ली थी, वास्तव मे वह पुस्तिका मैंने चौधरी माडू सिंह जी से मंगवाई थी। उसमे जो बाते लिखी हुई है, वह बहुत सारांश यानी ब्रीफ मे ही लिखी हुई है। जल्दी–जल्दी मे हम उसको पढ़कर ग्रैस्प नही कर सके। लेकिन जो कुछ पता चला है वह यह है कि मोटे तौर पर कालेज का जितना ग्रास डैफिसिट होता है, उसका 90 प्रतिशन कम्पनसेशन सरकार देती है। इसके आगे डिटेल्ज मे दिया हुआ है कि जो प्राध्यापकों का वेतन है या प्रशिक्षण के अतिरिक्त जो व्यय होता है, उसके ऊपर इतने प्रतिशत सरकार की ओर से अनुदान के रूप मे दिया जाता है। यह सारी डिटेल्ज की बाते है। यहां तो मोटे तौर पर आपने बात की है कि दिल्ली के पैट्रन पर, शिक्षा को बल देने के लिये, शिक्षा के प्रसार के लिये, प्राइवेट इंस्टिच्युशनज को दिल खोल कर उदारता से पैसा दे ताकि प्रदेश मे किसी प्रकार से शिक्षा की कमी न रहे और उनमे अच्छे से अच्छे स्तर के प्रायापक यानी योग्य प्राध्यापक हो और छात्र–छात्राओं को पूरी सुविधाएं दी जा सकें सभापति जी, मुझे आपके माध्यम से यह बात कहनी होगी कि 21 मई, 1968 से जब से श्रीमान् बंसी लाल जी

मंख्य मंत्री बने है, कई ऐसी शिक्षण संस्थाएं है, जिनमे उन्होने हस्तक्षेप किया हैं जो इंस्टिच्यूशन्ज सरकार से कभी पेसा नही मांगते थे, इनकी दया पर नही थे और केवल यह चाहते है कि आप हमसे दूर बैठे रहे, हमसे दूर टले रहे, उनमे भी इन्होने राजनीतिक कारणों से हस्तक्षेप किया है कि साहब, यहां पर मेरे दल के आदमी का प्रभाव नही है इसलिये मेरा व्यक्ति वहां पर होना चाहिए। मैं इनको अच्छी तरह से समझता हूं। यह बड़ी घिनौनी बात है कि शिक्षा जो इतना पवित्र–पावन कार्य है जो अंधकार को दूर करने का महा प्रयास है, उसमे भी रजनीति का दखल हो और व्यक्तिगत स्वार्थपूर्ति की जाये।

एक बात सरकारी बैंचों से बोलते हुए श्रीमान बनारसी दास जी गुप्त ने कही कि वे कुछ ऐसे लोगो और संस्थाओं को जानते है, जहां गड़बड़ है। हम भी कई ऐसी संस्थाओं को जानते है। समाज के कई ऐसे लोग है जो इन्हे अपनी व्यक्तिगत स्वार्थपूर्ति के लिये प्रयोग करते है। मैं यह कहना चहाता हूं कि हमें इस बुराई से बचना चाहिए। सरकार को ऐसी ईवल मे पार्टीसिपेट नही करना चाहिए और इनवौल्व नही होना चाहिए। मैं आपके द्वारा यह कहना चाहूंगा कि अगर ये चाहे तो शिक्षा विभाग इस बात को विजुएलाईज करके इस बात की छानबीन करके अनुमान लगा ले कि किस महाविद्यालय को क्या चाहिए ? यह नही होना चाहिए कि एक सदस्य दल बदले और उसके क्षेत्र मे ये जाकर कह दे कि वहां ब्लाक समिति की ओर से, मार्किट कमेटी

की ओर से और डिसक्रिशनरी फंड से भी रूपया देदो और कालेज खड़ा कर दो। चेयरमैन साहब, ऐसा कनाकुरप्शन को बढ़ावा देने वाली बात है। यह एक ऐसी चीज है जो राजनीति मे नही होनी चाहिए। सभापति जी, मैं आपके द्वारा यह कहना चहूंगा कि जहां भी शिक्षण संस्थाएं या एजुकेशनल इंस्टियूशन्ज बनते है वहां जनता उन्हें अपने गाढ़े पसीने का पैसा लगाकर खड़ा करती है। गवर्नमैंट को उनका स्वागत करना चाहिए । प्रत्येक नागरिक को शिखा देना वास्तव मे सरकार का ही काम है। यदि सरकार के दायित्व और जिम्मेदारी के साथ–साथ जनता के कुछ रोशन दिमाग या जागरूक मन शिक्षण संस्थाएं चलाने का प्रयत्न करते है तो सरकार को उन्हे उदार चित्त और सहानुभूति के साथ अनुदान देना चाहिए। कालेज खड़ा करने वालो को सारी सुविधाएं देनी चाहिएं। यह बात न हो कि मांगने वाला कौन है या उस संस्था का प्रबंध करने वाला कौन है, यह देखा जाये । जैसे संत जी ने सुझाव दिया है, वैसे नियम बनाये जाये, कोई कमेटी बनायी जाये या विभाग की ओर से स्वयं कोई प्रबंध करे। ऐस फूल–प्रूफ नियम होने चाहिए कि मैनेजिंग मेटीज सरकार की मर्सी पर न रहे । ऐसा होना चाहिए कि जो नियमो को पूरा करेगा, उसको सहायता दी जायेगी। उसमे कोई पोलिटिकल कंसिड्रेशन नही रहना चाहिए। इन शब्दों के साथ इस संशोधन के लिये प्रार्थना करते हुए कि केवल ग्रामीण क्षेत्रों मे ही नही, नगरो मे भी जहां कालेज बने हुए है या बनने जा रहे है, उसको भी 90 प्रतिशत यानी दिल्ली के पैट्रन पर गवर्नमैंट को अनुदान देना चाहिए, इस रैजाल्यूशन की

भावना का मैं पूर्ण समर्थन करता हूं। यदि ऐसा करना अनुकूल न हो तो भाषा विशेषज्ञ बैठकर इसे दोबारा बना लें और प्रस्ताव को सही रूप दे दे। इतनी ही बात कहते हुए मैं अपना स्थान लेता हूं।

खाद्य व पूर्ति मंत्री (श्री राजेन्द्र सिंह): चेयरमैन साहब, इस सदन मे चौधरी हरद्वारी लाल जी ने एक मांग की है। कोई सोसाईटी, रोहतक जिले या हिसार जिले की जो एक एजुकेशन सोसायटी है, हालांकि हमारे रोहतक के अन्दर जहां पर कोयला इतनी मुश्किल से मिलता है और बहुत कमी है, इस कमी के बावजूद उस सोसायटी ने गवर्नमैंट से कोयला लिया और उसका नाजायज इस्तेमाल किया। चेयरमैन साहब मेरे पास इस सोसायटी के बारे मे कुछ शिकायते आयी थी और उसकी मैंने इन्कवायरी की है। इस सोसायटी का नाम है ''हरियाणा एजुकेशन सोसाइटी, दोजाना (बेरी)''। इस ने एक कालेज भी चला रखा हैं इसके प्रधान ने 26, अप्रैल 1969 को डी.एफ.सी. रोहतक से दरख्वास्त करके 60 लाख ईंटे उस कालेज के बनवाने के लिये रिजर्व करवायी। सारा रिकोर्ड दिखाने के बाद वह सोसायटी (या कालेज) यह साबित नही कर सकी कि उसे कहां खर्च किया गया।

कृषि मंत्री (श्री भजन लाल): उस सोसायटी के प्रधान कौन है? (इस समय उपाध्यक्षा पदासीन हुई)

श्री मंगल सैन: क्यों छोटी बात कर रहे हो? स्पीकर साहब का नाम लेना चाहते हो?

श्री राजेन्द्र सिंहः ब्रिगेडियर रण सिंह। डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं यह बता रहा था कि उस सोसायटी ने महकमे से 60 लाख इंटे रिजर्व करवायी लेकिन उसके खर्च करने के हिसाब–किताब का कोई रिकार्ड यह सोसायटी पेश नही कर सकी। 20 मई, 1969 को इस कोलेज की बुनियाद रखी गयी। हकीकत यह है कि कालेज की कंस्ट्रक्ष दिसम्बर 1970 के अन्दर जा कर शुरू हुई। इस सोसायटी की इन्क्वारी के दौरान हमे यह देखने को मिला कि 20 दिसम्बर, 1969 को इसने भट्ठा चलाना शुरू किया और बगैर लाइसेंस के जबकि ईस्ट पंजाब कंट्राल आफ ब्रिक सप्लाई एक्ट 1949 की धारा 3 के अंदर यह आर्डर्ज है कि जो इसका उल्लंघन करेगा या वायलेशन करेगा उस पर पैनलटी लगेगी। इस संबंध मे उसमे यह लिखा हुआ है किः–

"Penalties: If any person contravenes any other made unde Section 3 he shall be punishable with imprisonment for a term which may extend to 3 years. or with fine or with both and the order so provides any Court trying such contraction may direct that any property in respect of which the Court is satisfied that he order has been contravened or such part of it as the Court may deem fit shall be forfeited to His Majesty."

तो डिप्टी स्पीकर साहिबा, कन्ट्रावैन्श्न करने वालों के सिलसिले मे बाकायदा आर्डर्ज थे। आगे इन्क्वायरी करने के बाद हमे पता चला कि इनको 23 फरवरी, 1970 को लाइसेस मिलां इस सोसायटी के प्रैजीडैंट की रिक्वैस्ट पर कोलेज बनाने के लिए 140

वैगन कोयला स्पौन्सर किया और वह जो 1043 टन कोयला था वह सोसायटी के हिसाब मे नही गया, सोसायटी के हिसाब मे कहीं एन्टरनही है, यह कोयला बाहर के बाहर किसी दूसरे भट्ठे वाले को दिया गया। इसी तरीके इसे इन्होने 398 टन तथा 330 टन कोयला और लिया ं यह 398 टन कोयला इन्होने सांपले के रेलवे स्टेशन पर मंगवाया, 330 टन कोयला रोहतक के स्टेशन पर मंगवाया और पहले वाला 1043 टन कोयला गोहाना के स्टेशन पर मंगवाया।

चौधरी चांद रामः आन ए प्वायंट आफ आर्डर, यह जनरल ग्रांट्स के बारे मे तकरीर हो रही है या ये किसी एक कोलेज के बारे मे बोल रहे है? जो रैजोन्युशन था वह तो सब कोलेजिज को ग्रान्ट देने के बारे मे था।

उपाध्यक्षाः मेरा ख्याल है कि यह पूछा गया था कि कालेज बनाने के लिए ईंटे चाहिए।

चौधरी चांद रामः मुझे इससे मतलब नही हे लकिन मैं तो प्रोप्राईटी की बात कर रहा हूं। (व्यवधान)

श्री राजेन्द्र सिंहः डिप्टी स्पीकर साहिबा, यह जो 398 टन कोयला सांपले के रेलवे स्टेशन पर आया उसमे से 194 टन सोसायटी के हिसाब मे दिखाया गया। 204.2 टन कोयला जो बाकी रहा वह कागजो मे बिल्कुल नही दिखाया गया। इन्क्वायरी के दौरान एक सब से बड़ी चीज और नजर आई। एक रैक जिसमे

35 बौक्स होते है, सोसाइटी को स्पौनसर हुआ। जो बौक्स सोसायटी को स्पौनसर हुए वे रोहतक स्टेशन पर आएं 18 बौक्स तो इरीगेशन डिपार्टमैंट को दिए गए लेकिन बाकी जो कोयला था वह सारा सोसायटी के नाम था। इनमे से सिर्फ दो बौक्स सोसायटी के अपने भट्ठे पर गए और बाकी सात बौक्स और नौ फोरवीलर कहीं और भट्ठी वालो को दे दिए गए। इसी तरीके से हरियाणा एजुकेशन सोयासटी ने 700 टन कोयला अपने कागजात के अन्दर दिखाया । डिप्टी स्पीकर साहिबा, एक रजिस्टर होता है जिसमे यह दिखाना पड़ता है कि कितना कोयला आया, कितनी ईंटें बनी और कितनी डिसपोज आफ हुई। इस प्रकार का एक रजिस्टर मेनटेन नही करता उसको वही सजा होती है जो मैंने पहले पढ़कर सुनायी थी। डिप्टी स्पीकर साहिबा, आए साल भट्ठे के लाईसेंस को रिन्यु कराना पड़ता है और जब रिन्यु कराते है तो बाकायदा यह बताना पड़ता है कि कितना कोयला पड़ा हुआ है, कितनी ईंटें बनी, कितनी डिसपोज हुई और कितनी मौके पर पड़ी हुई है। इन्होने 1970–71 और 1971–72 मे अपने कागजातों मे 700 टन कोयला दिखाया लेकिन जब रिन्युवल के लिए दरख्वास्त आई तोउसमे कुल 487 टन कोयला दिखाया हुआ पाया गया। इसी तरह से इन्होने वहां पर भी रूल्ज का उल्लंघन किया। कोयले को गलत तौर पर मिसयूज किया। डिप्टी स्पीकर साहिबा, जितना कोयला इस सोसायटी को मिला उससे 28 लाख ईंटें बननी चाहिए थी और इन्होने 19 लाख ईंटों का हिसाब दिया चाहे व मौके पर मिली या कालेज की बिल्डिंग मे लगी। इन्होने नौ लाख का कोई

हिसाब नही दिया जोकि रूल्ज के अनुसार इन्हे प्रोवाईड करना चाहिए था। डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं हाउस को यकीन दिलाना चाहता हूं कि जो चौधरी हरद्वारी लाल ने अब मांग की है, इस मांग से पहले ही यह शिकायत हमारे नोटिस मे आई थी और हम इन्क्वायरी कर रहे है और पूरा इन्साफ करेंगे। जो कानून का उल्लंघन करते है, जो गिल्टी है उनको जरूर सजा दिलाने की कोशिश करेंगे और उनके खिलाफ कानूनी कार्यवाही अवश्य होगी। डिप्टी स्पीकर साहिबा, यह तो था चौधरी हरद्वारी लाल की बात का जवाब अब मैं एक सैकिण्ड रैजोल्यूशन के ऊपर बोलना चाहता हूं।

चौधरी जय सिंह राठीः आन ए प्वायंट आफ आर्डर, इन्होंने अभी यह कहा है कि जो रैजोल्यूशन आया है अब मैं उस पर बोलूंगा। मैं पूछना चाहता हूं कि ये अब तक किस चीज पर बोल रहे थे?

Deputy Speaker: He was speaking on the Resolution.

चौधरी जय सिंह राठीः मैं यह पूछना चाहता हूं कि यह किस चीज पर बोल रहे थे.....

Deputy Speaker: I can ask this thing from him.

चौधरी जय सिंह राठीः वह तो अब इजाजत मांग रहे है.....

Deputy Speaker: He was just speaking on the Resolution.

Chaudhri Jai Singh Rathi: On a point of order, Madam, I want to know whether his speech (Hon. Minister's) for 20/25 minutes was on the resolution or on a Society.

Deputy Speaker: He was speaking on the Resolution.

Chaudhri Jai Singh Rathi: For this very reason I am on my legs again. He is now seeking your permission to speak on the Resolution (Noice).

Deputy Speaker: He will reply. The Hon. Minister should reply to your question. Mr. Rathi, please take your seat.

Chaudhri Jai Singh Rathi: I simply wanted your ruling and not the Minsiter's reply.

उपाध्यक्षा: अगर वह रैजोल्यूशन पर न बोलते तो मैं इजाजत न देती। He was speaking ont he resolution.

Chaudhri Jai Singh Rathi: Not at all. I rise on the point of Oder. He said that he wanted to speak on resolution.

उपाध्यक्षा: इसका मतलब यह नही है कि वे पहले रैजोल्यूशन पर नही बोले थे।

Chaudhri Jai Singh Rathi: His own admission is there. This is on record. Therefore I want your ruling.

Deputy Speaker: It is my ruling that he was speaking on the resolution.

चौधरी जयसिंह राठीः जो इन्होंने इजाजत मांगी मैंने तो उस के बारे मे कहा है।

Deputy Speaker: Not for permision. He meant that he wanted to speak more.

चौधरी जयसिंह राठीः इन्होने कहा था अब मैं रैजोल्यूशन पर बोलना चाहता हूं आप रिकार्ड से मालूम कर सकती है।

Deputy Speaker: I am on my legs. Please take your seat.

चौधरी जयसिंह राठीः मैं भी अपनी लैग्ज पर हूं। आपने तो धमकाना शुरू कर दिया है। प्वायंट आफ आर्डर पर कोई बात पूछना तो हमारा हक है।

Deputy Speaker: You cannot stand when I am on my legs.

चौधरी जयसिंह राठीः आप तो हमें ऐसे धमका रही है जैसे इन्होंने आपका कोई काम किया और उनसे आप काम लेना चाहती है। यह हमारा हक है और हम आपसे प्वांयट आफ आर्डर कह सकते है।

Deputy Speaker: You can ask, but now I am on my legs.

चौधरी जयसिंह राठीः हम तो एक असली बात पूछ रहे है।

Deputy Speaker: You should take your seat. I am on my legs.

Health Minister (Shri Khurshed Ahmed): He should be named (Interruptions and noise) He is violating the ruling of the Chair. (Chaudhri Jai Singh Rathi remained standing)

Deputy Speaker: You please take your seat and then I will reply to your point.

Chaudhri Jai Singh Rathi: I sit down now (At this stage Chaudhri Jai Singh Rathi resumed his seat) bit I can rise again.

Deputy Speaker: You cannot rise till I am on my legs. मैंने आपके प्वायंट आफ आर्डर का एक दफा नही कई बार जवाब दे दिया है कि वे रैजोल्यूशन पर बोल रहे थे। इसके बाद ऐसी कोई चीज नही रह जाती कि आप बोलें। It is my ruling. I am replying your point of Order and I will also ask from the hon. Minister to tell you that he was speaking on the resolution.

श्री राजेन्द्र सिंहः डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं अर्ज कर रहा था.....

चौधरी जयसिंह राठीः आन ए प्वायंट आफ आर्डर, मैडम। मैं आपकी रूलिंग चाहूंगा कि रैजोल्यूशन पढ़ लिया जाये

और पढ़ कर देख लिया जाये कि क्या उनमे कहीं कोई सोसायटी दर्ज है जिस पर ये बोल रहे थे?

Deputy Speaker: Please take your seat. I will reply.

चौधरी जयसिंह राठीः डिप्टी स्पीकर साहिबा, यूं धमका कर आप कहेंगे तो ऐसे बात नही चलेगी। आप रिकार्ड पढ़वा कर देख ले। उन्होने कहा है कि अब मैं रैजोल्यूशन पर बोलूंगा।

Deputy Speaker: Please take your seat.

Chaudhri Jai Singh Rathi: How can the Deputy Speaker on the Speaker force a Minister to reply? (Interruptions and noise)

Deputy Speaker: I want to ask from the Hon. Minsiter and I asked several times form the Minnster on what he was speaking.

श्री राजेन्द्र सिंहः डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं रैजोल्यूशन पर बोल रहा था और चौधरी हरद्वारी लाल जी ने जो मांग की थी उसका साथ साथ जवाब भी दे रहा था।

उपाध्यक्षाः मैं एक आब्जर्वेशन करती हूं। आप हरियाणा के अन्दर इस हाउस का डैकोरम बिल्कुल खत्म करना चाहते है इस चीज को मैं बर्दाश्त नही कर सकती। (ट्रैयरी बेंचिज की तरफ से प्रशंसा) अभी आनरेबल मैंबर मिस्टर राठी का सवाल था कि रैजोल्यूशन को पढ़ लिया जाये। यह मेरे पास है और मैंने ही मोशन मूव की थी। जब श्री राजेन्द्र सिंह जी बोलने के लिये खड़े

हुए तो उस समय मैं चेयर पर नही थी। जैसे इन्होने कहा उससे मैं कह सकती हूं कि जब संत जी बोल रहे थे तो उन्होने कालेज के लिये कोयले और ईंटों का जिक्र किया था उसके जवाब मे राजेन्द्र सिंह जी ने बतलाया कि कालेज के लिये इतनी ईंटें दी गई और इतना कोयला दिया गया । आप चाहते है कि मैं सारा रिकार्ड निकलवाकर पढ़वाऊं यह मेरे लिये संभव नही है। अगर इन्होंने कोई गल्त चीज कही है तो कोई भी आनरेबल मैंबर खड़ा होकर कह सकता है कि इन्होने गल्त चीज कही है, मैं उसको टाईम देने के लिये तैयार हूं। मिस्टर राठी ने कहा कि उन्होंने (मिनिस्टर ने) कहा कि 'अब मैं रैजौल्यूशन पर बोलना चाहता हूं बजाय इसके कि व यह कहे कि मैं रैलाल्यूशन पर और ज्यादा बोलना चाहता हूं' बजाय इसके कि वह यह कहे कि मैं रैजोल्यूशन पर और ज्यादा बोलना चाहता हूं। इन्होंने 'और ज्यादा' लफ्ज को छिपा दिया। वे रैजाल्यूशन पर ही बोल रहे थे और अगर वे रैजोल्यूशन पर न बोल रहे होते तो मैं इसकी इजाजत ही न देती। मैंने तीन–चार दफा आपके प्वांयट आफ आर्डर का जवाब दिया। इसके बाद भी अगर आपकी तसल्ली न हो तो दूसरी बात है। हाउस का डैकोरम रखने के लिए मैं आनरेबल मैंबर को रिक्वैस्ट करूंगी कि वे इस चीज को ज्यादा तूल न दे।

चौधरी चांद रामः डिप्टी स्पीकर साहिबा, अगर आप देखें, रैजोल्यूशन जी है इसमे कहीं भी किसी सोसायटी का जिक्र नही है। चौधरी हरद्वारी लाल ने जिक्र किया था पता नही यह

सोसायटी रोहतक की है या हिसार की। जितनी जल्दी यह कागजात तैयार हुए है उससे तो यह लगता है कि यह सब मिली भगत है। मैं आपसे प्रार्थना करूंगा कि हमारी स्पीचिज आदि के बारे मे कायदे कानून बने हुए है और सही स्पीच वह होती है तो रैवेलेंट हो।

श्री बंसी लालः डिप्टी स्पीकर साहिबा, क्या एक आपरेबल मैंबर को तकरीर करने का हक है जब कोई दूसरा आनरेबल मैंबर बोल रहा हो?

The Minster should be allowed to continue his speech. If the Hon. Member does not allow a Minister to proceed with his speech, then you have other remedies available with you.

चौधरी चांद रामः मै तो डिप्टी स्पीकर साहिबा, आपकी इजाजत से ही एक सबमिशन कर रहा था। आपने कहा था कि हाउस का डैकोरम जयर मेनटेन करना चाहिये। उसके लिये कायदे कानून बने हुए है जिनके अनुसारएक मैंबर जो स्पीच करे उसमे वह इररैलेवेंट बात न करे और जो आदमी हाउस मे मौजूद न हो उसके बारे मे बात न करे। रैजोल्यूशन मे कही भी हरियाणा एजुकेशन सोसायटी का जिक्र नही है, पता नही इनको कैसे एकदम इल्म हो गया कि इस सोसायटी का जिक्र आयेगा। बाकी जो रूलिंग है वह ठीक है।

Deputy Speaker: Shri Rajinder Singh.

Chaudhri Jai Singh Rathi: On a point of Order, Madam.

Deputy Speaker: He also on a point of order.

श्री राजेन्द्र सिंहः आन ए प्वायंट आफ आर्डर, डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं कह रहा था कि जौ रैजोल्यूशन पेश हुआ था मैं उस पर बोल रहा था और बता रहा था कि क्या हालत है प्राईवे कालेजिज की और चौधरी हरद्वारी लाल जी ने जिस एजुकेशन सोसायटी को और इशारा किया था उसके बारे मे मैं बता रहा था। (विघ्न)

Chaudhri Jai Singh Rathi: Is he on a point of Order, Madam?

Deputy Speaker: He is continuing his speech.

Chaudhri Jai Singh Rathi: You said tht he was on a point of Order, and that is why I took my seat. But is that a point of Order?

Deputy Speaker: I thought that he was on a point of order. But he has told me that he is continuing his speech.

श्री मंगल सैनः डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं अपनी बात कह कर सारे इस विवाद को शांत कर दूंगा। आखिरकार इस प्रस्ताव पर इतना विवाद क्यों पैदा हुआ है ? संत जी ने यहां पर कहा कि वहां कोयलें का दुरूपयोग हुआ और राजेन्द्र सिंह जी ने कहा कि हां हुआ। तो इसके बाद अगर किसी को डिफैंड करना

था या एक्शन लेने की बात थी तो वह लेते रहते अब यहां पर उस बात को लम्बा करने की क्या जरूरत थी ?

चौधरी जयसिंह राठी: मिनिस्टर साहब ने कहा कि यह जवाब था चौधरी हरद्वारी लाल जी की बात का और अब मैं रैजोल्यूशन पर बोलना चाहता हूं।

I wan to know whether he intervened as a Minister or he is speaking as a Member on a private members resolution.

Deputy Sepeaker: He intervened as as Minister. (Interruptions)

Chaudhri Jai Singh Rathi: The right of reply wests with the mover of the Resolution and not with any Minister....

Deputy Speaker: He can speak and can also intervene as a Minsiter. He was firstly speaking as a Minister, intervening or speaking or replying to the point relating to his deprtment. He can also take part in the debated as a Minsiter and he is taking aprt in the debate.

Chaudhri Jai Singh Rathi: Again on a point of order, Madam.

डिप्टी स्पीकर साहिबा, यह रैजोल्यूशन एक प्राइवेट मैंबर का है। इसलिये जिस मैंबर ने इसको मूव किया है उसी को ही रिप्लाई का हक है।

No body else in between can come to reply for him. (Interruptions) He can make a speech. I fully agree that he is entitled to make a speech. But for replying the debate, the Minster does not come into the picture. Therefore, the private Member who has moved the resolution has the right to reply to the debate and his right is being denied. (Interruptions)

Deputy Speaker: He was not replying to the debate. He can intervence and reply to any point that is raised relating to this department. So, he can participate in te debate as a Minisiter and he was also intervening. He has also got the right, as a Minister, to reply to anything which comes relating to his department in the House.

Shri Rajinder Singh may please continue.

श्री राजेन्द्र सिंहः डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं बता रहा था कि प्राईवेट कालेज किस तरफ जा रहे है और क्या कुछ यह करते है और मैंने यह भी कहा था कि कानून के लिहाज से जो कुछ भीा हम कर सकते है वह कार्यवाही हम करेंगे और वह इन्साफ पर मबनी होगी। मैं बता रहा था कुछ कालेज जो हरियाणा मे अपने आप को सबसे बड़े प्राईवेट कालेज कहते है उनका क्या हाल है? उन मे एक इंडिविजुअल को सब से बड़े प्राईवेट कालेज कहते है उनका क्या हाल है? उनमें ऐ इंडिविजुअल का इंट्रेक्ट रहता है, इलैक्शन के इस्तेमाल के लिये प्रौफेसरों की तनख्वाहें काटी जाती है और वहां पर दाखले के वक्त कम्युनिलिज्म की पालिसी अख्त्यार की हाती है और किसी खास कम्युनिटी के लोगों को वहां पर दाखिल नही किया जाता। बाकी जहां तक पड़कियों का

ताल्लुक है वह क्योंकि उनकी अपनी कम्युनिटी की पूरी मिल नही सकती इसलिये मजबूरी से दूसरी कम्युनिटी वाली को दाखिल करते है वरना वहां कम्युनलिज्म और इंडिविज्युलिज्म चलता है। जहां तक प्राईवेट कालेजिज का ताल्लुक है जैसे ताल्लुक है जैसे चौधरी हरद्वारी लाल जी ने कहा उन का जो खर्चा है, उन के इनतजाम और देख भाल के प्रौस एण्ड कौंज क्या होंगे यह सब देख कर इस रैजोल्यूशन को लाना चाहिये था। बस मैं इतना कह कर आपका शुक्रिया अदा करता हूं।

चौधरी चांद राम (बबैन, अनुसूचित जाति): डिप्टी स्पीकर साहिबा, यह जो प्रस्ताव है यह तो बड़ा साधारण है लेकिन इस पर जितनी गर्मी पैदा हुई है वह एक तरह मुझे अनप्रैसिडैंटिड है। उन मजामीन का यहां पर जिक्र किया गया और बड़े मिले जुले ढंग से वह करवाया गया, जैसे मैंने अभी कहा था और मुझे मालूम है कि जिस मैंबर ने यह सवाल उठाया उनकी अभी अभी लौबी मे चीफ मिनिस्टर साहब से बात हुई थी। और इन्होने यहां पर आकर बड़े मासूमाना ढंग से कह दिया कि मुझे पता नही वह ऐजुकेशन सोसायटी हिसार की है या रोहतक की है और जनाब मिनिस्टर साहब ने फौरन ही कागजात वगैरह तैयार कर लिए जैसे कि रेडियो टैलीविजन के जरिए उन को तमाम डिटेल आ गई हो। यह सब कुछ उनकी मिली–जुली बात थी। खैर मैंने इस बात से क्या लेना है उनका यह इन्टरनल मामला है, उनकी कांग्रेस पार्टी की इन्टरनल बात है। लेकिन मैं इतना जरूरी कहूंगा कि जिस

ऐजुकशन सोसायटी की यह बात करते है उसके प्रधान हमारे स्पीकर ब्रिगेडियर रणसिंह रहे है और अब वह उसके प्रधान नही है। जब उस कालेज को ग्रांट नही मिली था तो उन्होंने प्रोटैस्ट के तौर पर इस्तीफा दे दिया था और इन्होने कहा था कि कालेज मेरी वजह से क्यों सफर करे। डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैंने उस कालेज को देखा है उस मे आज तक 30–35 लाख के लगभग ईंटें लग चुकी है, मुझें पता नही वह कहां से आई है।

श्री बनारसी दास गुप्ताः आप उसके मैंबर है क्या?

Shri Bansi Lal: Madam, Deputy Speaker, a lot of discussion has taken place on this resolution. Now ti should be wound up so that we can take up next business.

चौधरी चांद रामः डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं तो इस हक मे रहा हूं कि जो ऐजुकेशन है वह सारी सरकार होनी चाहिए क्योंकि मैं इस बात से सहमत हूं कि हमारी जो ऐजुकेशन है उस मे फिरकापरस्ती और दीगर जो ऐब आ जतो है वह नही होने चाहिए और हमारी तालीम का पैटर्न एक होना चाहिये। अब ऐसे है कि किसी कालेज का स्टैंडर्ड ऊंचा है और किसी का कम हैं तो जब ऐजुकेशन डिफ्रैंट लैवल की होगी तो उस से कम्पीटीशन मे जो पब्लिक सर्विस कमीशन मे या कहीं और होता है उस मे वे लोग सफर करते हैं जिनके कालेज का स्तर नीचा है। इसलिये अगर सारे गवर्नमैंट के कालेज खोलते है। चौधरी हरद्वारी लाल ने कहा कि छारा मे कालेज आज तक नही बना, वह तो खुद ही बता

गए है, अब मैं नही समझा सका कि मैंने उनको क्या प्रोवोकेशन दी थी। एक बात मैं कह सकता हूं और इसी के लिये मैं खड़ा हुआ हूं कि मैंने चीफ मिनिस्टर साहब के सामने न कभी सिर झुकाया है और न झुकाऊंगा न उन से इस बारे मे कभी बात की है और न इस बात के लिये उनके पास जाऊंगा.....

श्री बंसी लालः बात करने की कोशिश तो बहुत की यह बात सारा हाउस जानता है। (विघ्न)

चौधरी चांद रामः मेरे सामने इस वक्त संस्कृत का वह श्लोक है जिसका तर्जुमा हिन्दी मे यह है कि या तो सभा मे प्रवेश न करो और अगर प्रवेश करो तो असत्य न बोलो, झूठ न बोलो, अगर झूठ बोलोंगे तो पाप लगेगा, सत्य नहीं बोलोंगे तो पाप लगेगा। मैं आज भी यह कह सकता हूं और कसम खा कर कह सकता हूं कि मैं चीफ मिनिस्टर साहब के पास कभी नही गया हूं कि मुझे कांग्रेस मे शामिल कर लो और न ही मैंने किसी आदमी की मारफत इनको एप्रोच ही किया है कि वह आदमी मेरी इनसे इस बारे मे बात करा दे। हां एक दफा मेरी गल्ती कह लो मैं नैशनल–डे वाले दिन 15 अगस्त को.....

श्री राजेन्द्र सिंहः एक पब्लिक मीटिंग मे तो आपने कहा था कि मैं कांग्रेस मे आना चाहता हूं लेकिन चीफ मिनिस्टर साहब और सूबेदार प्रभू सिंह नही आने देते.....

चौधरी चांद रामः आपके तो पिता जी इलैक्शन मे कसम खते थे कि चांद राम इसकी मदद करो यह आपके साथ रहेगा.....(विघ्न)

Shri Bansi Lal: His time is over. Either I may be allowed to move clouser motion or you should stop him.

चौधरी चांद रामः इसी तरह मैं अर्ज करता हूं राडौ।र मे एक कालेज है (विघ्न और शोर) यह श्री जय प्रकाश जी ने बनाया। ऐसे ऐसे कालेज बहुत स्टेट मे है। मैं इस बात से सहमत हूं कि अगर सरकार किसी बात को करती है, ऐड देती है तो इसे पालिटिकल कंसीड्रेशन दसे नही देखना चाहिये और सरकार को इस बारे मे कोई नियम बना कर ग्रांटस दी चाहिये। जब एक बार वायदा कर दिया तो यह नही कि दूसरी बार न कर दीं मैं यह बात दावे के साथ कह सकता हूं कि एक बार मैं ऐग्रीकल्चर फार्म मे गया था तो मुझे बताया गया कि इस कालेज को ग्रांट नहीं मिली। मैंने उसी वक्त ऐलान कर दिया कि पचास हजार रूपये की ग्रांट दो महीने मे दे दी जाये। आज ईश्वर सिंह जी दूसरी पार्टी मे बैठे है और हम ने कभी ख्याल नही किया था कि हमारे साथ रहेंगे या दूसरी तरफ रहेंगे। तो मैं कहना चाहता हूं कि इसका एक ही तरीका है कि जिनयम बनाये जाये और उनके मुताबिल ग्रांटस दी जाये। जब तक कोई कालेज प्राईवेटली चलता हे तो उसकी इनकम सप्लीमेंट करने के लिये और खर्च मीट करने के लिये कोई तरीका निकाला जाये। फिर आप देखें दुजाना मे एक कालेज है।

मैं कहता हूं कि उसकी ऐसी बढ़ियां बिल्डिंग नहीं बन सकती जो उन्होंने बनाई .....(घंटी की आवाज) तो मैं अब ज्यादा न कहता हुआ इस प्रस्ताव की ताईद करता हूं और इस शर्त के साथ करता हूं कि सरकार वगैर किसी पक्षपात के इन कालेजों की मदद करे।

महंत गंगा सागर (झज्जर): डिप्टी स्पीकर साहिबा, प्राईवेट मैंबर्ज की तरफ से जो प्रस्ताव आया है जिसमे मांग की गई है कि देहली ऐडमिनिस्ट्रेशन के पैटर्न के ऊपर प्राईवेट कालेजो को ऐड दी जाये इस पर काफी डिस्कशन हो चुकी और मेरा इसमे सुझाव यह है गवर्नमैंट से कि यह जो देहली पैटर्न वाली बात कही गई है वह वाजिब नही है लेकिन यह देखना लाजमी तौर पर चाहिये कि जो प्राईवेट कालेज अच्छे है और पोलिटिक्स से दूर रहते हुए हरियाणा मे शिक्षा के विकास का कार्य कर रहे है उनको सरकार अपने तरफ से अपने तौर पर मदद दे और जो दे रही है उसमे बढ़ौतरी करे। इसी प्रस्ताव पर बोलते हुये चौधरी हरद्वारी लाल जी ने एक सोसायटी का नाम लिया जो शिक्षा के मामला मे कालेज बना रही हैं हम नही चाहते कि किसी का नाम लिया जाये लेकिन उन्होंने ही नाम लिया और चौधरी चांद राम जी के मुंह से यह बात प्रकट हो गई कि वह संस्था बेरी ऐजुकेशन सोसायटी है जिसके अध्यक्ष हमारे स्पीकर ब्रिगेडियर रण सिंह जी है। उन्होने यह भी बताया कि अब उन्होंने अपना यह पद छोड़ दिया है और उसका दूसरा कोई अध्यक्ष बना दिया है। इस बात पर काफी केट्रोवर्सी रही और प्वायंट आफ आर्डर रेज किये

गये कि रैलेवैसी नही है। मैं पूछता हूं कि रैलेवैंसी क्यों नही है? यह सारी डिस्कशन ही इस बात पर हो रही है कि किन कालेजों को रियायत दी जाये और किन को न दी जाये। इसमे अभी अभी अभी भट्ठों और ईंटों का भी जिक्र आया। चौधरी राजेन्द्र सिंह जी ने फरमाया कि 140 वैगनज कोल की इस सोसायटी ने स्पौंसर करवाए अपने नाम से जिन दिनों हरियाणा मे कोल की शार्टेज थी और ईंटें कोयले की शार्टेज की वजह से नही मिलती थीं उस वक्त कोयले का एक वैगन तीन हजार रूपये की ब्लैक मे बिकी । 140 वैगनज का आप हिसाब लगाये तीन हजार रूपये फी वैगन के चार लाख बीस हजार रूपये बनते है। देखने पर यह भी मालूम हो गया कि 9–10 लाख ईंटें भी नही बनी जो बननी चाहिये थी। इन हालात मे हम कैसे सिफारिश कर सकते है कि इस किस्म की संस्थाओं को रियायत दें जो चार–पांच लाख रूपया ब्लैक करके खा जाये। मुझे अफसोस से कहना पड़ता है कि हम नही चाहते थे कि स्पीकर साहब का नाम इनवाल्व करें और हमे यह पता भी नही था कि कौन सी सोसायटी हे और कौन उसके अध्यक्ष है। यह बात तो चौधरी हरद्वारी लाल और चौधरी चांद राम ने जाहिर की और तभी मुझे बोलना पड़ा । ऐस उच्च पदाधिकारी के बारे मे नाम लेकर जो नान पार्टीमैंन होता हे बातें की जाये और उसकी सोसाइटी के लिये यह चीजें कही गई है तो यह अफसोस की बात है.....

उपाध्यक्षाः देखियेय, बार–बार स्पीकर साहब का नाम लेना उचित नही है। अब तो वह उसके औहदेदार भी नही हैं आप सोसायटी का नाम ले, उसके औहदेदारों के नाम न ले ।

Shri S.P. Jaiswal: On a point of order, Madam. I would request that the reference made by the hon. Member to the Speaker should be expunged. He can refer to Brig. Ram Singh in his personal capacity but not as Speaker because his status is related to this House.

महत गंगा सागरः मेरा स्पीकर साहब के ओहदे से कोई मतलब नही है लेकिन जो शख्स उस सोसायटी का अध्यक्ष है.....

उपाध्यक्षाः आप अध्यक्ष का नाम न लें।

महत गंगा सागरः मैं पर्सनल तोर पर नाम नहीं लेता हूं वैसे ही बात करता हूं कि ऐसी सोसायटी का जिक्र आया हे कि इस सोसायटी ने इतने वैगनज कोल लिया है और.....

(At this stage Mr. Speaker occupied the Chair.)

Shri S.P. Jaiswal: Sir, I had just raised a Point of Order before you came to this House. I would request for your ruling on that. I have said that the reference to Brig. Ran Singh. Chairman of a particular society, as Speaker should be expunged from the Proceedings as the Speaker is only related to this House and it is not proper that the Speaker's name should be referred to.

चौधरी जयसिंह राठीः आन ए प्यांट आफ आर्डर, सर। स्पीकर साहब, क्या हाउस मे किसी आदमी का नाम लिया जा सकता है? हमने यहां पर रूलिंग बताये हे कि नाम लेकर बात नही कर सकते है और कोई किसी सोसायटी का प्रधान हो उसका नाम हाउस मे नही आ सकता। क्या नाम लिया जा सकता है?

Mr. Speaker: I can see one point raised by Mr. Jaiswal that the Speaker's name must not be brought in the proceedings of the House. There are so many ways to refer to him which you are welcome to do.

मुख्य मंत्री (श्री बंसी लाल)ः स्पीकर साहब, काफी देर से इस प्राईवेट प्रस्ताव पर बहस हो रही है। आनरेबल मैंबज्र ने कई किस्म के सुझाव दिये है। उन्होंने जो सुझाव दिये है गवर्नमैंट उनको पूरी तरह ध्यान मे रखेगी और कोई अलग से कमेटी बनाने की जरूरत नही है। सहायता देने के कुछ नियम पहले बना हुये है अगर और जो बत मुनासिब होगी वह बात करेगी। गवर्नमैंट वह बात करेगी जो ज्यादा से ज्यादा पब्लिक इन्ट्रैस्ट मे हो। इनको जिस तरह ज्यादा से ज्यादा लिब्रेलाइज किया जा सकता है या जितना ज्यादा से ज्यादा पब्लिक इन्ट्रैस्ट मे इस्तेमाल किया जा सकता है उसी ढंग से इनको इस्तेमाल किया जायेगा। इन शब्दों के साथ मैं मूबर आफ दी रैजोल्यूशन से प्रार्थना करूंगा कि वे इसको विदड्रा कर ले।

चौधरी रणबीर सिंह (किलोई): अध्यक्ष महोदय, मैं मुख्य मंत्री जी का शुक्रिया अदा करता हूं कि जो सुझाव मैंने दिए थे उन पर पूरे ध्यान से हमदर्दआना तरीके से गौर किया और विश्वास दिलाया, और इस सदन को जो टैम्प्रैचर ऊंचा चढ़ रहा था उसको नीचे लाने के लिए रास्ता निकाला। अध्यक्ष महोदय, इससे पहले कि मैं प्रस्ताव को वापिस लूं, एक बात निवेदन करना चाहता हूं मेरे एक दोस्त चौधरी हरद्वारी लाल जी ने किसी सोसायटी का नाम लिया.....

एक आवाजः आप टैम्प्रैचर लूज न करें।

चौधरी रणबीर सिंहः आप कितनी ही कोशिष करें टैम्प्रैचर लूज करवाने की, आप करवा नही सकते।

Mr. Speaker: No interruptions please.

चौधरी रणबीर सिंहः जैसा कि मुख्य मंत्री जी ने कहा है, अच्छा होता अगर उनके मंत्रिमण्डल के सहायोगी सदस्य भी कोई बात कहते। कोई सोसायटी कसूरवार हो सकती है, सोसायटी मे कोई गलती हो, उस गलती को दूर करने के लिए सरकार के पास इतने आख्तियार है जिनको इस्तेमाल करके उस गलती को दूर करके उसे सही रास्ते पर लाया जा सकता है। अध्यक्ष महोदय, जिस सोसायटी का जिक्र किया गया है, मुझे हाल ही मे वहां जाने का मौका नही मिला लेकिन एक बार श्री

जगजीवन राम जी के साथ उस संस्था मे जाने का मौका मिला था।

श्री बंसी लालः स्पीकर साहब, मेरी रिक्वैस्ट है कि डिबेट को ज्यादा लम्बा न करे, तो बहुत अच्छी बात है।

चौधरी रणबीर सिंहः मैं दो तीन मिनट से ज्यादा नही लूंगा और कोई ऐसी बात नही कहूंगा जिससे सदन मे गर्मी आये जैसे कि और भाई कह गए है। उस वक्त मैं गया था और उस वक्त ऐसे आसार दिखाई देते थे कि यह संस्था बहुत फलेगी और आगे बढ़ेगी। उस संस्था के बारे मे जैसा मैंने सुना था वैसा ही देखा था उस सोसायटी ने जितनी ईंटें लगाई थी, अगर उन ईंटों का हिसाब लगाया जाए तो 25—20 के हिसाब से 95—96 कमरे बन सकते है । अगर उन कमरों को देखा जाये जिन के ऊपर छत पड़ चुकी है तो करीब करीब 50—55 कमरे बनेंगे। यह हो सकता है क्योंकि जैसे सरकार के काम ठेकेदार की मारफत होते है उसी प्रकार सोसायटी ने भी किसी ठेकेदार की मारफत काम करवाया हो। कोई मशहूर ठेकेदार हो सकता है जिसकी मारफत कोयला देकर ईंटे पथवा ली हो या किसी सोसायटी की मरफत काम करवाया हो, इसमे आपत्ति है तो मंत्रिमण्डल को अधिकार है कि वह कायदे कानून के मुताबिक कार्यवाही कर सकती हैं जेसा कि मुख्य मंत्री जी ने आश्वासन दिलाया, मुझे पूर्ण आशा है कि हमारी सरकार उसके मुताबिक चलेगी। जैसा कि डा. मंगल सैन जी ने सुझाव दिया था कि शहरों मे जो महाविद्यालय बन रहे है उन को

भी ग्रांट दी जाए, शायद मैं इस सुझाव को मान लेता क्योंकि शहरों और देहातों की तफरीक को मैं लाईक नही करता, इस बात को मैं मानता हूं। लेकिन अब मैं इस प्रस्ताव को वापिस ले रहा हूं इस लिये यह कहना कि मैं उन के संशोध्न को कबूल करता हूं, एक रस्मी बात है। अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी इजाजत से, इस प्रस्ताव को, मुख्य मंत्री जी के आश्वासन पर वापिस लेता हूं और मंत्रियों से प्रार्थना करता हूं कि उन्हें ऐसे प्रस्ताव पर गर्मी लाने की कोशिश नही करनी चाहिए।

Mr. Speaker: Before we close the discussion I would lie to mention one point. Unfortunately my own name has been brought into this discussion and therefore I wish to mention for the information of the Hon. Members that in April last year for certain reasons I disassociated myself from that body and gave the power to another person or there is another Chairman of that society for the last ten months. Since then whatever be their functioning, I have noting to do with their functioning.

Secondly I also make a request to the Hon. Members to go and see for themselves as to what is there. I will say noting here. So, if you, Hon. Members, go thee and see that for yourself, I am sure you will find and see that what is coming up there is an example of a sacrifice and some excellent work?

Now I will take the genral sense of the House for the withdrawal of the sesolution. Do you all agree that leave be grantedto Hon. Member Chaudhri Ranbir Singh to withdraw his resulution?

Vice: Yes.

Mr. Speaker: I think all agree.

Vices: Yes, Sir.

The resolution was, by leave of the House withrawn.

OFFICIAL RESOLUTION RE THE MAGNIFICENT VICTORY OF OUR COUNTRY IN RECENT WAR WITH PAKISTAN.

Chief Minsiter: (Shri Bansi Lal): Mr. Speaker, Sir, I beg to move—

The House expresses its profound joy on the magnificent victory of our country in the cecent war with Pakistan. The country has emerged more united and stronger and the principles and policies which were always followed by our country have been fully vindicated. This is a victory of freedom democracy and secularism against suppression, totalitarianism and religious fantaticism.

The House expresses its sense of pride on the performance of our valiant armed forces and is grateful to them for their brave and courageous deeds. The Hosue also extends its heartfeltsympathy to the families of all the martyrs from the armed forces and from the civilian population who laid down their lives in defence of the motherland and also towards those armed forces personnel and civilians who were wounded and disabled during the war.

The House welcomes the emergence of the sovereign democratic Republic of Bangla Desh and resolves that the

felicitations of the House be conveyed to the Bangla Desh Government though the Central Government.

स्पीकर साहब मैंने ओरिजनल प्रस्ताव मे थोड़ी सी एमैंडमैंट कर दी है। "Through the Central Government" के लफ्ज आखिर मे ऐड कर दिए है।

Mr. Speaker: Motion moved—

The House expresses its profound joy on the magnificent victory of our country in the cecent war with Pakistan. The country has emerged more united and stronger and the principles and policies which were always followed by our country have been fully vindicated. This is a victory of freedom democracy and secularism against suppression, totalitarianism and religious fantaticism.

The House expresses its sense of pride on the performance of our valiant armed forces and is grateful to them for their brave and courageous deeds. The Hosue also extends its heartfeltsympathy to the families of all the martyrs from the armed forces and from the civilian population who laid down their lives in defence of the motherland and also towards those armed forces personnel and civilians who were wounded and disabled during the war.

The House welcomes the emergence of the sovereign democratic Republic of Bangla Desh and resolves that the felicitations of the House be conveyed to the Bangla Desh Government though the Central Government.

चौधरी प्रताप सिंह दौलतपुर (बड़ौपल): स्पीकर साहब, चीफ मिनिस्टर साहब ने जो प्रस्ताव रखा है, मैं उसका समर्थन करता हूं। इससे ज्यादा कोई खुशी की बात नही हो सकती एक मूल्क मे बाशिंदों के लिए, एक मूल्क के लिए कि उसकी फौजे इतना बड़ा कारनाम करे, इतनी बड़ी बहादुरी का काम करे। स्पीकर साहब, लाला बनारसी दास जी ने इस लड़ाई के बारे मे दफा जिक्र किया इसलिए उनकी इत्तलाह के लिए मैं बतलानाइ चाहता हूं कि हिन्दुस्तान की फौजें, हिन्दुस्तान का सिपाही दुनिया मे सबसे ऊंचा माना गया है, ओज से नही बल्कि पहले और दूसरे वर्ड से लेकर आज तक उसका स्थान ऊंचा रहा है और उन्होंने जनरल रोमेल जैसे का भी मुंह मोड़ा था। वदकिस्मती हमारी यह रही कि फौज की परवाह नही की गई। नतीजा क्या हुआ ? 1962 मे हमारी बड़ी बेइज्जती हुई History repeats inself 65 मे फिर लड़ाई हुई, 71 मे फिर लड़ाई हुई और फिर भी हो सकती है। इसलिए फौज का काम फौज पर ही छोड़ना चाहिए, पोलिटिशियनज को इसमे हिस्सा नही लेना चाहिए। स्पीकर साहब, आज जो हमारी जीत हुई है यह सारे नेशन की, सारे देश की विक्टरी है। अपोजीशन पार्टीज यह कहती रही कि बंगलादेश को रिकोगनाइज किया जाए, उसके लिए लड़ाई लड़नी पड़े तो लड़नी चाहिए। कभी किसी ने नही सुना। जब तीन तारीा को याहिया खां ने हमला किया तो चार तारीख को अपोजीशन की हर पार्टी ने एक बात कही कि प्राईम मिनिस्टर हमारी लीडर है। हर आदमी ने प्राईम मिनिस्टर का साथ दिया। स्पीकर साहब, इस बात की

मिसाल नही मिलती कि 13 दिन मे हमने इतनी बड़ी लड़ाई जीत ली यह बातों से नही बल्कि कारनामों से जीती है। यह याद रखने वाली बात है और फौजों के लिए हमे कुछ करने की जरूरत है। उनकी बहादुरी पर हम हिन्दुस्तानी को फक्र होना चाहिए। उनके काम मे हमे इंटरफीयर नही करना चाहिए। हमे उनकी पेंशन और तन्खाह मे बढ़ोतरी करनी चाहिए, और उनकी बहादुरी का अहसास होना चाहिए। मैं यह समझता हूं कि यह किसी एक पोलिटिकल पार्टी की विजय नही है बल्कि एक नेशनल विक्टरी है।

स्पीकर साहब, हमारे चीफ मिनिस्टश्र साहब बहुत बड़े आदमी है लेकिन हमारे यहां ये पिछले दिनों गए। जहां लाखों रूपया डिफैन्स फंड के लिए इकट्ठा हुआ था और जलसे मे कहा कि जो आदमी कांग्रेस के उम्मीदवार के खिलाफ वोट देगा व निक्सन है और अमेरिका और चीन का एजेन्ट है। क्या ये बातें जो है....

श्री बनारसी दास गुप्ताः स्पीकर साहब, मेरी एक सबमिशन है।

Mr. Speaker: A little later pleases.

श्री बनारसी दास गुप्ताः स्पीकर साहब, केवल छोटी सी सबमिशन है।

Mr. Speaker: No, please later.

चौधरी प्रताप सिंह दौलतपुरः स्पीकर साहब, इस तरह की पर्सनल बात नही होनी चाहिएं हमको सबका कंट्रिब्युशन इसमे मानना चाहिए। हमारे ऊपर सबसे पहले सन 192 मे हमला हुआ। उसमे हमने सरकार का साथ दिया और वह पूरा काम हुआ। फिर 65 मे युद्ध हुआ, उसमे भी विरोधी दलों ने पूरा साि सरकार का दिया और उसमे हमारी विजय हुई। अबकि बार भीा हमने पूरा साथ दिया है। इसलिए हमें इस बातों मे न पड़ करके अपने आपको आगे के लिए तैयार रखना चाहिए। इस संबंध मे प्राईम मिनिस्टर ने बयान भी दिया है। हमारे गवर्नरज भी ब्यान देते रहते है। इन बातो से हमे पहले भी बड़ा नुकसान हुआ है। आयंदा के लिए हमें इन लड़ाईयों से सबक सीखना चाहिए। फौजियों की ज्यादा जरूरतों को पूरा करना चाहिए। इस तरह की विक्टरी को यदि ये पर्सनल बनाना चाहे तो यह बात बिल्कुल गलत है।

स्पीकर साहब, गवर्नमैंट आफ इंडिया ने पैंशन के कानून मे तबदीली करके यह किया है कि एक परिवार मे केवल एक ही पैंशन मिल सकती है। फर्ज किया लड़ाई मे बाप भी शहीद हो जाता है और बेटा भी शहीद हो जाता है तो दोनों को एक ही पेंशन मिलेगी। इस किस्म का कानून बिल्कुल गलत है। जब एक परिवार के दो व्यक्ति चले गए तो दोंनो को ही पैंशन मिलनी चाहिएं इस किस्म से और भी ज्यादा मदद हमे अपने फौजियों पावर मे एक उसके पास ज्यादा ताकत होती है और कई बार वह उसका गलत इस्तेमाल भी करता है। लेकिन इस युद्ध के दौरान

हमने चीफ मिनिस्टर के खिलाफ चलाई गई मुवमैंट को भी बंद कर दिया और हमने साथियों और लोगों से कहा कि इन दिनों हमे चीफ मिनिस्टर कै खिलाफ कोई लफ्ज नही कहना चाहिए। हमारे आदमियों ने कहा कि हम प्राईम मिनिस्टर को देश का लीडर मानते है। अगर ये इस तरह की बाते करते है तो मैं कहता हूं कि ये नेशनल यूनिटी को क्रश करना चाहते है। इन अलफाज के साथ, स्पीकर सहब, मैं यह कहता हूं कि यह जो विक्टरी हुई है यह एक नेशनल विक्टरी है, सबको विक्टरी है और हम चाहते है कि जैसे बहादुर हिन्दुस्तान ने पैदा किए है ऐसे बहादुर तमाम दुनिया पैदा करे।

श्री बनारसी दास गुप्ताः अध्यक्ष महोदय, मेरी एक सबमिशन है कि इस सदन के नेता ने जो प्रस्ताव रखा है वह बिल्कुल ही विवादास्पद नही है, कोई कंट्रोवर्सी इस प्रस्ताव के संबंध मे नही हो सकती, न पैदा की जानी चाहिए। जैसा कि विरोधी दल के नेता ने अभी कहा कि यह सारे देश की इज्जत है, सारे नेशन की विक्टरी है, किसी एक पार्टी की नही, हम इस सदन मे बार बार यह बात कह चुके है। स्पीकर साहब, इस दिन से यह अधिवेशन चल रहा है। ट्रैजरी बैंचिज की तरफ से अगर किसी एक विधायक ने यह कहा हो कि कांग्रेस पार्टी की विजय है तो आप सारी कार्यवही निकलवा कर देख लीजिए । मैंने अपने भाषण मे इस बात को माना कि यह सारे देश की इज्जत है और सभी लोगों को इसका श्रेय जाता है। एक पार्टी वाली बात विरोधी दल

के बैन्चिज की तरफ से की गई है। उनकी तरु ससे तो स्पीकर साहब, यहां तक कहा गया है कि शहीदों की चिताओं पर इलैक्शन लड़े जायेंगे, उनके नाम का फायदा उठाया जायेगा और उनकी कुर्बानी की कीमत वसूल की जायेगी। ये सब बाते उधर से आई है। तो मैं अब भी प्रार्थना करता हूं कि यह बहुत ही शानदार प्रस्ताव है, देश की इज्जत के ऊपर खुशी जाहिर की गई है, अपने शहीदों को बधाई दी गई है। श्रद्धांजलि दी गई है और नवोदित बंगला देश का स्वागत किया गया है।

Mr. Speaker: You are making a speech.

श्री बनारसी दास गुप्ताः स्पीकर साहब, मैं तो सिर्फ इतना कहना चाहता हूं कि अगर इस तरह की बाते उधर से लाई गई तो इधर से भी उनका जवाब देना पड़ेगा और यह शानदार प्रस्ताव कंट्रोवार्शियल बनकर रह जाएगा।

चौधरी प्रताप सिंह दौलतपुरः दूसरी बात भी बतला दो, चीफ मिनिस्टर वाली।

श्री बनारसी दास गुप्ताः मैं सदन की बात कहता हूं। चीफ मिनिस्टर ने बाहर क्या कहा, मुझे मालूम नही।

श्रम मंत्री (श्री अब्दुल गफ्फार खां): जनाबेवाला, यह प्रस्ताव, रैजोल्यूशन जो आनरेबल चीफ मिनिस्टर साहब ने हाउस के सामने पेश किया है यह ऐसे ही पेश नही कर दिया है बल्कि इसे पेश करना बड़ा जरूरी था, ताकि इस हाउस की तरफ से हम

इस बात का इजहार करें कि हम अपनी फौज का और सिविलियंज का और सब का शुक्रिया अदा करते है तथा यह कहे कि इन्होने जो बहादुरी की और जिस से देश का नाम ऊंचा हुआ है उसको ऐप्रिशिएट करते है, उसकी सराहना करते है। स्पीकर साहब मेरे एक बात समझ मे नही आई। इस रैजोल्यूशन या कोई शख्सियत अपना मुफाद हासिल कर सकती हो। अगर कोई बात, जैसा कि अपोजीशन की तरफ से फरमाया गया है, ऐसी हे तो वह हाउस मे कहने की नही है और मैं मानता हूं कि यह इस रैजोल्यूशन को मिनिमाईज करने का एक मकसद था जो यह बात यहां कही गई वरना इस रैजोल्यूशन के बारे मे तो बिना किसी मुखलिफत के बिना किसी क्रिटिसिज्म के, बिना किस कंट्रोवर्सी के फौरन यह कह देना चाहिए कि हम इसके साथ है। रहा यह सवाल कि चीफ मिनिस्टर ने क्या कहा और कहां कहा ? हमारे इससे काई ताल्लुक नही है। ऐसे संजीदा और इतने अच्छे रैजोल्यूशन के बीच मे यह बात लाकर हम यह बताना चाहते है कि ऐसे लोग भी मौजूद है तो इस रैलोल्यूशन की मुखालिफत तकरीबन करते है। मैं पूरी नही कर रहा हूं। तकरीबन करते है, जिसके मायने यह है कि वे रैजोल्यूशन के साथ शरायत लगाते है कि साहब यह नही होना चाहिए, वह नही होना चाहिए, किसी पार्टी को अपना नाम नही लेना चाहिए, कोई पार्टी उससे फक्र हासिल न करे, कोई पार्टी उससे फायदा न उठाए। इन सब बातों का यहां क्या सवाल था ? मुझे ताज्जुब इस बात का है कि पहली मर्तबा मे यह सुन रहा हूं कि यहां पार्टी का सवाल उठाया जा रहा है । इस वक्त हाउस के

किसी मैंबर को ऐसी गुफ्तगू नही करनी चाहिएं। फर्ज करो चीफ मिनिस्टर साहब ने बाहर कहा है, तो आप भी बाहर कह सकते थें आपको किसने रोका है? क्या आप हमारे कहने से रूक जायेंगे? आप हमेशा कहते चले जायेंगे। अब फिर बाहर कह सकते हो। इस वक्त इन्होने जो बात की है उससे इस रैजाल्यूशन को सैंकटीटी को कम किया है। मैं दरख्वास्त करूंगा कि इस रैजोल्युशन पर कतन किसी किस्म का, बाहर की हुई बात का, जिक्र नही होना चाहिए। अगर हमारे लीडर आफ दी अपोजीशन यह कहते है कि चीफ मिनिस्टर साहब ने बाहर कहा है तो उनको बाहर ही सुलझ लेना चाहिए। बाहर ही एक दूसरे के साथ अकाउंट तय कर लें ऐसी बाते यहां नही करनी चाहिए। इस वक्त अगर हाउस मे ऐसी बाते कही जाये, क्या यह मैंबरो के शाने–शायां होगा ? क्या ये बाते यहां कही जा सकती है ? आगर यही रैजाल्यूशन पार्लियामैंट के सामने पेश होता तो मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि तमाम के तमाम जितने भी वहां दल है, कोई भी ऐसी बात नही करता । इसलिए मुझे इस बात से बहुत सदमा हुआ, बहुत रंज हुआ और मै समझता हूं कि इस तरह की बाते हाउस मे नही कहनी चाहिए, यह हाउस की शान के शायां नही है। इसलिए मैं अज्र करूंगा कि मेहरबानी करके ऐसी अड़गम–बड़गम बाते न कही जाये।

चौधरी रणबीर सिंह (किलोई): अध्यक्ष महोदय, यह सदन बंगला देश के सम्पूण्र प्रभुत्व सम्पन्न लोकतन्त्रात्मक गणराज्य अनने पर बंगला देश की सरकार को और बंगला देश के लोगों

को बधाई देता हूं। इतिहास मे यह पीरियड सोने के अक्षरो मे लिखा जायेगा। जिस वक्त बंगला देश बनने का समय आया, उस वक्त एक तरफ पाकिस्तानी फौजी हकूमत थी, जो 1947 के बाद लोगों के पास कभी नही गयी और आम चुनाव नही कराये और लोगों से यह भी नही पूछा कि वें कैसा राज्य चाहते है, दूसरी तरफ हिन्दुस्तान गणराज्य की हकूमत थी और हिन्दुस्तान के लोग और फौज थी जो सिर्फ अपने ही देश के अन्दर प्रजातंत्र कायम नही रख सके बल्कि हमारे देश ने कुर्बानी दी। बंगला देश के लिये हमारे बहादुर जवानो और अफसरों ने कुर्बानियां दी। खाली फौजियों ने ही लड़ाई नही लड़ी, बल्कि हमारे शहरी भाईयों ने जिनका लड़ाई से काई वास्ता नही था, ने भी इसमे योगदान दिया। हमारे यहां जो 98 लाख से ज्यादा बंगला देश के भाई आये थे जिनको मजबूरी मे घर छोड़ना लड़ा था, उनका हर प्रकार का भार हमारी जनता ने खुशी–खशी कबूल किया। दुनियां मे दूसरे देशों पर हमला करने का अभी तक जो तरीका था वह फौज से था परन्तु अब पाकिस्तान ने एक नया तरीका निकाला। पाकिस्तान ने वहां के करोड़ों लोगों को हिन्दुस्तान की तरफ धकेल दिया ताकि हिन्दुस्तान के अन्दर भी प्रजातन्त्र खत्म हो जाये और यहां हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख और ईसाई का धम्र के नाम से झगड़ा हो। हमारे देश के लोगों पर उनके बुरे प्रचार का कोइ असर नही हुआ। वहां की जनता ने जिन लोगों पर उनके बुरे प्रचार का कोई असर नही हुआ। वहां की जनता ने जिन लोगों को राय से चुना था और जिसे प्रधान मंत्री बनना था, उसे याहिया

खां ने जेल के अन्दर डाल दिया। बंगला देश के भाईयों को भी तरह तरह की तकलीफे दी गयी। हमें मजबूर हो कर, उनकी मदद के लिये फौज भेजनी पड़ी। अध्यक्ष महोदय, इस बात को कोई माने या न मोने परन्तु इतिहास इस बात से इन्कार नही कर सकता कि जहां हमारे फौजी अफसरो और जवानो ने लड़ाई लड़ी है वहां हरियाणा के ब्रिगेडियर शिव दयाल सिंह ने जो दिल्ली कैंट के अस्पताल मे जख्मी पड़े है। और जिनके पांव मे चोट है, हरियाणा का नाम रोशन किया है। इसी प्रकार से आपके दामाद भी जख्मी हुये है। जो ठीक होने फिर फौज मे चले गये है। हरियाणा के दो तीन ब्रिगेडियर, पांच–छः कर्नल और दो सौ तीन–सौ जवानो ने बलिदान भी दिया और जखमी भी हुएं इन्होने अपनी जान पर खेल कर अपने देश का और प्रदेश का नाम ऊंचा किया। उन जवानो का हमारा देश हमेशा हमेशा अहसान मानेगा और हिन्दुस्तानी फौज का नाम दुनियां मे स्वर्ण अक्षरों मे लिखा जायेगा। आप सब को मालूम है कि पाकिस्तान की फौज ने अपने ही देश के लोगों के साथ क्या बर्ताव किया है ? यह आत दुनियां सुनती भी हे और अपनी आंखो से देखती भी है। लेकिन हिन्दुस्तान के फौजी जवानों और अफसरो ने हिन्दुस्तान का सिर ऊंचा किया और वहां पर कोई किस किस्म का घृणात्मक कार्य नही किया । हालांकि वह दूसरे देश मे गये हुए थे लेकिन उन्होंने न तो किसी की इज्जत को लूटा और न ही किसी मकान को लूटा बल्कि लड़ाई मे जीतकर इन्होंने हिन्दुस्तान के नाम पर चार चांद लगाये। हिन्दुस्तान का जो गणतंत्र का मंत्र है और जिसमे सब धर्म

बराबर है, की नींव को पक्का किया। अध्यक्ष महोदया, इतिहास इस सच्चाई से इंकार नही कर सकता कि अमेरिका देश, जो कि प्रजातत्र देश है, बहुत शक्तिशाली है और जिसमे पास ऐटम शक्ति है, उसने अपने समुंद्री बेड़े को बे–आफ–बंगाल मे भेजा इसी प्रकार से चीन जो अपने आप को कम्युनिस्ट कंट्री कहता है, और दबे हुए देशों की सहायता करने का दावा करता है, ने भी आंखे दिखाई। परन्तु हिन्दुस्तान के बहादुर प्रधान मंत्री बहन इंदिरा गांधी ने, हिन्दुस्तान की सरकार ने, हिन्दुस्तन के लोगों ने और हिनदुस्तान के फौजी जवानो ने इसका बड़े हौसले से मुकाबला किया। हिन्दुस्तान की जीत हुई और बंगला देश का जन्म हुआ। जहां हम बंगला देश को बधाई देते है, वहां उनके लोगो को भी मैं बधाई देता हूं और अपनी सरकार को भी बधाई देता हूं कि हमारी सरकार ने भी जो भाई शहीद हुए है, उनकी काफी इमदाद की हैं । मैं सरकार से एक प्रार्थना और करना चाहता हूं कि उनको जमीन दी जाये। जो भाई शहीद हुए है, उनके लिये कोई ज्यादा जमीन नही देनी पड़ेगी, इसलिये उनको जमीन जरूर दी जाये। दूसरी चीज मैं यह भी कहना चाहूगां कि उनकी यादगारें बनायी जाये ताकि आने वाली हमारी पीढ़ियां उनसे शिक्षा ले ओर उनमे जोश पैदा हो। आग्र को वे बहादुरी और जोश के साथ लड़े। जिस तरह से हिन्दुस्तान ने बंगला देश का जन्म करवाया है, उसी तरह से हरियाण का भी नाम ऊंचा हुआ है क्योंकि हरियाणा के बहादुर जवान इस लड़ाई मे सबसे आगे रहे है। यह हमारे प्रदेश के लिये बड़े फक्र की बाती है कि उन्होंने हमारे प्रदेश का

सिर ऊंचा किया है। स्पीकर साहब, मुख्य मंत्री जी तो यहां हाउस मे नही बैठे हुए है लेकिन मैं यह उम्मीद करता हूं कि इस रैजोल्यूशन मे 'बंगला गवर्नमैंट' कहा गया है, मैं चाहता हूं कि उसके साथ ही बंगला देश के भाईयों का भी जिक्र होना चाहिए। मै बंगला देश के लोगों को भी मुबारिकबाद देता हूं, और बंगला देश सरकार को भी मुबारिकबाद देता हूं। मैं उम्मीद करता हूं कि वित्त मंत्री को देंगी और मुख्य मंत्री जी मेरे संशोधन को प्रस्ताव मे जोड़ देंगे। अध्यक्ष महोदय आप जानते है कि कोई प्रदेश सरकार विदेशो मे कोई भी सूचना सीधे नही भेज सकती। केवल हिन्दुस्तान की या केंन्द्रीय सरकार की मारफत ही भेज सकती है। उन्होने जो संशोधन किया है वह हर दृष्टि से दुरूस्त है और मैं इसका स्वागत करता हूं यह भी उम्मीद करता हूं कि कोई भी विरोधी दल का सदस्य अपने जोश मे आ करके गल्त बात नही कहेगा। मैं मानता हूं कि इसमे कुछ मुश्किलात हो सकती है और मेरे वचनों मे भी कोई फर्क हो सकता है। किसी को वे प्यारे लग सकते है और किसी के लिये दु:खदायी हो सकते है। लेकिन यह प्रस्ताव ऐसा है कि इसके अन्दर हमे अपने जो थोड़े बहुत आपस के दिमागी तौर पर खिंचाव होते है, और आने वाले चुनावों की वजह से जो और ज्यादा दिमागो मे चढ़े हुए है, चढ़ने नही देने चाहिए। इस प्रस्ताव के मुद्दे की हम सब भाई एक स्तर से और एक ही जुबान से ताईद कर, यह मेरा निवेदन है।

श्री मंगल सैन (रोहतक): स्पीकर साहब, सदन के सामने जो प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया है, मैं उसका समर्थन करूंगां इसमे मोटे तौर पर भारत की विजय पर हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त की गयी है और संताष व्यक्त किया गया है। संसार मे हमारा राष्ट्र शक्तिशाली सिद्ध हुआ है, इस बात पर भी प्रसन्नता व्यक्त की गयी है और इसके साथ ही यह भी कहा गया है कि दमन के ऊपर स्वतंत्रता का, अधिनायकवाद के ऊपर लोकतंत्र का और धर्मान्धता के ऊपर धर्म–निर्पेक्षता की विजय हुई है। साथ ही साथ हमारी सेना के संबंध मे भी उत्कृष्ट विचार प्रकट किये गये है। अंत मे बंगला देश का स्वागत किया गया है जो कि सार्वभौम लोकतंत्र और गणतंत्र के आधार पर एक स्वतंत्र देश बना है। यह प्रस्ताव वास्तव मे इस सदन के संमुख सत्र के प्रारम्भ मे ही आ जाना चाहिए थां उस समय हम भी मूड मे आये थे और हमारे मन भी उदार थे। युद्ध में से निकलकर आये थे और यहां भी कोई कड़वाहट वाली बात नही दिख रही थी, कोई पक्षपात भी दिखाइ नही दे रहा था इसलिये हम अपने मन से यह बात बहुत अच्छी तरह से कह सकते थे। मुख्य मंत्री जी को देख कर मुझे यह बात याद आ गयी। मुझे स्मरण है कि चौधरी रणबीर सिंह जी ने एक दिन उनको यही कहा था मगर उन्होने भटक कर कह दिया कि कोई जरूरत नही है। मुझे खुशी है कि भगवान ने उन्हे अब सद्बुद्धि दे दी है। हमारा देश विजयी हुआ और कौन ऐसा व्यक्ति होगा जो प्रसन्न हनी होगा ? 55 करोड़ का राष्ट्र उस समय प्रसन्नता के मारे, हर्ष के माने नाच उठा जब उसने आकाशवाणी

से यह समाचार सुना कि भारत के सेनापतियों ने पूर्व बंगाल यानी बंगला देश मे पश्चिमी पाकिस्तान के तानाशाहों द्वारा भेजे गये जनरल न्याजी के हथियार डलवा दिये है। टेलीविजन पर वे सारे दृश्य देखकर प्रत्येक भारतीय का सीना उभरा, मस्तक ऊंचा हुआ कि बहुत वर्षो के बाद हमने शत्रु पर विजय पायी है। इससे भी बढ़कर हमारी खुशकिस्मती इस बात की हुई है कि हमारे सिद्धांतों और आदर्शों की विजय हुई है। कल जिन लोगों ने मजहब के नाम पर देश को तकसीम किया था, हमने उस तकसीम को मजबूरन कबूल किया था, हमारे नेताओ ने उनकी गुन्डागर्दी के आगे हथियार डाल कर प्यारे भारत के बंटवारे को कबूल कर लिया था, वह मजहब का आधार समाप्त हो कर, जिन आधारों पर राष्ट्र बना करत है, वह सामने उभर कर आया है। स्पीकर साहब, हमारे मन मे एक और बात सोचकर भी सतोंष हुआ, 1962 मे कुछ लोगों को गल्त नीतियों के कारण हमारा देश सेना की दृष्टि से मजबूत नही था। हमने दोस्त और दुश्मन पहचानने मे विवेक और बृद्धि से काम नही लिया। हमने कोरे नारो के पीछे जाकर, भाई–भाई मे जाकर विस्तारवादी चीन पर भरोसा किया था। उसने अकस्मात् और विश्वासघात करते हुए हमारे प्यारे देश पर आक्रमण किया उस समय हम सुसज्जित नही थे, हम तत्पर नही थे। उसका यह अन्जाम हुआ कि हमे पराजय का मुंह देखना पड़ा 1965 के अंदर हमारे रणबांकुरे जवानों ने खोई हुई प्रतिष्ठा को कुछ हद तक बहाल किया था । यह बात दूसरी है कि जवानो ने अपनी जवानियां लुटा कर और खून बहा कर, प्राणो की आहूति देकर

पाकिस्तान का षड़यन्त तो नाकामयाब कर दिया था और छम्ब जोड़ियां को काश्मीर से काटने का प्रयास विफल बना दिया था लेकिन दुर्भाग्य से हम राजनीतिक क्षेत्र मे यानी डिप्लामसी के मैदान मे ताशकंद की मेज पर बैठकर बाजी हार गये। हम जीते हुए इलाके उन्हे वापिस देकर चले आये। स्पीकर साहब, जब भारत के प्रतिरक्षा मंत्री जगजीवन राम के यह उद्घोष समाचार पत्रों रेडियो मे प्रसारित किये गये और वे छपे हुए वक्तव्य हमने पढ़े तो हमें बड़ा आनन्द आया और संताष हुआ कि इस बार यदि युद्ध होगा तो दुश्मन की धरती पर होगा। यह बात उन्होंने यच भी साबित कर दी। उन्होने एक बात और कही थी कि इस बार कोई ताश्कन्द नही होगा, अर्थात् जो धरती ली जायेगी, जो इलाका पाकिस्तान का हमारे वीर बहादुर अपने प्राणों की बलि देकर जीतेंगे, जिस धरती को हमारे देश से सेनानी अपना खून बहाकर पवित्र करेंगे वह इलाका वापिस नही देंगे। स्पीकर साहब, मैं अपने ओर से इस प्रस्ताव मे सिर्फ यही बात और जोड़ना चाहता हूं और प्रार्थना करता हूं कि मुख्य मंत्री जी या प्रस्ताव महोदय हमारी इन भावनाओ को ऊपर पहुंचायें कि हरियाणा का सदन भी यह नही चाहता कि जो इलाके हमने लिये है, अपने पुरूषार्थ से और अपने बलिदानो के बलबूते पर लिये है, वे जाने नही चाहिए। हमने 1965 की लड़ाई के अंदर कारगिल की चौकियां जीती, टीथवाल का इलाका जीता, सियालकोट के सैक्टर मे आगे बढ़े, लेकिन उसका कोई फायदा नही हुआ। जो इलाका हमने हजारो आदमियों की बलि देकर फिर जीता है, अगर फिर कहीं छोड़कर चले आये तो

उन जवानों और अफसरों की आत्माओं जिन्होंने भारत माता का मस्तक ऊंचा किया है, स्वर्ग मे बैठी हुई क्या कहेंगी ? यही कहेंगी कि अगर हमारी बलि चढ़वाकर इलाकों को फिर वापिस ही करता था तो हमे ंमरवाने से क्या फायदा था ? मैं आपके द्वारा यह कहना चाहता हूं कि शूरवीरों के पराक्रम के बारे मे और उनके पुरूषार्थ के बारे मे जितना भी कहा जाये थोड़ा है। हम बंगला देश के नवोदित होने का स्वागत करते है। वह क्षेत्र और उसकी सभ्यता संस्कृति भारत की सभ्यता संस्कृति से मेल खाती है क्योंकि भारत पाकिस्तान बनने से पहले सारा क्षेत्र एक भारत का अंग था। वहां के लोग आज भ रवीन्द्र नाथ टैगोर जी के कथनों को सुनकर, पढ़कर और वाचन करके आनन्द विभोर हो उठते है और उनके द्वारा लिखल गयी एक कविता को उन्होंने राष्ट्रीय गान के रूप मे स्वीकार किया है। भाषा, भावना और संस्कृति की दृष्टी से वह भारत का अभिन्न अंग था। वह हमसे जुदा हो गया था। आज हमारा उसको लेने का कोई मंशा नही है। हम उनके स्वतंत्र राष्ट्र का स्वागत करते है और इसलिये भी स्वागत करते है कि वहां पर लोकतंत्र होगा, वह एक रिपब्लिकन देश होगा और वहां पर शासन प्रणाली लोकतन्त्रात्मक अपनाई गई है और धर्म निरपेक्षता को स्थान दिया गया है। स्पीकर साहब, हम शेख मुजीबुर्ररहमान जो उनके नेता है, उनको बधाई देना चाहते है, उनकी सरकार को बधाई देते है और इतना ही नही उस जनता को भी देते है जिस जनता ने पाकिस्तानी सेना के दरिन्दों का जुल्म सहन किया, उन्होने बाप की अपनी आंखों के सामने उसकी

लाठी का सहारा छीन लिया, जवानो को कत्ल किया, मां के सामने उसकी पुत्री का शील भंग हुआ। उस जनता को जितनी भी तारीफ की जाए कम है क्योंकि वह इतने जुल्मों के बावजूद भी झुकी नही। पाकिस्तानी दरिन्दों ने जो जुल्म वहां पर ढाए इतिहास मे उसकी मिसाल नही मिलती।

शेख साहब बड़े मजबूत दिल के आदमी है। जब वह जेल मे थे तो उनके सामन मृत्यु साफ नजर आ रही थी, उनकी कब्र उनके सामने खोदी जा रही थी, वे हर क्षण अपनी मौत का इंतजार कर रहे थे लेकिन उस समय उनका दिल नही पसीजा, आंखों मे आंसू नही आए लेकिन जब वह स्वदेश लौटे, लोग उनके स्वागत को आए और उनमे अपने जाने पहचाने साथियों को न पाकर वे बार बार रो पड़े। स्पीकर साहब, मैं इस प्रस्ताव के माध्यम से उस जनता को बधाई देना चाहता हूं जिसने संसार मे मिसाल कायम की और जो जुल्म के आगे झुकी नही। आखिर संसार मे मिसाल कायम की और जो जुल्मों को समाप्त करने के लिए ऐसे हालत पैदा हो गए। स्पीकर साहब यहां पर यह कहा गया हक इस प्रस्ताव की बड़ी सैक्टिटी है बड़ी अच्छी भावना इसके साथ जुडी हुई है, मैं इस विचार से सहमत हूं। मैं बनारसी दास जी के विचारों का कायल हूं, मैं सराहना करता हूं, उनकी इस भावना की कि यह धरोहर राष्ट्र की धरोहर है, यह शौर्य सारी जनता का है। बाहर की बात तो बाहर ही कर लेंगे। इन शब्दों के

साथ मैं उस विचार को जोड़ते हुए इस प्रस्ताव का हृदय से स्वागत करता हूं।

चौधरी जयसिंह राठी (नौलथा): स्पीकर साहब, पाकिसतान के साथ युद्ध मे प्राप्त हुई शानदार, जीत, अपने असूलो को बचाने, उनकी रक्षा करने, जो हमारी नौजवान शहीद हुए है उनको श्रद्धांजलि अर्पित करने, उनकी बहादरी के गीत गाने और बंगला देश के बनने पर उसको मुबारिकबाद देने आदि सारे मसले इस प्रस्ताव मे शामिल है जो हमारे सामने है। स्पीकर साहब, मैं उस घर से आता हूं जिसके घर के जवान ने बंगला देश मे अपना खून बहाया है। मेरे भाई चौधरी धर्मसिंह राठी के सब से बड़े सुपुत्र फलाइंग लेफ्टीनेंट सुरेन्द्र राठी का जहाज बंगला देश मे हिट हुआ और उन्होंने अपने जीवन का बलिदान दिया । इस वास्ते बंगला देश के साथ मेरा बहुत घनिष्ठ संबंध आ जाता है जब बंगला देश का जिक्र आता है उस वक्त मेरा भी मन भर आजा है क्योंकि वह जवान सिर्फ मेरा बच्चा ही नही था मेरे लिए एक भाई और दोस्त भी था। हवाई फौज मे सबि से खतरनाक मिशन सरवेलेंस का होता है और उसकी ड्यूटी इसी मिशन पर थी। जितनी हिम्मत और हौंसले से बंगला देश की लिब्रेशन मे उसने कुर्बानी दी इससे हमारे देश का नाम ऊंचा होता है। जहां मैं अपने भाई और बच्चे की कुर्बानी को याद करता हूं वहां मेरे उन हजारो भाईयों की कुर्बानी को भी नही भुलाया जा सकता है जो कि इस देश के लिए शहीद हुए है। उनकी तारीफ के गीत यहां चंद

मिनटों मे नही गाए जा सकते , उनके गीत तो आने वाली नस्लें गाती रहेगी।

स्पीकर साहब, पिछले इजलास मे जब हमारी सरकार ने बंगला देश के नाम से टैक्स लगाया था, मैंने एक बात कही थी कि हरियाणा सरकार तो बंगला देश को आज ही रिकोग्नाईज कर रही है जिसने कि अपने कागजात मे बंगला देश का नाम जोड़ दिया है। यह कितनी दूर की बात सोची थी । हरियाणा के निवासियों को, यहां की असैम्बली को और यहां की सरकार को दृढ़ विश्वास था कि बंगला देश अवश्य कायम होगा। हरियाणा सरकार तो रिकोग्नाईजेशन की बात आज रैजोल्यूशन की सूरत मे ला रही है लेकिन एक तरह से रिकोग्नाईज तो हमने बंगला देश लिखकर उसी दिन कर दिया था। जो कुछ बंगला देश मे जुल्म तशदद हुआ है उसके बारे मे मे तो डाक्टर मंगल सैन और दूसरे भाईयों ने काफी कहा है। मैं ज्यादा उस चीज मे नही जाते हुए एक बात जरूर कहूंगा कि देश मे इस पाकिस्तानी कंफ्लिक्ट के समय जो यूनिटी और एकता आई वह एक सराहनीय बात हैं हम लड़ा नही चाहते थे लेकिन पाकिस्तान ने हमे मजबूर किया कि हम अपने असूलों की रक्षा के लिए लड़ाई लड़े। एक तरह से पाकिस्तान ने हमारे ऊपर लड़ाई थोपी थी। पानीपत मे पंडित रामधारी की पब्लिक मीटिंग मे मैं मौजूद था और हमने पब्लिकली कहा था कि हम सरकार के साथ है, हम किसी तरह भी बहर नही जाएंगे। देश के ऊपर अगर आपत्ति आती है तो हम एक है, घर मे

हम लड़ सकते है लेकिन अगर कोई बाहर का देश हमारे ऊपर हमला करता है तो हम एक होकर लड़ेंगे।

मै एक बहुत जरूरी बात सरकार के नोटिस मे लाना चाहता हूं और सरकार से प्रार्थना करना चाहता हूं कि इस चीज की इन्क्वायरी जरूर कराए। यह लड़ाई 1962 मे आई, 1965 मे आई, 1971 मे आई और आगे भी आ सकती है। मैंने पंडित रामधारी गौड़ के सामने भी यह बात कही थी। तीन तारीख को लड़ाई शुरू होती है और छह तारीख तक पानीपत के एस.डी.एम. ने नागरिक सुरक्षा का कोई इंतजाम नही कियां उसने यह कहा कि मेरे पास कोई आर्डर नही, मैं कोई प्रबंध नही कर सकता और न मैं लोगों को बुलकार काई कौंसिल बना सकता हूं और आज तक वहां किसी भी डिफैंस कौंसिल की स्थापना नही हुई। स्पीकर साहब, वहां पर एक ग्रिड स्टेशन है। सारी दिल्ली को, राजस्थान को बिजली वहां से सप्लाई होती है । अगर बदकिस्मती से ग्रिड स्टेशन पर पाकिस्तान का हमला हो जाता तो यह ब्लैक आउट करने की जरूरत ही नही रहती ब्लैक आउट अपने आप ही हो। जाता स्पीकर साहब, मैं सरकार को आगे के लिए कहना चाहता हूं। जिस जगह किसी टाईम भी आपति आ सकती हो तो ऐसी जगह से सरकार को लापरवाह नही होना चाहिए। मैं आज भी इस सरकार को कहूंगा कि वह इस चीज की इन्क्वायरी करवाये। मैं एक बात और कहूंगा कि यह जानते हुए भी कि मेरे बच्चे ने इस युद्ध मे अपनी शहादत दी, फिर भी इस सरकार ने आज तक उसके

लिये कुछ नही किया । इस सरकार ने कहा था कि देश की रक्षा करते हुए इस प्रान्त का जो जवान शहीद होगा उसके परिवार को सहायता दी जायेगी। लेकिन यह बड़े अफसोस की बात है कि आज तक इस सरकार ने कुछ नही किया। वैसे हमें किसी प्रकार की सहायता की जरूरत नही है। लेकिन सरकार को मान की सूरत मे कुछ न कुछ जरूर करना चाहिये था चाहे फिर हम उस सहायता को डिफेंस फंड मे ही दे देते। यह सिर्फ हमारा ही मामला नही है बल्कि हमारे और भी कई साथी है जिनके बेटों ने कुर्बानियां दी है।

मैं सरकार को एक और सुझाव दूंगा कि इस रैजाल्यूशन के जरिये जहां हम बंगला देश के वासियों को मुबारिकबाद दे रहे है वहां हमें उन देशों को भी मुबारिकवाद देनी चाहिए जो डैमोक्रेसी और सैकुलरजिम मे विश्वास रखती है। इस रैजोल्यूशन मे अगर हम यह भी ऐड कर दे, और धन्यवाद करदें The moral spoort of democratic Countries and republics which has come in this case. मै सरकार से कहूंगा कि रैजोल्यूशन मे ये शब्द भी ऐड किये जाये। अगर हम ऐसा नही करते है तो यह हमारी बहुत बड़ी भूल होगी।

Mr. Speaker: Quite a number of Hon. Members have spoken and we have taken a good deal to time. I suggest that if some of the Hon. Members are still keen to participate in this discussion, then each one may may take about three/four minutes. (Interruptions by Chaudhri Jai Singh Rathi and others), You have taken too much time.

चौधरी जयसिंह राठीः स्पीकर साहब, इस मामले पर पार्टी का सवाल न रखे क्योंकि हर आदमी अपने सैंटीमेंटस रखना चाहेगा।

Mr. Speaker: The point is that we shall lose the thing.

प्वांयट यह है कि इस खबर को प्रैस कवरेज नही मिलेगा। Therefor, i would request all Hon. members to make it as brief as possible.

श्री एस.पी. जयसवाल (करनाल): स्पीकर साहब, हम अपनी फौजों की बहादुरी की जितनी भी तारीफ करें वह कम है। जिस तरीके से हमारी फौजों ने यह दुनिया की हिस्टरी मे बे–मिसाल है। आज तक कभी ऐसा नही हुआ कि इतनी बड़ी तादाद मे किसी फौज ने हथियार डाले हो। स्पीकर साहब, जो हमारी फौजों ने कुर्बानियां दी है जो हमारे सिवलियंज ने ड्राइवरों की या और शकल मे कुर्बानियां दी है उनकी सराहना जितनी भी की जाये उतनी कम है। स्पीकर सहाब, जो कुछ हमारी फौजों ने किया है यह तो जैसा कि चौधरी रणबीर सिंह ने कहा इतिहास मे सुनहरी लफ्जों मे लिखा जाने के काबिल है और लिखा भी जरूर आयेगा। इसके इलावा रैजाल्यूशन मूव करने वालों को मैं एक बात कहना चाहता हूं कि जो इसके अन्दर संशोधर किये गये हे वे एक्सैप्ट किये जायें और वे भी इसमे शामिल किये जाये।

श्रीमती चन्द्रावती (लोहारू): स्पीकर साहब, ने जो प्रस्ताव हमारे सामने रखा है मैं इसका समर्थन करने के लिये खड़ी हुई हूं। हमारे शहीदों की कुर्बानियों ने हमारे शहीदों की कुर्बानियों ने हमारे देश की प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की लीडरशिप मे जो गौरव इस देश को दिया हे उसके लिये मैं उन वीरों को अपनी श्रद्धांजलि पेश करती हूं। अंग्रेजों को मैं बहुत पसंद करती हूं लेकिन एलिजावैथ फर्स्ट के वक्त अंग्रेजों को सबसे ज्यादा पड़प्पन मिला उन्होंने स्पेन के आरमेडे को हराया । जैसे एलिजाबैथ फर्स्ट के समय मे अंग्रेजों ने तरक्की की मेरी भावना आती है कि इसी प्रकार हमारा देश भी मिसेज गांधी की लीडरशिप मे तरक्की करे। किसी भी देश की तरक्की के लिये कुर्बानी की जरूरत होती है और कुर्बानी के बगैर कोई देश जीत नही सकता। मुझे 'बार एंड पीस' के करैक्टर की बात याद आ गई उसमे कहा गया है कि जब तक इंसान की रगों मे गर्म खून दौड़ेगा जब तक लड़ाई बंद नही होगी। यह बात ठीक है कि जितनी भी लड़ाईयां हुई है ज्यादातर अन्याय को दबाने के लिये हुई है। जिस तरह से ढाका मे बहिनों और बेटियों पर अत्याचार हुए है और इन्टलैक्युअलज को मौत के घाट उतारा गया है मै समझती हूं यह इतिहास मे काले अक्षरों मे लिखने वाली बाते है। स्पीकर साहब, मैं आपके जरिये कहना चाहती हूं कि हमें गवर्नमैंट आफ इंडिया को लिखना चाहिये कि शहीदों के परिवारों को वह जमीन दे चाहे पांच बीघे ही दे। जब युद्ध होता है तो जमीन के चप्पे चप्पे के लिए लड़ाई होती है। इसलिये जो जमीन रखने वाले लोग है वे

72 किस्म के सिपाही होते है ओर 72 किस्म की कुर्बानियों का उनमे मादा होता है, इस धरती के प्रति प्यार होता है। और मैं समझती हूं कि यह प्यार हर भारतवासी की रगों मे बसता है। इसलिये जो भाई शहीद हुए है उनको जमीन जरूर देनी चाहिये। अगर ज्यादा न दी जा सके तो पांच एकड़ या दो एकड़ जरूर देनी चाहिये क्योंकि उसे जमीन के प्रति एक गौरव है। बार मे शहीद होने वाले को, देश के लिये कुर्बानी देने वाले को और लड़ाई मे वीरता दिखाने वाले हमारे किसी भी नौजवान को, किसी भी अफसर को जो जमीन मिलेगी मैं समझती हूं कि वह एक गौरव की बात होगी। आज हमारे जनरलज ने एक नई दिशा कायम की है। दुश्मन के एक लाख सिपाहियों का एक साथ सरैंडर कर देना कोई कम महत्व की बात नही है। इन शब्दों के साथ मैं शहीदों को श्रद्धांजलि पेश करते हुए अपना स्थान लेती हूं।

(इस समय बहुत से सदस्य बोलने के लिये खड़े हुए जिनमे श्री रणधीर सिंह और श्रीमती शारदा रानी भी शामिल थी)

श्री अध्यक्षः श्री रणधीर सिंह फर्स्ट।

श्री रणधीर सिंहः स्पीकर साहब..

श्री बनारसी दास गुप्ताः स्पीकर साहब, श्रीमती शरदा रानी हमारी पार्टी की चीफ व्हीप है और ये कई बार बोलने के लिये खड़ी हुई है मगर इनको बोलने का मौका नही दिया गया।

मेरी प्रार्थना है कि कम से कम इस चीज का जरूर ध्यान रखा जाये।

Mr. Speaker: I have been noticing that she has been standing much earlier.

श्री रणधीर सिंह (घरौंडा): अध्यक्ष महोदय, आज सदन के नेता ने बंगला देश के नव निर्माण पर जो प्रस्ताव रखा है मैं उसके समर्थन मे कुद शब्द कहने के लिये खड़ा हुआ हूं । बंगला देश की सात करोड़ जनता ने अपने चुने हुए नुमायंदों की सरकार बनाने मे जिस प्रकार की धांधली, जिस प्रकार के अत्याचार और हनन करने के लिये प्रयास किये वह दुनिया के अंनदर एक अलग किस्म की ही मिसाल है। अध्यक्ष महोदय मुझे वह दिन याद आते है जब सत्य के हक मे बात करते थे। इसी संबंध मे एक बात मेरे सामने आती है और वह सत्य के शब्द आज भी हमारे सामने जुझारते है जबकि ईसा मसीह लोगों को सत्य का मार्ग बता रहे थे और बहुत से लोग उनको पैगम्बर मानने लगे लेकिन उस समय की सरकार ने उनको सूली पर लटका दिया था। जब उनको सूली पर लटकाने लगे तो ईसामसीह की माता उन के सामने खड़ी होकर रोने लगी। उस समय ईसा मसीह ने अपनी माता को कहा कि आप रो क्यों रही हो, मै तो आज दुनिया मे मिसाल कायम करने के लिए आया हूं और उन्होंने यह अलफाज कहे थे:—

"Man must go from doubt to despair,

till out of despair he sees the plan

Sorrowful days must testifiy

his truth by his daily bread.

Birds in the air have their nests

but his mind knows no rest

becouse who wins the death

he wins the truth."

आप वही मिसाल हमारे सामने आई है, शेष मुजीबुर्रहमान ने आज दुनिया के अंदर आजादी की प्रतिष्ठा कायम करम रखने के लिए और जो लोगो पर जूल्म हो रहा था उससे उनको नजाम दिलाने के लिए जो बंगला देश आंदोलन किया उस कि लिये उनको बहुत तकलीफे सहनी पड़ी। यह बात भी सत्य है कि हिन्दुस्तान के वीर बहादरों ने जिस प्रकार से कुर्बानी करके उस बंगला देश को आजाद करवाने का काम किया उस के लिए हमारे देश के सब फौजी और हमारी प्रधान मंत्री साहिबा बधाई की पात्र है। मैं इस प्रस्ताव मे सदन का सहयोग देना चाहता हूं और निवेदन करता हूं कि जिन लोगों ने कुर्बानी दी है, जो शहीद हुए है, उनके परिवारों को जितनी भी मदद की जाए उतनी ही थोड़ी है। जो उनको जमीने देने का सुझाव दिया गया मैं उसका पूरा पूरा समर्थन करता हूं। मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हुआ आप से प्रार्थना करता हूं कि इसको पास करके सैंट्रल गवर्नमैंट के द्वारा शेख मुजीबुर्रहमान तक पहुंचाया जाए ताकि उन को इस बात का पता लगे कि जिस प्रकार हिन्दुस्तान के लोगों ने उन के देश

को आजाद करवाने के लिए बलिदान दिया है वे आगे के लिए उनके वाथ पूरा पूरा सहयोग देने के लिए तैयार है। तो मैं इन शब्दों के साथ इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

मुख्य संसदीय सचिव (श्रीमती शरदा रानी): आदरणीय स्पीकर सहाब, हमारे सामने जो यह प्रस्ताव है इस समय, मे कोई संदेह नही, इसके विवादास्पद होने की.....

Mr. Speaker: No. talking please.

श्रीमती शरदा रानी: इसमे विवाद की कोई संभावना नही, न ही गुंजाइश है और न ही विवादास्पद किसी ने इसको माना है। किन्तु स्पीकर साहब, अभी अभी यहां से हमारे भाई कह रहे थे कि इसी आधार को लेकर हमारे बंगला देश मे हमारी विजय हुई और भारत का इतना नाम हुआ और भारत इससे काफी शक्तिशाली हो गया, इसी बात को लेकर के कही–कहीं तो हमारे चीफ मिनिस्टर साहब कुछ इस प्रकार के कुछ इस प्रकार के स्टेटमेंट देते है और कहीं वे यह कहते है कि हम इसके ऊपर इलैक्शन लड़ रहे है। जहां तक इलैक्शनों का सवाल है सबको मालूम है कि सन् 72 इलैक्शन का समय है, पांच साल के बाद सारे भारत मे इलैक्शन होने थे, वह 72 का ही समय आया है और यह चांस की ही बात है कि वह लड़ाई के बाद ही आ गया है और उन्होंने यह भी कहा कि हमारे मुख्य मंत्री ने यह कहा है कि जो कांग्रेस के खिलाफ बोलेगा उसको अमरीका का एजेंट समझना चाहिये। जहां तक स्पीकर साहब, मेरा ख्याल है, हमारे मुख्य मंत्री

जी ने यह तो कहीं नही कहा है लेकिन उन्होंने एक बात जरूर कही है कि अगर इन सारी बातो को देखते हुए कोई आदमी इंदिरा जी की बुराई करता है इस देश के अन्दर तो उसे अमेरीका का एजेंट माना जा सकता है और समझती है स्पीकर साहब, यह बात बहुत हद तक या बिल्कुल ही सत्य मानी जा सकती है। आप जानते हैं कि हमारा देश धर्म प्रधान देश है। हमारी इसमे अपनी धार्मिक शिक्षाएं है और इनके बने हुए हमारे अपने संस्कार है। जो मानवता और धर्म के ऊपर आधारित है, जो हमेशा हमको साहस देते रहे है, मानवता और धर्म के ऊपर चलने की प्रेरणा देते रहे है। आपको मापूम है जो हमारा गीता ग्रन्थ है और वह अब से कई हजार वष्र पूर्व रचा गया था। उसके अन्दर एक श्लोक आता है।

''यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।

अभ्युत्थानम् अधर्मस्य तदात्मानम् सृजाम्यहम्।''

कि हे भारत जब जब धम्र की ग्लानि होगी और अधर्म का उत्थान होगा तब तक मैं इस प्रकार की आत्माओं का सृजन कंरूगा जो इस संसार से इस अधम्र का नाश करेंगे। स्पीकर साहब, जो यह एक समय आया कि जब इसे संसार के ऊपर संसार की मानवता के ऊपर इस प्रकार के जुल्म हुए, इस प्रकार के कष्ट हुए कि जिन के पीछे नादियों के यहूदियों पर किए गए जुल्म, चंगेजखां के जुल्म सब फीके पड़ जाते है। कौन सा ऐसा इतिहास मिलेगा जहां तीन–तीन चार–चार लाख आदमियों का कत्लेआम

कर दिया हो, जहां पर इतनी बड़ी तादाद के अंदर लोगों को देश निकाला दे दिया जाए, इस प्रकार के जुल्मों की जो गाथा है, जहां पर स्त्रियों के ऊपर इतने अत्याचार किए हों, तो इस प्रकार के जुल्मों को जिन्होंने नाथ किया और उस इतिहास को पुनरावृति कर दिया जिसने हमेशा साहस दिया और यही नहीं उन्होंने यह सिखा दिया इस संसार को कि अगर संसार मे रहना चाहते हो तो धर्म के राज्य की स्थापना करके तुमको जीना होगां जुल्मों के ऊपर चलने वाले राज्य, डिक्टेटरशिप के ऊपर चलने वाले राज्य, तानाशाही के ऊपर चलने वाले राज्य अपनी मनमानी के ऊपर चलने वाले राज है, वे इस संसार मे कभी टिक नही सकेंगे। स्पीकर साहब, हम बहुत दिनों से पूजा करते आ रहे है, दुर्गा की शक्ति उनके गुणों के कारण। शासद उन्होने भी ये कारनामे और दुनियां को इतना बड़ा सबक नहीं दिया होगा। पश्चिम के लोग पूजा करे है जौन आफ आर्क की कि उनके इशारे पर हमाएं बदल गई और जो शत्रु था वह परास्त होकर भाग गया। तो स्पीकर साहब, आज हिन्दुस्तान के अंदर भी इसी प्रकार से सारा हिन्दुस्तान और न सिर्फ सारा हिन्दुस्तान जौन आफ आर्क के इशारे पर तो शायद उन्ही का देश और उनकी सेनाएं चली थी लेकिन यहां पर एक इस प्रकार की महीला अवतरित हुई धर्म संस्थापना अर्थात् सम्भवामी युगे युगे के अनुसार इस प्रकार का अवतार आप कह सकते है कि जिसने न सिर्फ हिन्दुसतान की जनता के दिमाग को बदल दिया, हिन्दुस्तान की फौजी के अन्दर वह शक्ति भर दी, बल्कि संसार को इस प्रकार से, संसार की

विचारधारा को इस प्रकार से बदल किया कि आज सारे संसार को एक नए सिरे से सोचने पर मजबूर होना पड़ेगा अगर इस प्रकार की शक्ति के लिये अगर इस प्रकार की देवी के लिये, इस प्रकार के शब्द कहे जाएं कि अगर कोई आदमी उसकी बुराई करता है तो उसे अमेरीका का एजेंट ही जानना चाहिये, तो मैं समझती हूं कि यह अनुचित नही है और यह ठीक ही है और हर आदमी को इस पर सोचना चाहिये। यह कहते हुए स्पीकर साहब, जो इस के अन्दर तबदीली बाते है हमारी ओर से हम उन को पूरी तरह से समर्थन करते है और बाकी जो सब सदस्यों ने जो इसके साथ सद्भावना व्यक्त की है, मैं उनका धन्यवाद करती हूं। (जय हिन्द)

विकास मंत्री (श्री प्रभु सिंह): स्पीकर साहब, मैं बोलने से पहले जिस ख्याल से खड़ा हुआ था वह छेड़–छाड़ का नही था। यह कोई मजाक का प्रस्ताव नही है बल्कि एक सीरियस नेचर का प्रस्ताव है और हकीकत से ताल्लुक रखता है, इस लिए मेरे भाई कोई छेड़ वगैरह की बात न करें तो बेहतर है। स्पीकर साहब, मैं इसका समर्थन करने के लिए खड़ा हुआ हूं। इस मे चमक है भारतीय एकता की और इस बात की कि हम मजहबों मिल्लत से उठ कर सब से पहले भारतीय हैं हमारी उस एकता की चमक से जो याहिया खाद गीदड़ की सवारी पर शेर के शिकार को आया था वह गीदड़ की सवारी को छोड़ कर भाग गया। मैं ज्यादा न कहता हुआ सिर्फ एक ही बात कह दूंगा कि उस का तेरवें दिन फतिहा पढ़ दिया गया। हिन्दुस्तान के रिवाज के

मुताबिक तेरवें दिन तेरहवीं होती है तो हिन्दुस्तान ने उस की तेरहवीं कर दी है। अब वह वापिस जिन्दा मुड़ कर नही आवेगा। जब वह जंग चल रही थी तो हम लोगो मे जाते थे ओर उनको मिलते थे, उनसे उनकी तकलीफें पूछते थे और जिन घरों के फौजी पड़ रहे थे उन घरों मे जा जा कर उनकी तकलीफे पूछते थे और पब्लिक से सहयोग के लिये अपील करते थे । लोग हम से कहते थे कि सातवां बेड़ा चल पड़ा है अब क्या होगा ? हम कहते थे कि सातवें बेड़े की क्या बात करते हो यहां तो सोल्हवां बेड़ा तैयार बैठा है। भारत के शूरवीरों ने, भारत के लोगो की एकता ने दुनिया को बता दिया है कि भारत इस संसार मे अपनी किस्म का अलहिदा देश है। शायद बड़े–बड़े देशो को इस बात का पता नही था कि भार की महानता, शक्ति, एकता और भारतीय शूरवीरों की वीर गाथायें आज भारत मे जिन्दा है, मरी नही और भारत के वीरों की खून की गर्मी जो थी उसमे कमी नही हुई है। फिर कुछ लोग कहने लगे कि अब भुट्टो आ गया है। मैंने कई जगह यह कहा कि याहिया खां का तो वाहिया खां बना दिया और 13 दिन मे उसका तेरवां कर दिया मगर भुट्टो का भुर्ता बनेगा। मैंने कहा कि देख लो कि एक तरु तो अच्छे नेता की पहचान यह हे कि लोग उसे सोने चांदी से तोल रहे है। भुट्टों आ गया तो क्या कर लेगा ? कहता है कि लड़ाई हजार साल तक होगी। तो मैंने इस बारे मे कई जगह कहा कि हजार साल मे से 999 साल तो लड़ाई बंद रहेगी और लड़ाई एक साल भी नही चलेगा। अगर वह हमारी तरफ नजर उठायेंगा तो पाकिस्तान का नाम दुनिया के

नक्शे से मिट जायेगा। भारतीय वीरों की वीरता, भारत के लोगो की एकता और बहन इंदिरा जी की रहनुमाई से यह चमत्कार होगा, आने दो उसे भीं मैंने लोगों से कहा कि एक मोटी बात सुन तो लो जो गांव मे कही जाती है। एक बुढ़िया के बारात आने वाली थी लेकिन उसे आने मे देर हो गई। बुढ़िया छत पर चढ़ कर देख रही थी कि बारात क्यों नही आई थी कि बारात क्यों नही आई और परेशान होकर कह रही थी कि कब जायेगी। वहां कुछ चौधरी रणबीर सिंह जी जैसे बैठे थे। वे कहने लगे ताई क्या देख रही हो ? बुढ़िया ने कहा कि बारात देख रही हूं आई है या नही आई। वे कहने लगे ताई थोड़ा ठहर ले तेरे जंज जरूर आयेगी घबरा नही। तेरे चावल भी ख जायेगी, बूरा भी खा जायेगी, तेरी दाल भी चाट जायेगी और कल तेरी छोकरी भी ले जायेगी और फिर तु रोयेगी भी। (हंसी) मैंने कहा भुट्टो आये या कोई और आये भारतीय शूरवीरों के सामने कौन खड़ा हो सकता है। यह तो वही बात होगी कि वे दाल भी पी जायेंगे और छोहरी भी ले जायेंगे। आज भारत को ऐसे लीडर मिले है जिनको संसार की नीति मालूम है। जिस तरह भारत मे विदुर और चाणक्य राजनीति मे निपुण थे उसी परह आज भारत मे विदुर और चाणक्य की कमी न ही है। भारत ने तो दुनिया का ज्योग्राफी बदल कर रख दिया और बहिन इंदिरा जी ने सारी हिस्टरी को बदल दिया है। ऐसे भारत के सामने कौन खड़ा हो सकता है। इन शब्दों के साथ हमारे जो फौजी जवान भारत की आन के लिये, शान के लिये और रक्षा के लिये शहीद हुये है उनको श्रद्धांजलि पेश करता

हूं और बंगला देश की आजादी के लिये जो शहीद हुये है उनको श्रद्धांजलि पेश करता हूं और हमारे लीडर आफ दी हाउस ने जो प्रस्ताव रखा है उसका समर्थन करता हूं। इसके साथ ही मैं यह कहता हूं कि उधर से कुछ ऐसे वैसे विचार आये है बहके हुये दिमाग से कुछ बात निकल ही जाती है इसलिये मैं उन भाईयों से कहूंगा कि इस प्रस्ताव पर बोलते हुये जो दूसरी किस्म की बातें उन्होंने कही है उनको वे विदड्रा कर लें ताकि यह प्रस्ताव बगैर किसी कंट्रावर्सी के पास हो कर भेजा जाये।

चौधरी जय सिंह राठीः स्पीकर साहब, मैंने एक सजैशन दी थी कि इस प्रस्ताव के साथ ये अलफाज भी शामिल कर लिये जायेः—

Like minded countries who have helped for saving democracy, secularism and socialism in the world and gave moral support. अगर वे इस बात को मान जायें तो मेरी यह अमैंडमेंट मूवड समझी जाये और इस मोशन मे जोड़ ली जाये।

चौधरी चांद राम (बबैन, अनुसूचित जाति): स्पीकर साहब, यह तो प्रस्ताव है इस पर सारा हाउस एक मत है और इसके ऊपर काफी कुछ कहा जा चुका है। इस प्रस्ताव के दो मुख्य भाग है। पहले भाग मे हम ने भारतीय सेनाओं के प्रति उनकी बहादुरी के लिये गर्व किया है और उनके शौर्य तथा उनके सहासपूर्ण कारनामों के लिये आभार प्रकट किया है और दूसरा भाग हमें बंगला देश मे हुई क्रांति की याद दिलाता है कि किस

तरह क्रांति चलती है और किस तरह से वहां पर चली है। इससे तो ऐसा मालूम होता है जैसे पाकिस्तान की पतंग कट गई हो और अब वह इस तरह का सुपना देख रहा है कि शायद उनके साथ कोई न कोई लिंक रहा जायें लेकिन मुजीब साहब ने कह दिया है कि अब उन लोगों से उनका क्या संबंध हो सकता है जिन्होंने इतने अत्याचार बंगला देश के लोगों पर किये है, उनकी बहुत बेटियां की इज्जत को लूटा है, लाखों की तादाद मे बच्चों, बूढ़ों मर्द औरतो का कत्लेआम किया है और वहां के बुद्धिजीवियों को चुन–चुन कर मारा है। बताया है कि किस तरह से उनके एक पुराने साथ और साबिक वजीर को 24 दिन तक टौर्चर किया गया है और किस तरह से उसके पहले नाक, कान बाजू, टांगे वगैरह बारी बारी काटे है। आप देखें किस तरह से उन लोगों पर पाकिस्तानियों ने अत्याचार किये लेकिन उन लोगों ने माफी नही मांगी इस तरह कि क्रांतिकारिता की रूह शेख साहब ने उन लोगों में फूंकी हुई थी। शेख साहब ने अपनी बीबी से विदा लेते हुये कहा कि मैं माफी नही मांगूंगा और मांगूंगा तो बंगला देश के लोग दुनिया के सामने अपना मुंह नही दिखा सकेंगे नही दिखा सकेंगे। यह है एक मिसाल कि किस तरह से लोगो मे क्रांति की रूह फूंकी जाती है और देश मे क्रांति लाई जाती है। तो मैं अर्ज करना चाहता हूं कि हमारी सेनाओं ने ऐसी शूरवीरता दिखाई है और अपने शौर्य के वह जौहर दिखाये है जो हिस्टरी मे सुनहरी हरफो मे लिखे जायेंगे। इसमे शक नही कि हमारी जो प्रधान मंत्री है इंदिरा गांधी जी उन्होंने राजनीति मे बहुत निपुणता दिखाई है

और देश की सही रहनुमाई की है। उन्होने कहा था कि बंगला देश का कोई पालिटिकल हल होना चाहिये आखिर मे वही हो कर रहा। रशिया का भी यहां जिक्र किया गया है। हम ने उन से 9 अगस्त 1971 को बीस साल की संधि की थी और उस देश ने जो इस मौके पर हमें सहायता दी है उसे देखते हुए मैं चाहता था कि उसका जिक्र भी प्रस्ताव मे हो जाता तो अच्छा था लेकिन ऐसा हुआ नही । शायद उस देश के प्रति देश के प्रति देश की पार्लियामैंट मे आभार प्रकट हो चुका है। रशिया के बारे मे कहा जाता रहा है कि अगर हमारा उनसे संबंध हो गया तो शायद हम उसके सैटेलाईट बन जायेंगे लेकिन आज मैं समझता हूं कि उस देश ने बगैर किसी शर्त और रिजर्वेशन के हमारी सहायता की है। आज ही नही आज से पहले भी की थी जब कश्मीर के मामला मे उस ने कई बार हमारे हक मे वीटों का इस्तेमाल किया और अब भी इस मामले मे इन पांच–सात दिनों मे तीन चार बार वीटों का इस्तेमाल किया । उसके बाद अमेरिका का बहरी बेड़ा आया तो भी रशिया ने अपना बहरी बेड़ा उस के पीछे लगा दिया। इन बातों को हम भूल नही सकते। जैसे रशिया ने अपना बहरी बेड़ा उस के पीछे लगा दिया। इन बातों को हम भूल नही सकते। जैसे शारदा जी ने कहा इंदिरा जी वाकई शक्ति थी, दुर्गा थी, उस वक्त लड़ाई के दिनों मे बहुत लोगों ने कहा था कि वे दुर्गा है। चीफ मिनिस्टर साहब ने एक जलूसा मे कहा था, और उसमे कोई एतराज की बात नही है। उस का कुछ चर्चा देहली मे प्रैस कान्फ्रैंस मे भी हुआ। मैं कहता हूं कि हमारी प्रधान मंत्री महोदया

ने इतनी महानता प्राप्त कर ली है कि अगर वाकई चीफ मिनिस्टर साहब वाली बात कह दी जाये कि अगर वह अमेरिका मे जाकर श्री निक्सन के मुकाबले मे इलैक्शन मे खड़ी हो जाये तो जरूर कामयाब हो सकती है।

श्री अध्यक्षः चौधरी साहब, काफी लम्बा हो गया है.....

चौधरी चांद रामः मुझे बड़ा अफसोस है ब्रिगेडियर साहब, कि किसी के मामले मे ऐसी बात नही आई मैं इतना अनपढ़ तो हूं नही बड़ा सौल्य ओकेयन है। मैं पहले ही बंद करने के लिये सोच रहा हूं....

श्री अध्यक्षः काफी टाईम हो गया है। मैंने सबसे ही रिक्वैक्ट की है।

चौधरी चांद रामः मैंने तो देखा नही।

श्री अध्यक्षः आप उस वक्त यहां होंगे नही।

चौधरी चांद रामः मैंने सिर्फ दो तीन बातें कहनी है और मैं कह रहा था कि हक ट्रिब्यूट पे कर रहे है बंगला देश के अभ्युदय के लिए लेकिन अपने देश की स्थिति की तरफ ध्यान ही नही देते। इस देश मे जो लोग असूलों की बात करते है और कहते है कि हमारे देश का मन्तव्य यह है, आश्य यह है कि उनको देश मे क्लास लैस सोसायटी बनानी चाहिए जिसमे हर धर्म के लोग शामिल हो। सबसे पहले हिन्दुस्तान ने लंगा पर फतह पाई

थी, पता नही वह फतह हिस्टोरिकल थी या इमेजिनरी थी, लेकिन यह ठीक है कि वह हमारी पहली फतह थी और उसके बाद यह दूसरी फतह है। इस फतह ने हमें दुनिया मे चौथे नम्बर पर लाकर खड़ा कर दिया है। इसका कारण हमारी प्राईम मिनिस्टर की दूरदर्शिता है। जहां हम बंगला देश के लिए ट्रिब्यूट पेश कर रहे है वहां सैन्ट्रल लीडर्ज को भी पेश कर रहे है। इसके साथ ही साथ हमको चाहिए कि हम अपने जीवन मे सादगी लाएं, शानो शौकत जिन्दगी को छोड़े। क्यांकि यह उन बीरो के लिए जरूरी है जिन्होंने देश के लिए बलिदान दिया और अपनी जाने गंवाई। हम सब का यह फर्ज बनता है। इसलिए गवर्नमैंट फण्डज मे, पईवेट लाईफ मे, शादियों मे, जहां कहीं भी गुंजाइश हो, अगर खर्चे मे किफायत कर सकती है तो बहुत ही अच्छी बात है। लेकिन देश की नीति को बरकरार रखने के लिए हमको बहुत बड़े उद्यम की जरूरत है। इनटर्नली हमें सतर्क रहना चाहिए और बेचैनी को नही बढ़ाना चाहिए। देश मे जो आर्थिक स्तर पर जो बेचैनी है उस बेचैनी को दूर करने के लिए हमें देश से गरीबी दूर करनी है। अगर गरीबी हटाने के मामले में हम कामयाब हो गये तो मैं समझता हूं कि बहुत बड़ी बात होगी। हम डिफेंस फण्ड इकट्ठा कर रहे है, ठीक है खुशी से देना चाहिए, इसमे दो राय नही हो सकती। मैं दो–तीन दौरों पर गया, मैंने देखा स्कूल के लड़कों से जमात के हिसब से पैसे लिए जाते है। पहली जमात से एक रूपया, दूसरी से दो रूपये, चौथी से चार रूपये और दसवीं से दस रूपये उगाही कर रहे है। ठीक है, लें लेकिन सका हिसाब तो

दे। जमींदार भी देते है, हरिजन तबका भी पांच पांच रूपये देता है, इस उगाही का कोई न कोई हिसाब किताब तो होना चाहिए। मैं नुक्ताचीनी के नजरिए से नही कहता, सुधार के नजरिए से कहता हूं।हम जानते है कि हर पांच या सात साल के बाद लड़ाई लड़ना हमारा फीचर बन चुका है। इसका हमें मुकाबला करनाहै। मैं बड़े अदब से गुजारिश करता हूं कि जो रूपया इकट्ठा किया जाता है उसकी रसीद जरूर जारी करें। मैंने देखा बहुत सी जगहों पर रसीद जारी नही होती, अगर रसीद जारी कर देंगे तो आगे के लिए भी रास्ता ठीक होगा। स्पीकर साहब, यहां जमीन का जिक्र किया गया, मैं इस बात का समर्थन करता हूं। 1965 की लड़ाई मे, सरदार प्रताप सिंह कैरों के टाईम मे जल्से हुए।

Shri Bansi Lal: On a point of order, Sir, He is taling irelevant. He should be stopped.

Mr. Speaker: Let him finish. Chaudhri Sahib, you have taken 15 minutes.

चौधरी चांद रामः मैं आप ही खत्म कर रहा हूं । मैं जिक्र कर रहा था कि 1965 मे पंजाब की समूची सरकार के टाईम मे, राजस्थान ने बहादुरों को एक लाख एकड़ जमीन देने का ऐलान किया था क्योंकि हमारे यहां जमीन नही थी । इसी तरह से एक लाक्ष एकड़ का मध्यप्रदेश सरकार ने ऐलान किया था। चीफ मिनिस्टर ने रोहतक के अन्दर जमीन देने के लिए ऐलान किया था लेकिन हमने कहा था कि हमारे पास जमीन थोड़ी है। इसलिए मैं

सरकार से दरखास्त करूंगा कि बहादुरों को जमीन देने की कोशिश की जाए जो इस लड़ाई मे देश के लिए लड़े है।

मुख्य मंत्री (श्री बसी लाल): स्पीकर साहब, हाउस मे जो आफिशियल रैजोल्युशन लाया गया है इस पर काफ देर से सदन मे बहस हो रही है। मैं आपके जरिए सदन को बता देना चाहूंगा कि हमारी प्रधान मंत्री ने देश का संचालन बड़ी खूबसूरती के साथ किया है। हमारी विधान सभा के विरोधी पार्टी के नेता और कुछ सदस्य, वक्त से पहले हो यह नारा लगाते थे कि बंगला देश को रिकोगनाईज करो। उस समय उन को यह पता नही था या वे जानते नही थे या उनकी समझ इतनी ही थी जिसके कारण न को पता नही था कि किस वक्त देश रिकोगनाईज होता ळे, किस समय क्या कदम उठाना चाहिएं हमारी प्राधान मंत्री ने बार–बार एक बात कही है कि हर चीज को समय के अनुसार किया जाता है। वह समय आया और इन्होंने बंगला देश को आजाद करवाया और उसे रिकोगनिशन दी। इसके लिए हमारी प्रधान मंत्री बधाई की पात्र है। हमारी सेनाएं जो मोर्चो पर लड़ी और बड़ी बहादुरी के साथ लड़ी, दो हफ्ते के अन्दर अन्दर ही कायाबी हासिल की, इसके लिए हमारी सेनाएं बधाई की पात्र है। कुछ देशों ने, खास तौर पर रूस ने, जो हमारा साथ दिया, उनके इस सहायोग के शुक्र गुजार है। हमारी सैन्ट्रल गवर्नमैंट ने भी इस चीज को माना है और हमारी प्रधान मंत्री ने ने उस को इस इशू पर अधाई दी और इस बात को माना है। लेकिन इस रैजोल्युशन पर बोलते

बोलते कुछ माननीय सदस्य अपनी बात नैशनल इशू से दूसरी तरफ डाइवर्ट करने से नही चूके, मैं उनको जवाब देना चाहूंगा। कुछ लोगो ने कहा कि मैने प्रधान मंत्री जी के या कांग्रेस पार्टी के खिलाफ बोलने वालों के लिए कुछ कहा । प्रधान मंत्री के लिए तो मैंने कहा है लेकिन कांग्रेस पार्टी के खिलाफ बोलने वालों के लिए कुछ कहा। प्रधान मंत्री के लिए तो मैंने कहा है लेकिन कांग्रेस पार्टी के खिलाफ बोलने वालो के लिए कुछ नही कहा । प्रधान मंत्री जी ने लिए जो कुछ मैंने कहा वह ठीक कहा, गलत नही कहा, लेकिन कुछ माननीय सदस्यों की यह आदत है कि वे नुक्ताचीनी ही करते है। उनकी आंखों का चश्मा गलत है, उनके दिमाग की रोशनी उल्ट हो चुकी है। ऐसे लोगो को सुल्टी भी बात उल्टी नजर आएगी, यह उनकी आदत बन गई है। कहते है कि चन्दा इकट्ठा हो रहा है लेकिन रसीद नही दी जाती। ये सब बातें बे–बुनियाद, गलत और बे मतलबी हैं ये जानबूझ कर आरोप लगाये गये है जो कि निराधार, बे बुनियाद और गलत है। कई एक माननीय सदस्य बोल रहे थे कि एक लाख एकड़ भूमि मण्य प्रदेश की सरकार ने देनी की थी, एक लाख एकड़ राजस्थान की सरकार ने देनी की थी। लेकिन हमें कोई ऐसी जमीन नही दी गई। जहां तक मध्यप्रदेश का सवाल है उसके बारे मे हमारे पास किसी किस्म का कोई सबूत नही है कि उन्होंने कोई जमीन देती की थी। राजस्थान ने सिर्फ दो हजार एकड़ जमीन देने को माना था लेकिन वह भी नही दी। इस माननीय सदस्यों की यह एक आदत है, बे अपने तरीके की बात अपने ढंग से कहते रहते है।

यह भी कहते है कि मैं फलां गांव मे गया था उस का नाम ही सुन लिया हो, देखा चाहे बेशक न हो। ऐसा कहने की तो उनकी आदत है और बे बुनियाद बातें वे हमेशा कहते रहते है। मैं इन बे बुनियाद बातों का गलत कहता हूं और आपसे प्रार्थना करता हूं कि इस रैजोल्यूशन को पास करें।

Mr. Speaker: Hon. Members a great deal has been said in praise of defence forces and I do not hink much remains for me to add Im however, would like to share your happiness and jubilation on the spectacular victory achieved by our galliant armed forces. There is not doubt and it was truly a brilliant victory and it has put our country on the orld power map. I already see that there is some effect and it is the again a matter of great hapiness and so it should be, when we find that there is a change in the outlook of Nepal and Burma and I am sure that in due course of time or probably very soon we shall receive much mor attention not only from the Asian countries but also from Europe and Elsewhere. There is no doubt that our victory has been against the forces of repression, genocide and barbaeism. I still remember the Bangla Bandhu, Sheikh Mujib-up-Rehmna's statement that in Bangla Desh they lost thirty lakh people during the p;revious nine months. Thirty lakh is a very large number. It amounts to 4 per cent of the propulation and he also daid tht if Hitler were alive today he would have been ashamed to see this genocide, rape, arson and loot. Just to highlight the improtance of thise figures, in our armed forces the percentage of killed is really not even 2 per cent of the strength of the armed forces i.e. 2 per cent of the ten laksh. It

is 02 per cent of the armed forces alone while here it is 4 per cent of the whole population. So, you can well imagine the massacre.

I also want to say a few words about our beloved Prime Minister. I remember the day when the American 4th Fleet sailed into Bay of Bengal. Incidently I am sure you knopw tha the enterprise is a most powerful vessel on earth and even 20 Bombs from it can wipe out what is worthwhile in United Kingdom. Such is its destructive power. So you can well imagine and I personally feel that in such circumstances even the so called brave, iron-willed generals would have been shakken. But here was our Prime Minister who did not finch. She gave the necessary will power and courage to the Naiton to achieve this most brilliant victory. Moreover her action in taking a quick and timely decision of unilateral cease fire was also a Master's stocke.

I am glad that our forces belonging to various parts of the country have done well and what is more importanct and I am more glad to say is that Haryana is right on the top. I, therefore, feel that it is our duty to look after those gallant Officers, J.C.Os and Jawans who wom gallantry awards and families of those deceased who lost their lives in the defence of our motherland. I dully support the suggestion that the gllantry award winners who are not very many in fact they are very few, should get some land and so also the families of the deceased soldiers.

Another mportant point which I would like to bring to the notice of all the Hon. Members is the fact that so far, during this war, there is only on Param Vir Chakra winner

who is alive and his is a Haryanvi Major Hoshiar Singh. I would suggest that the Government and the other organisations should make it a point to honour him in a public Jalsa (Gathering/meeting) either in his own village or in Rohtak town.

So once again I am indeed proud and I share the happiness and jubiliations of the Hon. Memebrs of this House for the most brilliant victory we have achieved. Now I put the resolution to the vote of the House.

Question is—

The House expresses its profound joy on the magnificent victory of our country in the recent war with Pakistan. The counrty has emerged more united and stronger and the principle and policies which wee always followed by our country have been fully vindicated. This is a victory of freedom, democracy and secularism against suppression, totalitarianism and religious fanaticism.

The House expresses its sense of pride on the performance of our valiant armed forces and is greateful to them for their brave and courageous deeds. The House also extedns its hearfelt symkpathy to the families of all the martyrs from the armed forces and from the civilian population sho laid down their lives in defence of the motherland and also towards those armed forces personnel and civilians who were wounded and disabled during the war.

The House welcomes the emergence of the sovereign Democratic Republic and Bangla Desh and resolves that the

felicitations of the House be conveyed to the Bangla Deh Government though the Central Government.

The motion was carried unanimously.

7.28 P.M.

Mr. Speaker: The House stands adjourned sine die.

(The Sabha then adjourned sine die.)